॥ णमोऽत्थु ण तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

श्री जैन

॥ सिद्धान्त-स्वाध्यायमाला ॥

॥ सिरि-उत्तरज्झयण-सुत्त

विणयसुय पढमं अज्झयण

ओगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो। विणय पाउकरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
णानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए। इगियागारसपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चई ॥ २ ॥
णाऽनिद्देसकरे, गुरूणमणुववायकारए। पडिणीए असबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥
हा सुणी पूइकण्णी, निक्कसिज्जई सव्वसो। एव दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जई ॥ ४ ॥
णकुण्डग चइत्ताण, विट्ठ भुजइ सूयरे। एव सील चइत्ताण, दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥
णिया भाव साणस्स, सूयरस्स नरस्स य। विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥ ६ ॥
म्हा विणयमेसिज्जा, सील पडिलभेज्जए। बुद्धपुत्त नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥
समन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाण अन्तिए सया। अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥
णुसासिओ न कुप्पिज्जा, खर्ति सेविज्ज पण्डिए। खुड्डेहिं सह ससग्गि, हास कीड च वज्जए ॥ ९ ॥
य चण्डालिय कासी, बहुय मा य आलवे। कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो ॥१०॥
ाहच्च चण्डालिय कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइ वि। कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकडं नो कडे त्ति य ॥११॥
गलियस्सेव कस, वयणमिच्छे पुणो पुणो। कस व दट्ठुमाइण्णे, पावग परिवज्जए ॥१२॥

अणासवा थूलवया कुसीला, मिउपि चण्ड पकरिन्ति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया, पसायए ते हु दुरासयपि ॥ ॥ १३ ॥

ापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालिय वए। कोह असच्च कुव्वेज्जा, धारेज्जा पियमप्पिय ॥ १४ ॥
प्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो। अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ य ॥ १५ ॥
र मे अप्पा दन्तो, सजमेण तवेण य। माह परेहि दम्मन्तो, बन्धणेहिं वहेहि य ॥ १६ ॥
डिणीय च बुद्धाण, वाया अदुव कम्मुणा। आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि ॥ १७ ॥
पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ। न जुजे ऊरुणा ऊरु, सयणे नो पडिस्सुणे ॥ १८ ॥
व पल्हत्थिय कुज्जा, पक्खपिण्ड च सजए। पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥ १९ ॥
ायरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि। पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरु सया ॥ २० ॥

आलवन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि। चइऊणमासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥ २१ ॥
आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कया। आगम्मुक्कुडुओ सन्तो, पुच्छिज्जा पंजलीउडो ॥ २२ ॥
एवं विणयजुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं। पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥ २३ ॥
मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए। भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥ २४ ॥
न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं। अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सन्तरेण वा ॥ २५ ॥
समरेसु अगारेसु, सन्धीसु य महापहे। एगो एगत्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे ॥ २६ ॥
जं मे बुद्धाऽणुसासन्ति, सीएण फरुसेण वा। मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥ २७ ॥
अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं। हियं तं मण्णई पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ॥ २८ ॥
हियं विगयभया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं। वेसं तं होइ मूढाणं, खन्तिसोहिकरं पयं ॥ २९ ॥
आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चे अकुए थिरे। अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥ ३० ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे। अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥ ३१ ॥
परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे। पडिरूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥ ३२ ॥
नाइदूरमणासन्ने, नाऽन्नेसिं चक्खुफासओ। एगो चिट्ठेज भत्तट्ठा, लंघित्ता तं नाऽइक्कमे ॥ ३३ ॥
नाइउच्चे न नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ। फासुयं परकडं पिण्डं, पडिगाहेज्ज संजए ॥ ३४ ॥
अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि संवुडे। समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ॥ ३५ ॥
सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्न सुहडे मडे। सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥ ३६ ॥
रमए पण्डिए सासं, हयं भद्दं व वाहए। बालं सम्मइ सासंतो, गलियस्सं व वाहए ॥ ३७ ॥
खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे। कल्लाणमणुसासन्तो, पावदिट्ठित्ति मन्नई ॥ ३८ ॥
पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई। पावदिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासु त्ति मन्नई ॥ ३९ ॥
न कोवए आयरियं, अप्पाणंपि न कोवए। बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्तगवेसए ॥ ४० ॥
आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए। विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज न पुणोत्ति य ॥ ४१ ॥
धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहायरियं सया। तमायरन्तो ववहारं, गरहं नाभिगच्छई ॥ ४२ ॥
मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ। तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥
वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्पं हवइ सुचोइए। जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया ॥ ४४ ॥
नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए। हवई किच्चाणं सरणं, भूयाणं जगई जहा ॥ ४५ ॥
पुज्जा जस्स पसीयन्ति, संबुद्धा पुव्वसंथुया। पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥ ४६ ॥

स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए, मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया।
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे, महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥ ॥ ४७ ॥

स देवगंधव्वमणुस्सपूइए, चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढीए ॥ ॥ ४८ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ विणयसुयं नाम पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह दुइअ परिसहज्झयण ॥

सुय मे आउस-तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया । जे भिक्खू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्ते पुट्ठो नो निण्हवेज्जा ॥ कयरे ते खलु बावीस परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा ? । इमे ते खलु बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोचा नच जिचा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा, तजहा-दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीहियापरीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरीसहे १२ वह परीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्नापरीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दसणपरीसहे २२ ॥

परीसहाण पविभत्ती, कासवेण पवेइया । त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ।
दिगिंछापरिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामव । न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥ २ ।
कालीपव्वगसकासे, किसे धमणिसतए । मायन्ने असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥ ३ ।
तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुच्छी लज्जसजए । सीओदग न सेविज्जा, वियडस्सेसण चरे ॥ ४ ।
छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए । परिसुक्कमुहाऽदीणे, त तितिक्खे परीसह ॥ ५ ।
चरत विरय लूह, सीय फुसइ एगया । नाइवेल मुणी गच्छे, सोचाण जिणसासण ॥ ६ ।
न मे निवारण अत्थि, छवित्ताण न विज्जई । अह तु अग्गि सेवामि, इइ भिक्खू न चितए ॥ ७ ।
उसिण परियावेण, परिदाहेण तज्जिए । घिंसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए ॥ ८ ।
उण्हाहितत्ते मेहावी, सिणाण नो वि पत्थए । गाय नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पय ॥ ९ ।
पुट्ठो य दसमसएहिं, समरे व महामुणी । नागो सगामसीसे वा, सूरो अभिहणे पर ॥ १० ।
न सतसे न वारेज्जा, मण पि न पओसए । उवेहे न हणे पाणे, भुजते मससोणिय ॥ ११ ।
परिजुण्णेहि वत्थेहिं, होक्खामि त्ति अचेलए । अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खु न चिंतए ॥ १२ ।
एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया । एय धम्म हिय नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ।
गामाणुगाम रीयत, अणगार अकिंचण । अरई अणुप्पवेसेज्जा, त तितिक्खे परीसह ॥ १४ ।
अरइ पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए । धम्मारामे निरारम्भे, उवसन्ते मुणी चरे ॥ १५ ।
सङ्गो एस मणूसाण, जाओ लोगम्मि इत्थिओ । जस्स एया परिन्नाया, सुकडं तस्स सामण्ण ॥ १६ ।
एयमादाय मेहावी, पङ्कभूया उ इत्थिओ । नो ताहिं विणिहन्नेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए ॥ १७ ॥
एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे । गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥
असमाणे चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गह । असमत्ते गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए ॥ १९ ॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ । अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए पर ॥ २० ॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारए । संकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥ २१ ॥
उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामवं । नाइवेलं विहम्मेज्जा, पावदिट्ठी विहम्मई ॥ २२ ॥
पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं, कल्लाणमदुवा पावयं । किमेगराइं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥ २३ ॥
अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं, न तेसिं पडिसंजले । सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥ २४ ॥
सोच्चाणं फरुसा भासा, दारुणा गामकण्टगा । तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥ २५ ॥
हओ न संजले भिक्खू, मणंपि न पओसए । तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं समायरे ॥ २६ ॥
समणं संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई । नत्थि जीवस्स नासुत्ति, एवं पेहेज्ज संजए ॥ २७ ॥
दुक्करं खलु भो निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥ २८ ॥
गोयरग्गपविट्ठस्स, पाणी नो सुप्पसारए । सुओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ २९ ॥
परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए । लद्धे पिण्डे अलद्धे वा, नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥ ३० ॥
अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया । जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो तं न तज्जए ॥ ३१ ॥
नच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्टिए । अदीणो थावए पन्नं, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ ३२ ॥
तेइच्छं नाभिनंदेज्जा संचिक्खत्तगवेसए । एवं खु तस्स सामण्णं, जं न कुज्जा न कारवे ॥ ३३ ॥
अचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो । तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥ ३४ ॥
आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा । एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥ ३५ ॥
किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा । घिंसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥ ३६ ॥
वेएज्ज निज्जरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं । जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥ ३७ ॥
अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं । जे ताइं पडिसेवन्ति, न तेसिं पीहए मुणी ॥ ३८ ॥
अणुक्कसाई अप्पिच्छे, अनाएसी अलोलुए । रसेसु नाणुगिज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ॥ ३९ ॥
से नूणं मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा । जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४० ॥
अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽणाणफला कडा । एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्मविवागयं ॥ ४१ ॥
निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो । जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥ ४२ ॥
तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ । एवं पि विहरओ मे, छउमं न नियट्टई ॥ ४३ ॥
नत्थि नूणं परे लोए, इड्ढी वावि तवस्सिणो । अदुवा वंचिओमित्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ४४ ॥
अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सई । मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ४५ ॥
एए परीसहा सव्वे, कासवेण निवेइया । जे भिक्खू न विहम्मेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४६ ॥

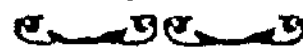
त्ति बेमि ॥ इअ दुइअं परिसहज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

॥ अह तइअं चाउरंगिज्जं अज्झयणं ॥



चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो । माणुसत्त सुई सद्धा, सजममि य वीरिय ॥ १
समावन्ना ण ससारे, नाणागोत्तासु जाइसु । कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्सभिया पया ॥ २
एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया । एगया आसुरे काये, अहाकम्मेहिं गच्छई ॥ ३
एगया खत्तिओ होइ, तओ चण्डालबुक्कसो । तओकीडपयगो य, तओ कुन्थुपिवालिया ॥ ४
एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिब्बिसा । न निविज्जन्ति ससारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५
कम्मसगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा । अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥ ६
कम्माण तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ । जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सय ॥ ७
माणुस्स विग्गह लद्धु, सुई धम्मस्स दुल्लहा । ज सोच्चा पडिवज्जन्ति, तव खतिमहिंसय ॥ ८
आहच्च सवण लद्धु, सद्धा परमदुल्लहा । सोच्चा नेआउय मग्ग, बहवे परिभस्सई ॥ ९
सुइ च लद्धु सद्ध च, वीरिय पुण दुल्लह । बहवे रोयमाणावि, नो य ण पडिवज्जए ॥ १०
माणुसत्तमि आयाओ, जो धम्म सुच्च सद्दहे । तवस्सी वीरिय लद्धु, सवुडे निध्दुणे रय ॥ ११
सोही उज्जुय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई । निव्वाण परम जाइ, घयसित्तिव्व पावए ॥ १२
विगिंच कम्मुणो हेउ, जस सचिणु खतिए । पाढव सरीर हिच्चा, उड्ढ पक्कमए दिस ॥ १३
विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा । महासुक्का व दिप्पता, मन्नता अपुणोच्चव ॥ १४
अप्पिया देवकामाण, कामरूवविउव्विणो । उड्ढ कप्पेसु चिट्ठति, पुव्वावाससया बहु ॥ १५
तत्थ ठिच्चा जहाठाण, जक्खा आउक्खये चुया । उवेंति माणुस जोणिं, से दसगेभिनायए ॥१६
खित्त वत्थु हिरण्ण च, पसवो दासपोरुस । चत्तारि कामखधाणि तत्थ से उववज्जइ ॥ १७
मित्तव नाइव होइ, उच्चागोए य वण्णव । अप्पायके महापन्ने, अभिजाए जसो बले ॥ १८
भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं । पुव्व विसुद्धसद्धम्मे, केवल बोहिबुज्झिया ॥ १९
चउरग दुल्लह नच्चा, सजम पडिवज्जिया । तवसा धुयकम्म से, सिद्धे हवइ सासए ॥ २०

त्ति बेमि ॥ इअ तइय अज्झयण समत्त ॥



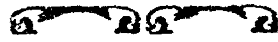
॥ अह चउत्थं असंखयं अज्झयणं ॥



असखय जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताण ।
एव वियाणाहि जणे पमत्ते कन्नु विहिंसा अजिया गिहिंति ॥ १ ॥
जे पावकम्मेहि धण मणूसा, समाययती अमइ गहाय ।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे, वेराणुबद्धा नरय उविंति ॥ २ ॥
तेणे जहा सधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एव पया पेच्च इह च लोए, कडाण कम्माण न मुक्ख अत्थि ॥ ३ ॥

थावरं जंगमं चेव, धणं धण्णं उवक्खरं। पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नालं दुक्खाउ मोयणे ॥ ६ ॥
अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए। न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ७ ॥
आदाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि। दोगुञ्छी अप्पणो पाए, दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥ ८ ॥
इहमेगे उ मन्नन्ति, अपच्चक्खाय पावगं। आयरियं विदित्ताणं, सव्वदुक्खा विमुच्चइ ॥ ९ ॥
भणंता अकरेन्ता य, बन्धमोक्खपइण्णिणो। वायाविरियमेत्तेनं, समासासेन्ति अप्पयं ॥ १० ॥
न चित्तातायए भासा, कओ विज्जाणुसासणं। विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पंडियमाणिणो ॥ ११ ॥
जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो। मणसा कायवक्केणं, सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥ १२ ॥
आवन्ना दीहमद्धाणं, संसारम्मि अणन्तए। तम्हा सव्वदिसं पस्सं, अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १३ ॥
बहिया उड्ढमादाय, नावकंखे कयाइवि। पुव्वकम्मक्खयट्ठाए, इमं देहमुदाहरे ॥ १४ ॥
विविच्च कम्मणो हेउं, कालकंखी परिव्वए। मायं पिंडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए ॥ १५ ॥
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, लेवमायए संजए। पक्खीपत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वए ॥ १६ ॥
एसणासमिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे। अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्डवायं गवेसए ॥ १७ ॥
एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियालिए

इअ खुड्डागनियंठिज्जं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥



॥ अह एलयं सत्तमं अज्झयणं ॥

जहाऽऽएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं। ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जावि सयङ्गणे ॥ १ ॥
तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे। पीणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए ॥ २ ॥
जाव न एज्जइ आएसो, ताव जीवइ सेऽदुही। अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जइ ॥ ३ ॥
जहा खलु से उरब्भे, आएसाए समीहिए। एवं बाले अहम्मिट्ठे, ईहइ नरयाउयं ॥ ४ ॥
हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणंमि विलोवए। अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे ॥ ५ ॥
इत्थीविसयगिद्धे य, महारंभपरिग्गहे। भुंजमाणे सुरं मंसं, परिवूढे परंदमे ॥ ६ ॥
अयकक्करभोई य, तुंडिल्ले चियलोहिए। आउयं नरए कंखे, जहाऽऽएसं व एलए ॥ ७ ॥
आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामाणि य भुंजिया। दुस्साहडं धणं हिच्चा, बहुं संचिणिया रयं ॥ ८ ॥
तओ कम्मगुरू जंतू, पच्चुप्पन्नपरायणे। अए व्व आगया एसे, मरणंतम्मि सोयइ ॥ ९ ॥
तओ आउपरिक्खीणे, चुतदेहा विहिंसगा। आसुरीयं दिसं बाला, गच्छन्ति अवसा तमं ॥ १० ॥
जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरो। अपत्थं अम्बगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ॥ ११ ॥
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अन्तिए। सहस्सगुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ॥ १२ ॥
अणेगवासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई। जाइं जीयन्ति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥ १३ ॥
जहा य तिन्नि वणिया मूलं घेत्तूण निग्गया। एगोऽत्थ लहए लाभं एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥
एगो मूलं पि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ। ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥ १५ ॥
माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे। मूलच्छेएण जीवाणं नरगतिरिक्खत्तणं धुवं ॥ १६ ॥

तओ जिए सइ होइ, दुविहं दोग्गइं गए। दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुइरादवि ॥ १८ ।
एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पण्डियं। मूलियं ते पवेसन्ति, माणुसिं जोणिमेन्ति जे ॥ १९ ।
वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुव्वया। उवेन्ति माणुसं जोणिं, कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥ २० ।
जेसिं तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया। सीलवन्ता सवीसेसा, अदीणा जन्ति देवयं ॥ २१ ।
एवमदीणवं भिक्खु, आगारिं च वियाणिया। कहण्णु जिच्चमेलिक्खं, जिच्चमाणे न संविदे ॥ २२ ।
जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण समं मिणे। एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ॥ २३ ।
कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए। कस्स हेउं पुराकाउं, जोगक्खेमं न संविदे ॥ २४ ।
इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झई। सोच्चा नेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ।
इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई। पूइदेहनिरोहेणं, भवे देवि त्ति मे सुयं ॥ २६ ।
इड्ढी जुई जस्सो वण्णो, आउं सुहमणुत्तरं। भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जई ॥ २७ ।
बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया। चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरए उववज्जई ॥ २८ ।
धीरस्स पस्स धीरत्तं सच्चधमाणुवत्तिणो। चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जई ॥ २९ ।
तुलियाण बालभावं, अबालं चेव पंडिए। चइऊण बालभावं, अबालं सेवई मुणि ॥ ३० ।

त्ति बेमि ॥ इअ एलय-ज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

॥ अह काविलियं अट्ठमं अज्झयणं ॥

अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा ॥ १ ॥
विजहित्तु पुव्वसंजोयं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेहसिणेहकरेहिं, दोसपओसेहिं मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥
तो नाणदंसणसमग्गो, हियनिस्सेसाय सव्वजीवाणं।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥
सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु, पाससाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥
भोगामिसदोसविसन्ने, हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे।
बाले य मन्दिए मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलम्मि ॥ ५ ॥
दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह सन्ति सुव्वया साहू, जे तरन्ति अतरं वणिया वा ॥ ६ ॥
समणामु एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणन्ता।
मन्दा निरयं गच्छन्ति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥
न हु पाणवहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।

पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ त्ति वुच्चई ताई।
तओ से पावयं कम्मं, निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥ ९ ॥
जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वायसा कायसा चेव ॥ १० ॥
सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥
पन्ताणि चेव सेवेज्जा, सीयपिंडं पुराणकुम्मासं।
अदु वक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥ १२ ॥
जे लक्खणं च सुविणं, अङ्गविज्जं च जे पउज्जन्ति।
न हु ते समणा वुच्चन्ति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥ १३ ॥
इहजीवियं अणियमेत्ता, पब्भट्ठा समाहिजोएहिं।
ते कामभोगरसगिद्धा, उववज्जन्ति आसुरे काए ॥ १४ ॥
तत्तो वि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहु अणुपरियडन्ति।
बहुकम्मलेवलित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥ १५ ॥
कसिणंपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स।
तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥ १६ ॥
जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई।
दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं ॥ १७ ॥
नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गंडवच्छासु ऽणेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लन्ति जहा व दासेहिं ॥ १८ ॥
नारीसु नोवगिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणागारे।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥ १९ ॥
इअ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति, तेहिं आराहिया दुवे लोग ॥ २० ॥
त्ति बेमि ॥ इअ काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

॥ अह नवमं नमिपव्वज्जा अज्झयणं ॥

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि। उवसन्तमोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ॥ १ ॥
जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे। पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥
से देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए। भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ ३ ॥
मिहिलं सपुरजणवयं, बलमारोहं च परियणं सव्वं। चिच्चा अभिनिक्खन्तो एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ॥ ४ ॥

अब्भुट्ठिय रायरिसिं, पव्वज्जाठाणमुत्तमं । सक्को माहणरूवेण, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥
किण्णु भो अज्ज मिहिला, कोलाहलगसंकुला । सुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ८ ॥
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे । पत्तपुप्फफलोवेए, बहूण बहुगुणे सया ॥ ९ ॥
वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे । दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दन्ति भो खगा ॥ १० ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ११ ॥
एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मन्दिरं । भयवं अन्तेउरं तेण, कीस णं नावपेक्खह ॥ १२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १३ ॥
सुहं वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचण । मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचण ॥ १४ ॥
चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो । पियं न विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जई ॥ १५ ॥
बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥ १६ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविन्दो इणमब्बवी ॥ १७ ॥
पागारं कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि च । उस्सूलगसयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ १८ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १९ ॥
सद्धं नगरं किच्चा, तवसंवरमग्गलं । खन्ति निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥ २० ॥
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया । धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥ २१ ॥
तवनारायजुत्तेण, भित्तूणं कम्मकंचुयं । मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २३ ॥
पासाए कारइत्ताणं, वद्धमाणगिहाणि य । वालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २४ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २५ ॥
संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं । जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥ २६ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २७ ॥
आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे । नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २८ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २९ ॥
असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दण्डो पजुञ्जई । अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति, मुच्चई कारओ जणो ॥ ३० ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३१ ॥
जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमन्ति नराहिवा । वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३३ ॥
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे । एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥ ३४ ॥
अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ । अप्पणामेवमप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥
पंचिन्दियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च । दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पे जिए जियं ॥ ३६ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३९ ॥
जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए। तस्स वि संजमो सेओ, अदिन्तस्स वि किंचण ॥ ४० ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥
घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं। इहेव पोसहरओ, भवाहि वा मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४३ ॥
मासे मासे तु जो वालो, कुसग्गेण तु भुंजए। न सो सक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥ ४४ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ, तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४५ ॥
हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं। कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ४६ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥

सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥ ॥ ४८ ॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह। पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥ ४९ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५० ॥
अच्छेरयमब्भुए, भोए चयसि पत्थिवा। असन्ते कामे पत्थेसि, सकप्पेण विहम्मसि ॥ ५१ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा। कामे पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइं ॥ ५३ ॥
अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमा गई। माया गई पडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ॥ ५४ ॥
अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं। वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥ ५५ ॥
अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ। अहो निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥ ५६ ॥
अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं। अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥ ५७ ॥
इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो। लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥ ५८ ॥
एवं अभित्थुणन्तो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए। पयाहिणं करेन्तो, पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥ ५९ ॥
तो वन्दिऊण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स। आगासेणुप्पइओ, ललियचलकुंडलतिरीडी ॥ ६० ॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ। चइऊण गेहं च वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥
एवं करेन्ति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥ ६२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ नमिपव्वज्जा समत्ता ॥

॥ अह दुमपत्तय दसम अज्झयणं ॥

दुमपत्तए पंडुयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए।
एव मणुयाण जीविय, समय गोयम मा पमायए ॥ १ ॥
कुसग्गे जह ओसबिन्दुए, थोव चिट्ठइ लम्बमाणए।
एव मणुयाण जीविय, समय गोयम मा पमायए ॥ २ ॥
इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्चवायए।
विहुणाहि रय पुरे कडं, समय गोयम मा पमायए ॥ ३ ॥
दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकाले वि सव्वपाणिण।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समय गोयम मा पमायए ॥ ४ ॥
पुढविक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखाईय, समय गोयम मा पमायए ॥ ५ ॥
आउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखाईय, समय गोयम मा पमायए ॥ ६ ॥
तेउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो य संवसे।
काल संखाईय समय गोयम मा पमायए ॥ ७ ॥
वाउक्काइयमइगओ, उक्कोस जीवो य संवसे।
काल संखाईय, समयं गोयम मा पमायए ॥ ८ ॥
वणस्सइकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
कालमणन्तदुरन्तय समय गोयम मा पमायए ॥ ९ ॥
बेइन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए ॥ १० ॥
तेइन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए ॥ ११ ॥
चउरिन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल संखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायए ॥ १२ ॥
पंचिन्दियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
सत्तट्ठभवग्गहणे, समय गोयम मा पमायए ॥ १३ ॥
देवे नेरइए य अइगओ उक्कोस जीवो उ संवसे।
इक्किक्कभवग्गहणे समय गोयम मा पमायए ॥ १४ ॥
एव भवसंसारे, संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहिं।

लद्धूण वि माणुसत्तणं, आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।
विगलिन्दियया हु दीसई, समयं गोयम मा पमायए ॥ १६ ॥
लद्धूण वि आयरित्तणं, अहीणपंचेन्दियया हु दुल्लहा ।
विगलिन्दियया हु दीसई, समयं गोयम मा पमायए ॥ १७ ॥
अहीणपंचेन्दियत्तं पि से लहे, उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थिनिसेवए जणे, समयं गोयम मा पमायए ॥ १८ ॥
लद्धूण वि उत्तमं सुइं, सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्तनिसेवए जणे, समयं गोयम मा पमायए ॥ १९ ॥
धम्मं पि हु सद्दहन्तया, दुल्लहया काएण फासया ।
इह कामगुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम मा पमायए ॥ २० ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सोयबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २१ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २२ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २३ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिब्भबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २४ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २५ ॥
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्वबले य हायई, समयं गोयम मा पमायए ॥ २६ ॥
अरई गण्डं विसूइया, आयंका विविहा फुसन्ति ते ।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम मा पमायए ॥ २७ ॥
वोच्छिन्द सिणेहमप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं ।
से सव्वसिणेहवज्जिए, समयं गोयम मा पमायए ॥ २८ ॥
चिच्चाण धणं च भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वन्तं पुणो वि आइए, समयं गोयम मा पमायए ॥ २९ ॥
अवउज्झिय मित्तबन्धवं, विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं विइयं गवेसए, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३० ॥
न हु जिणे अज्ज दिस्सई, बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम मा पमायए ॥ ३१ ॥
अवसोहिय कण्टगा पहं, ओइण्णो सि पहं महालयं ।

गच्छसि मग्ग विसोहिया, समय गोयम मा पमायए ॥ ३२ ॥
अनले जह भारवाहए, मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३३ ॥
तिण्णो हु सि अण्णव महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पार गमित्तए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३४ ॥
अकलेवरसेणिं उस्सिया, सिद्धिं गोयम लोय गच्छसि ।
खेम च सिव अणुत्तर, समय गोयम मा पमायए ॥ ३५ ॥
बुद्धे परिनिव्वुडे चरे, गामगए नगरे व सजए ।
सन्तीमग्ग च वूहए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३६ ॥
बुद्धस्स निसम्म भासिय, सुकहियमट्ठपओवसोहिय ।
राग दोस च छिन्दिया, सिद्धिगइ गए गोयमे ॥ ३७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ दुमपत्तय समत्त ॥ १० ॥

॥ अह बहुस्सुयपुज्ज एगारस अज्झयणं ॥

सजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो। आयार पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे अभिक्खण उल्लवई, अविणीए अबहुस्सुए ॥ २ ॥
अह पचहिं ठाणेहि, जेहि सिक्खा न लब्भई । थम्भा कोहा पमाएण, रोगेणालस्सएण य ॥ ३ ॥
अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलि त्ति वुच्चई । अहस्सिरे सया दन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥
नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए । अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥
अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ सजए। अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाण च न गच्छइ ॥ ६ ॥
अभिक्खण कोही हवइ, पबन्ध च पकुव्वई । मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुय लद्धूणमज्जई ॥ ७ ॥
अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पई । सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावय ॥ ८ ॥
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे । असविभागी अवियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥
अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चई । नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥ १० ॥
अप्प च अहिक्खिवई, पबन्ध च न कुव्वई । मेत्तिज्जमाणो भयई, सुय लद्धु न मज्जई ॥ ११ ॥
न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पई । अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई ॥ १२ ॥
कलहडमरवज्जिए बुद्धे अभिजाइए । हिरिम पडिसलीणे, सुविणीए त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥
वसे गुरुकुले निच्च, जोगव उवहाणव । पियकरे पियवाई, से सिक्ख लद्धुमरिहई ॥ १४ ॥
जहा सखम्मि पय, निहिय दुहओ वि विरायइ। एव बहुस्सुए भिक्खु, धम्मो कित्ती तहा सुय ॥ १५ ॥
जहा से कम्बोयाण, आइण्णे कन्थए सिया । आसे जवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १६ ॥
जहाइण्णसमारूढे. सूरे दढपरक्कमे । उभओ नन्दिघोसेण, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १७ ॥

हा से तिक्खसिंगे, जायखन्धे विरायई। वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ १९ ॥
हा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए। सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २० ॥
हा से वासुदेवे, संखचक्कगयाधरे। अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २१ ॥
हा से चाउरन्ते, चक्कवट्टीमहिड्ढिए। चोद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २२ ॥
हा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरन्दरे। सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २३ ॥
हा से तिमिरविद्धंसे, उत्तिट्ठन्ते दिवायरे। जलन्ते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २४ ॥
हा से उडुवई चन्दे, नक्खत्तपरिवारिए। पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २५ ॥
हा से समाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए। नाणाधन्नपडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥
हा सा दुमाण पवरा, जम्बू नाम सुदंसणा। अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २७ ॥
हा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा। सीया नीलवन्तपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २८ ॥
हा से नगाण पवरे, सुमहं मन्दरे गिरी। नाणोसहिपज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २९ ॥
हा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए। नाणारयणपडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ ३० ॥

समुद्दगम्भीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसया।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ ३१ ॥

म्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए। जेणप्पाणं परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥ ३२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ बहुस्सुयपुज्जं समत्तं ॥ ११ ॥

॥ अह हरिएसिज्जं बारहं अज्झयणं ॥

ोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी, हरिएसबलो नाम, आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥ १ ॥
रिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य। जओ आयाणनिक्खेवे, संजओ सुसमाहिओ ॥ २ ॥
णगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिओ। भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि, जन्नवाडे उवट्ठिओ ॥ ३ ॥
ं पासिऊणं एज्जन्तं, तवेण परिसोसियं। पन्तोवहिउवगरणं, उवहसन्ति अणारिया ॥ ४ ॥
ाईमयपडिथद्धा, हिंसगा अजिइन्दिया। अबम्भचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ॥ ५ ॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे, काले विगराले फोक्कनासे।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए, संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥ ६ ॥
को रे तुमं इय अदंसणिज्जे, काए व आसाइहमागओसि।
ओमचेलया पंसुपिसायभूया, गच्छक्खलाहिं किमिहिं ठिओ सि ॥ ७ ॥
जक्खे तहिं तिन्दुयरुक्खवासी, अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥ ८ ॥
समणो अहं संजओ, बम्भयारी, विरओ धणपयणपरिग्गहाओ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥ ९ ॥
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ, अन्नं पभूयं भवयाणमेयं।

जाणेह मे जायणजीविणु त्ति, सेसावसेसं लभउ तवस्सी ॥ १० ॥
उवक्खडं भोयण माहणाणं, अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं, दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ॥ ११ ॥
थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥ १२ ॥
खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १३ ॥
कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥ १४ ॥
तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं, अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १५ ॥
अज्झावयाणं पडिकूलभासी, पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियण्ठा ॥ १६ ॥
समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥ १७ ॥
के एत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं दण्डेण फलेण हन्ता, कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥ १८ ॥
अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहूकुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव, समागया तं इसिं तालयन्ति ॥ १९ ॥
रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्द त्ति नामेण अणिन्दियङ्गी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥ २० ॥
देवाभिओगेण निओइएणं, दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दभिवन्दिएणं, जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥ २१ ॥
एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥ २२ ॥
महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥ २३ ॥
एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति ॥ २४ ॥
ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खेऽसुरा तहिं तं जण तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते, पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥ २५ ॥
गिरिं नहेहिं खणह, अयं दन्तेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खु अवमन्नह ॥ २६ ॥

आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरव्वओ परक्कमो य ।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा, जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥ २७ ॥
सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥ २८ ॥
अवहेडिय पिट्ठिसउत्तमंगे, पसारिया बाहु अकम्मचेट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते, उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥ २९ ॥
ते पासिया खण्डियकट्ठभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ, हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ॥ ३० ॥
बालेहि मूढेहि अयाणएहि, जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते ।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति, न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥ ३१ ॥
पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥ ३२ ॥
अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा, तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो, समागया सव्वजणेण अम्हे ॥ ३३ ॥
अच्चेमु ते महाभाग, न ते किंचि न अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं, नाणावंजणसंजुयं ॥ ३४ ॥
इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं, तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥ ३५ ॥
तहियं गन्धोदयपुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं, आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥ ३६ ॥
सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो, न दीसई जाइविसेस कोई ।
सोवागपुत्तं, हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥ ३७ ॥
किं माहणा जोइसमारभन्ता, उदएण सोहिं बहिया विमग्गह ।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं, न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥ ३८ ॥
कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता, भुज्जो वि मन्दा पगरेह पावं ॥ ३९ ॥
कहं च रे भिक्खु वयं जयामो, पावाइ कम्माइ पुणोल्लयामो ।
अक्खाहि णे संजय जक्खपूइया, कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ॥ ४० ॥
छज्जीवकाए असमारभन्ता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं, एयं परिन्नाय चरन्ति दन्ता ॥ ४१ ॥
सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
वोसट्ठकाइ सुइचत्तदेहा, महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥ ४२ ॥
के ते जोई के व ते जोइठाणे, का ते सुया किं व ते कारिसंगं ।

एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खू, कयरेण होमेण हुणासि जोइं ॥ ४३ ॥
तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंग ।
कम्मेहा संजमजोगसन्ती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥ ४४ ॥
के ते हरए के य ते सन्तितित्थे, कहिं सिणाओ व रयं जहासि ।
आइक्ख णे संजय जक्खपूइया, इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥ ४५ ॥
धम्मे हरए बम्मे सन्तितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥ ४६ ॥
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्त ॥ ४७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ हरिएसिज्जं समत्तं ॥ १२ ॥

॥ अह चित्तसम्भूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ॥

जाईपराजइओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि। चुलणीए बम्भदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माओ ॥ १ ॥
कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि। सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥ २ ॥
कम्पिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसम्भूया। सुहदुक्खफलविवागं,कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥ ३ ॥
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बम्भदत्तो महायसो । भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ॥ ४ ॥
आसीमु भायरो दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा । अन्नमन्नमणूरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥ ५ ॥
दासा दसण्णे आसीमु, मिया कालिंजरे नगे । हंसा मयंगतीरे, सोवागा कासिभूमिए ॥ ६ ॥
देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढीया। इमा नो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥
कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय विचिन्तिया । तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥
सच्चसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा । ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्तेवि से तहा ॥ ९ ॥

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं, आया ममं पुण्णफलोववेए ॥ १० ॥
जाणाहि संभूय महाणुभागं, महिड्ढीयं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं, इड्ढी जुई तस्स वियप्पभूया ॥ ११ ॥
महत्थरूवा वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इह जयन्ते समणो मि जाओ ॥ १२ ॥
उच्चोयए महु कक्के य बम्मे, पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्त धणप्पभूयं, पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥ १३ ॥
नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं, नारीजणाइं परिवारयन्तो ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू, मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥ १४ ॥

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥ १५ ॥
सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडम्बियं ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥ १६ ॥
बालाभिरामेसु दुहावहेसु, न तं सुहं कामगुणेसु रायं ।
विरत्तकामाण तवोहणाणं, जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥ १७ ॥
नरिंद जाई अहमा नराणं, सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स, वेस्सा, वसी य सोवागनिवेसणेसु ॥ १८ ॥
तीसे य जाईइ उ पावियाए, वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा, इहं तु कम्माइ पुरे कडाइं ॥ १९ ॥
सो दाणि सिं राय महाणुभागो, महिड्ढी पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइं, आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥ २० ॥
इह जीविए राय असासयम्मि, धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए, धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥ २१ ॥
जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मंसहरा भवन्ति ॥ २२ ॥
न तस्स दुक्खं विभयन्ति, नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥ २३ ॥
चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च, खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ, परं भवं सुंदर पावगं वा ॥ २४ ॥
तं एक्कं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्तावि य नायओ य, दायरमन्नं अणुसंकमन्ति ॥ २५ ॥
उवणिज्जई जीवियमप्पमायं, वण्णं जरा हरइ नरस्स राय ।
पंचालराया वयणं सुणाहि, मा कासि कम्माइ महालयाइं ॥ २६ ॥
अहं पि जाणामि जहेह साहू, जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति, जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥
हत्थिणपुरम्मि चित्ता, दट्ठूणं नरवइं महिड्ढीयं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं ॥ २८ ॥
तस्स मे अपडिकन्तस्स, इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥ २९ ॥
नागो जहा पंकजलावसन्नो, दट्ठु थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥ ३० ॥
अच्चेइ कालो तरन्ति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।

उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥ ३१ ॥
जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥ ३२ ॥
न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी, गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो, गच्छामि रायं आमन्तिओ सि ॥ ३३ ॥
पंचालराया वि य बम्भदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे, अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥ ३४ ॥
चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो, उदग्गचारित्ततवो महेसी ।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥ ३५ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ चित्तसम्भूइज्जं समत्तं ॥

॥ अह उसुयारिज्जं चोद्दहमं अज्झयणं ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी, केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥
सकम्मसेसेण पुराकएण, कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय, जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥ २ ॥
पुमत्तमागम्म कुमार दो वी, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो, रायत्थ देवी कमलावई य ॥ ३ ॥
जाईजरामच्चुभयाभिभूया, बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥
पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणियं तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥
ते कामभोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा, तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥
असासयं दट्ठु इमं विहारं, बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो, आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥
अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति, जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥
सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं, मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।

पुरोहियं तं कमसोऽणुणिन्तं. निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहि चेव, कुमारगा ते पसंमिक्ख वक्कं ॥ ११ ॥
वेया अहीया न भवन्ति ताणं, भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं, को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥ १२ ॥
खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥ १३ ॥
परिव्वयन्ते अणियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥ १४ ॥
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेयं लालप्पमाणं, हरा हरंति त्ति कहं पमाए ॥ १५ ॥
धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व साहीणमिमेव तुब्भं ॥ १६ ॥
धणेण किं धम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी, बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥ १७ ॥
जहा य अग्गी अरणी असन्तो, खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु ।
एमेव ताया सरीरंमि सत्ता, संमुच्छइ नासइ नावचिट्ठे ॥ १८ ॥
नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं निययस्स बन्धो, संसारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥ १९ ॥
जहा वयं धम्मं अजाणमाणा, पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओलब्भमाणा परिरक्खयन्ता, तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥ २० ॥
अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहि पडन्तीहिं, गिहंसि न रइं लभे ॥ २१ ॥
केण अब्भाहओ लोगो, केण वा परिवारिओ ।
का वा अमोहा वुत्ता, जाया चिन्तावरो हुमे ॥ २२ ॥
मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय वियाणह ॥ २३ ॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ ॥ २४ ॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राइओ ॥ २५ ॥
एगओ संवसित्ताणं, दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥ २६ ॥

णो जाणे न मरिस्मामि, सो हु कखे सुए सिया ॥ २७ ॥
अज्जेव धम्म पडिवज्जयामो, जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागय नेव य अत्थि किंची, सद्धाखम णे विणइत्तु राग ॥ २८ ॥
पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,वासिट्ठि भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहई समाहिं, छिन्नाहि साहाहि तमेव ठाणु ॥ २९ ॥
पखाविहूणो व्व जहेव पक्खी, भिच्चविहूणो व्व रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए, पहीणपुत्तो मि तहाँ अहपि ॥ ३० ॥
सुसभिया कामगुणे इमे ते, सपिण्डिया अग्गरसप्पभूया ।
भुजामु ता कामगुणे पगाम, पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्ग ॥ ३१ ॥
भुत्ता रसा भोइ जहाइ णे वओ न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभ अलाभ च सुह च दुक्ख,सचिक्खमाणो चरिस्सामि मोण ॥ ३२ ॥
मा हू तुम सोयरियाग सम्भरे, जुणो व हसो पडिसोत्तगामी ।
भुजाहि भोगाइ मए समाण, दुक्ख खु भिक्खापरियाविहारो ॥ ३३ ॥
जहा य भोई तणुय भुयगो, निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयइन्ति भोए, ते ह कह नाणुगमिस्समेक्को ॥ ३४ ॥
छिन्दित्तु जाल अबल व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खाचरिय चरन्ति ॥ ३५ ॥
नहेव कुचा समइक्कमन्ता, तयाणि जालाणि दलित्तु हसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झ ते ह कह नाणुगमिस्समेक्का ॥ ३६ ॥
पुरोहिय त ससुय सदार, सोचाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसार विउलुत्तम च, राय, अभिक्ख समुदाय देवी ॥ ३७ ॥
वन्तासी पुरिसो राय, न सो होइ पससिओ ।
माहणेण परिचत्त, धण आदाउमिच्छसि ॥ ३८ ॥
सव्व जग जइ तुह, सव्व वावि धण भवे ।
सव्व पि ते अपज्जत्त, नेव ताणाय त तव ॥ ३९ ॥
मरिहिसि राय जया तया वा, मणोरमे कामगुणे विहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ताण, न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥ ४० ॥
नाह रमे पक्खिणि पजरे वा, सताणछिन्ना चरिस्सामि मोण ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा, परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥ ४१ ॥
दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जन्तुसु । अन्ने सत्ता पमोयन्ति, रागद्दोसवस गया ॥ ४२ ॥
एवमेव वय मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया । डज्झमाण न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जग ॥ ४३ ॥
भोगे भोचा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो । आमोयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इव ॥ ४४ ॥

सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं । आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥ ४६ ॥
गिद्धोवमा उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे । उरगो सुवण्णपासे व्व, संकमाणो तणुं चरे ॥ ४७ ॥
नागो व्व बन्धणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए । एयं पत्थं महारायं, उसुयारि त्ति मे सुयं ॥ ४८ ॥
चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए । निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥ ४९ ॥
धम्मं धम्मं वियाणित्ता, चेच्चा कामगुणे वरे । तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ॥ ५० ॥
एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा । जम्ममच्चुभउव्विग्गा, दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥ ५१ ॥
सासणे विगयमोहाणं, पुव्विं भावणभाविया । अचिरेणेव कालेण, दुक्खस्सन्तमुवागया ॥ ५२ ॥
राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ । माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुडे ॥ ५३ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ उसुयारिज्जं सम्मत्तं ॥ १४ ॥

॥ अह सभिक्खू पंचदहं अज्झयणं ॥

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं, सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं अहिज्ज अकामकामे, अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥ १ ॥
राओवरयं चरेज्ज लाढे, विरए वेयवियायरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी जे, कम्हिचि न मुच्छिए स भिक्खू ॥ २ ॥
अक्कोसवहं विइत्तु धीरे, मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ३ ॥
पन्तं सयणासणं भइत्ता, सीउण्हं विविहं च दंसमसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ४ ॥
नो सक्कइमिच्छई न पूयं, नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
से संजए सुव्वए तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥
जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥
छिन्नं सरं भोमन्तलिक्खं, सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं, जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥ ७ ॥
मन्तं मूलं विविहं वेज्जचिन्तं, वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च, तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ८ ॥
खत्तियगणउग्गरायपुत्ता, माहणभोइय विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं, तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥
गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इयलोइयफलट्ठा, जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥ १० ॥

अदए पडिसेहिए नियण्ठे, जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥ ११ ॥
ज किं चि आहारपाणजायं, विविहं खाइमसाइम परेसिं लध्धु ।
जो त तिविहेण नाणुकम्पे, मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खु ॥ १२ ॥
आयामगं चेव जवोदण च, सीय सोवीरजवोदग च ।
न हीलए पिण्ड नीरस तु, पन्तकुलाइ परिव्वए स भिक्खू ॥ १३ ॥
सद्दा विविहा भवन्ति लोए, दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
भीमा भयभेरवा उराला, सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू ॥ १४ ॥
वाद विविहं समिच्च लोए, सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी, उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥ १५ ॥
अविसप्पजीवी अगिहे अमित्ते, जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्साई लहुअप्पभक्खी, चेच्चा गिह एगचरे स भिक्खू ॥ १६ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ सभिक्खुय समत्त ॥ १५ ॥

॥ अह बम्भचेरसमाहिठाणाणाम सोलसम अज्झयण ॥

सुय मे आउस-तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा । कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ॥ इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा तंजहा विवित्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे । नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइ सयणासणाइ सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्ज । तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे ॥ १ ॥ नो इत्थिण कह कहित्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीण कह कहेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा नो इत्थीण कह कहेज्जा ॥ २ ॥ नो इत्थीण सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गन्थे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा उम्माय वा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु

नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ॥ ३ ॥ नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएज्ज निज्झाएज्जा ॥ ४ ॥ नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कुड्डन्तरंसि व दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥ ५ ॥ नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निग्गन्थे तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गण्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ॥ ६ ॥ नो पणीयं आहारं आहरित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा ॥ ७ ॥ नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥ ८ ॥ नो विभूसाणुवादी हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे आयरियाह। विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ तओ णं इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवादी हविज्जा

लिपसत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवादी भवेज्जा से निग्गन्थे। दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ॥ १० ॥ भवन्ति इत्थ सिलोगा तंजहा—

जं विवित्तमणाइण्णं, रहियं इत्थि जणेण य। बम्भचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥
मणपल्हायजणणी, कामरागविवड्ढणी। बम्भचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥
समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं। बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं। बम्भचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥
कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणियकन्दियं। बम्भचेररओ थीणं, सोयगेज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥
हासं किड्डं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य। बम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥ ६ ॥
पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवड्ढणं। बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥
धम्मलद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं। नाइमत्तं तु भुंजेज्जा, बम्भचेररओ सया ॥ ८ ॥
विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीरपरिमण्डणं। बम्भचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥
सद्दे रूवे य गन्धे य, रसे फासे तहेव य। पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥
आलओ थीजणाइण्णो, थीकहा य मणोरमा। संथवो चेव नारीणं, तासिं इन्दियदरिसणं ॥ ११ ॥
कूइयं रुइयं गीयं, हासभुत्तासियाणि य। पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं ॥ १२ ॥
गत्तभूसणमिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया। नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ १३ ॥
दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए। संकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥ १४ ॥
धम्मारामरते चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही। धम्मारामरते दन्ते, बम्भचेरसमाहिए ॥ १५ ॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा। बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति तं ॥ १६ ॥
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए। सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण, सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥ १७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ बम्भचेरसमाहिठाणा समत्ता ॥ १६ ॥

॥ अह पावसमणिज्जं सत्तदहं अज्झयणं ॥

जे केइ उ पव्वइए नियण्ठे, धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥
सेज्जा दढा पाउरणम्मि अत्थि, उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टई आउसु त्ति, किं नाम काहामि सुएण भन्ते ॥ २ ॥

जे केई पव्वइए, निद्दासीले पगामसो। भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥
आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसई बाले, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ४ ॥
आयरियउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ। अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥
सम्मद्दमाणो पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य। असंजए संजयमन्नमाणो, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ६ ॥
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकम्बलं। अप्पमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ७ ॥
दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं। उल्लंघणे य चण्डे य, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ८ ॥

सावडिलहेइ पमत्ते, पउज्झइ पायकम्बलं । पडिलेहा अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥
गिपडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया । गुरुपारिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १० ॥
नाबहुमाई पमुहरे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। असंविभागी अवियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ११ ॥
चविवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा । वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १२ ॥
घअथिरासणे कुकुइए, जत्थ तत्थ निसीयई । आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥
एससरक्खपाए सुवई, सेज्जं न पडिलेहइ । संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १४ ॥
सदुद्धदहीविगईओ, आहारेइ अभिक्खणं । अरए य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥
रअत्थन्तम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं। चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥
आयरियपरिच्चाई, परपासण्डसेवए । गाणंगणिए दुब्भूए, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥
सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे । निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १८ ॥
सन्नाइ पिण्डं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं । गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १९ ॥

एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे, रूवधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थ लोए ॥ २० ॥
जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं ॥ २१ ॥

॥ त्ति बेमि ॥ इअ पावसमणिज्जं समत्तं ॥ १७ ॥

॥ अह संजइज्जं अट्ठारहमं अज्झयणं ॥

कम्पिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे । नामेणं संजए नामं, मिगव्वं उवणिग्गए ॥ १ ॥
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य । पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥
मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाण केसरे । भीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे । सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ ४ ॥
अप्फोवमण्डवम्मि, झायइ क्खवियासवे । तस्सागए मिगं पासं, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं। हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥ ६ ॥
अह राया तत्थ सम्भन्तो, अणगारो मणा हओ । मए उ मन्दपुण्णेणं, रसगिद्धेण घन्तुणा ॥ ७ ॥
आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो । विणएण वन्दए पाए, भगवं एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥
अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए । रायाणं न पडिमन्तेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥
संजओ अहमम्मीति, भगवं वाहराहि मे । कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥
अभओ पत्थिवा तुब्भं, अभयदाया भवाहि य । अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसी ॥ ११ ॥
जया सव्वं परिच्चज्ज, गन्तव्वमवसस्स ते । अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी ॥ १२ ॥
जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपाय चंचलं । जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नाववुज्झसे ॥ १३ ॥

नीहरन्ति मय पुत्ता, पितर परमदुक्खिया। पितरो वि तहा पुत्ते, बन्धू राय तव चरे ॥ १५ ॥
तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परिरक्खिए। कीलन्तिऽन्ने नरा राय, हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥ १६ ॥
तेणावि ज कय कम्म, सुहं वा जइ वा दुह। कम्मुणा तेण सजुत्तो, गच्छई उ पर भव ॥ १७ ॥
सोऊण तस्स सो धम्म, अणगारस्स अन्तिए। महया सवेगनिव्वेद, समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥
सजओ चइउ रज्ज, निक्खन्तो जिणसासणे। गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अन्तिए ॥ १९ ॥
चिच्चा रट्ठ पव्वइए, खत्तिए परिभासइ। जहा ते दीसई रूव, पसन्न ते महा मणो ॥ २० ॥
किं नामे किं गोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे। कह पडियरसी बुद्धे, कह विणीए त्ति वुच्चसी ॥ २१ ॥
सजओ नाम नामेण, तहा गोत्तेण गोयमो। गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥
किरिय अकिरिय विणय, अन्नाण च महामुणी। एएहि चउहि ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासई ॥ २३ ॥
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए। विज्जाचरणसपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ २४ ॥
पडन्ति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो। दिव्व च गइ गच्छन्ति, चरित्ता धम्ममारिय ॥ २५ ॥
मायावुइयमेय तु मुसाभासा निरत्थिया। सजममाणो वि अह, वसामि इरियामि य ॥ २६ ॥
सव्वेए विइय मज्झ, मिच्छादिट्ठी अणारिया। विज्जमाणे परे लोए, सम्म जाणामि अप्पग ॥ २७ ॥
अहमासि महापाणे, जुइम वरिससओवमे। जा सा पालिमहापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥ २८ ॥
से चुए बम्भलोगाओ, माणुस्स भवमागए। अप्पणो य परेसिं च, आउ जाणे जहा तहा ॥ २९ ॥
नाणारुइ च छन्द च, परिवज्जेज सजए। अणट्ठा जे य सव्वत्था, इयविज्जामणुसचरे ॥ ३० ॥
पडिक्कमामि पसिणाण, परमतेहिं वा पुणो। अहो उट्ठिए अहोराय, इइ विज्जा तव चरे ॥ ३१ ॥
ज च मे पुच्छसी काले, सम सुद्धेण चेयसा। ताइ पाउकरे बुद्धे त नाण जिणसासणे ॥ ३२ ॥
किरिय च रोयई धीरे, अकिरिय परिवज्जए। दिट्ठीए दिट्ठीसम्पन्ने, धम्म चरसु दुच्चर ॥ ३३ ॥
एय पुण्णपय सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहिय। भरहो वि भारह वास, चेच्चा कामाइ पव्वए ॥ ३४ ॥
सगरो वि सागरन्त, भरहवास नराहिवो। इस्सरिय केवल हिच्चा, दयाइ परिनिव्वुडे ॥ ३५ ॥
चइत्ता भारह वास, चक्कवट्टी महिड्ढिओ। पव्वज्जमब्भुवगओ, मघव नाम महाजसो ॥ ३६ ॥
सणकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्टी महिड्ढिओ। पुत्त रज्जे ठवेऊण, सो वि राया तव चरे ॥ ३७ ॥
चइत्ता भारह वास, चक्कवट्टी महिड्ढिओ। सन्ती सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ३८ ॥
इक्खागरायवसभो, कुन्थू नाम नरिसरो। विक्खायकित्ती भगव पत्तो गइमणुत्तर ॥ ३९ ॥
सागरन्त चइत्ताण, भरह नरवरीसरो। अरो य अरय पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४० ॥
चइत्ता भारह वास, चइत्ता बलवाहण। चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तव चरे ॥ ४१ ॥
एगच्छत्त पसाहित्ता, महिं माणनिसूरणो। हरिसेणो मणुस्सिन्दो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४२ ॥
अन्निओ रायसहस्सेहि सुपरिचाई, दम चरे। जयनामो जिणक्खाय, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४३ ॥
दसण्णरज्ज मुदिय, चइत्ताण मुणी चरे। दसण्णभद्दो निक्खन्तो, सक्ख सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥
नमी नमेइ अप्पाण, सक्ख सक्केण चोइओ। चइऊण गेह वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ४५ ॥
करकण्डू कलिंगेसु, पचालेसु य दुम्मुहो। नमी राया विदेहेसु, गन्धारेसु य नग्गई ॥ ४६ ॥
एए नरिन्दवसभा, निक्खन्ता जिणसासणे। पुत्ते रज्जे ठवेऊण, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥ ४७ ॥

ोवीरायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे। उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४८ ॥
हेव कासीराया, सेओसच्चपरक्कमे। कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥
हेव विजओ राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए। रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥ ५० ॥
हेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा। महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥
हं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे। एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥ ५२ ॥
च्चन्तनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई। अतरिंसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणागया ॥ ५३ ॥
हिं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं परियावसे। सव्वसंगविनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥ ५४ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ संजइज्जं समत्तं ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीयं एगूणवीसइमं अज्झयणं ॥

ग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए। राया बलभद्दि त्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥
सिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते त्ति विस्सुए। अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥
न्दणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं। देवोदोगुन्दगे चेव, निच्चं मुइयमाणसो ॥ ३ ॥
णिरयणकोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ। आलोएइ नगरस्स, चउक्क त्तियचच्चरे ॥ ४ ॥
ह तत्थ अइच्छन्तं, पासई समणसंजयं। तवनियमसंजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥
देहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ। कहिं मन्ने रिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥
हुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे। मोहं गयस्स सन्तस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
ाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए। सरई पोराणियं जाई, सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥
मएहि अरज्जन्तो, रज्जन्तो संजमम्मि य। अम्मापियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ ९ ॥

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाउ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥ १० ॥

म्म ताय मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा। पच्छा कडुयविवागा, अणुबन्धदुहावहा ॥ ११ ॥
मं सरीरं अणिच्चं, असुइ असुइसंभवं। असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥ १२ ॥
सासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं। पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ॥ १३ ॥
ाणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाण आलए। जरामरणघत्थम्मि, खणंपि न रमामहं ॥ १४ ॥
म्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य। अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥ १५ ॥
त्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बन्धवा। चइत्ताणं इमं देहं, गन्तव्वमवसस्स मे ॥ १६ ॥
ह किम्पागफलाण, परिणामो न सुन्दरो। एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुन्दरो ॥ १७ ॥
द्धाणं जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जई। गच्छन्तो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ॥ १८ ॥
वं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं। गच्छन्तो सो सुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥ १९ ॥

एव धम्म पि काऊण, जो गच्छइ पर भव। गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ॥ २१ ॥
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू। सारभण्डाणि नीणेइ, असार अवउज्झइ ॥ २२ ॥
एव लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य। अप्पाण तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २३ ॥
त बिन्तम्मापियरो, सामण्ण पुत्त दुच्चर। गुणाण तु सहस्साइ, धारेयव्वाइ भिक्खुणा ॥ २४ ॥
समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे। पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्कर ॥ २५ ॥
निच्चकालप्पमत्तेण, मुसावायविवज्जण। भासियव्व हियं सच्च, निच्चाउत्तेण दुक्कर ॥ २६ ॥
दन्तसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जण। अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्कर ॥ २७ ॥
विरई अबम्भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा। उग्ग महव्वयं बम्भ, धारेयव्व सुदुक्कर ॥ २८ ॥
धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जण। सव्वारम्भपरिच्चाओ, निम्ममत्त सुदुक्कर ॥ २९ ॥
चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा। सन्निहीसचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्कर ॥ ३० ॥
छुहा तण्हा य सीउण्ह दसमसगवेयणा। अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३१ ॥
तालणा तज्जणा चेव, वहबधपरीसहा। दुक्ख भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥ ३२ ॥
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो। दुक्ख बम्भवय घोर, धारेउ य महप्पणो ॥ ३३ ॥
सुहोइओ तुम पुत्ता, सुकुमालो सुमज्जिओ। न हु सी पभू तुम पुत्ता, सामण्णमणुपालिया ॥ ३४ ॥
जावज्जीवमविस्सामो, गुणाण तु महब्भरो। गुरु उ लोहभारुव्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥ ३५ ॥
आगासे गगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो। बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥ ३६ ॥
वालुया कवलो चेव, निरस्साए उ सजमे। असिधारागमण चेव, दुक्कर चरिउ तवो ॥ ३७ ॥
अही वेगन्तदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त दुक्कर। जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्कर ॥ ३८ ॥
जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउ होइ सुदुक्करा। तहा दुक्कर करेउ जे, तारुण्णे समणत्तण ॥ ३९ ॥
जहा दुक्ख भरेउ जे, होइ वायस्स कोत्थलो। तहा दुक्ख करेउ जे, कीवेण समणत्तण ॥ ४० ॥
जहा तुलाए तोलेउ, दुक्करो मन्दरो गिरी। तहा निहुयनीसक, दुक्कर समणत्तण ॥ ४१ ॥
जहा भुयाहिं तरिउ, दुक्कर रयणायरो। तहा अणुवसन्तेण, दुक्कर दमसागरो ॥ ४२ ॥
भुज माणुस्सए भोगे, पचलक्खणए तुम। भुत्तभोगी तओ जाया, पच्छा धम्म चरिस्ससि ॥ ४३ ॥
सो बेइ अम्मापियरो, एवमेय जहा फुड। इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्कर ॥ ४४ ॥
सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अणन्तसो। मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्खभयाणि य ॥ ४५ ॥
जरामरणकन्तारे, चाउरन्ते भयागरे। मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥ ४६ ॥
जहा इह अगणी उण्हो, एत्तोऽणन्तगुणे तहिं। नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ॥ ४७ ॥
जहा इह इम सीय, एत्तोऽणन्तगुणे तहिं। नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥ ४८ ॥
कन्दन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरे। हुयासणे जलन्तम्मि, पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥ ४९ ॥
महादवग्गिसकासे, मरुम्मि वइरवालुए। कलम्बवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥ ५० ॥
रसन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढ बद्धो अबन्धवो। करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥ ५१ ॥
अइतिक्खकण्टगाइण्णे, तुगे सिम्बलिपायवे। खेवियं पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्कर ॥ ५२ ॥
महाजन्तेसु उच्छू वा, आरसन्तो सुभेरव। पीलिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणन्तसो ॥ ५३ ॥

कूवन्तो कोलसुणएहिं, सामेहि सबलेहि य। फाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरन्तो अणेगसो ॥ ५४ ॥
असीहि अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य। छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ओइण्णो पावकम्मुणा ॥ ५५ ॥
अवसे लोहरहे जुत्तो, जलन्ते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५६ ॥
हुयासणे जलन्तम्मि, चियासु महिसो विव। दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥ ५७ ॥
बला संडासतुण्डेहिं, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं। विलुत्तो विलवन्तो हं, ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो ॥ ५८ ॥
तण्हाकिलन्तो धावन्तो, पत्तो वेयरणिं नदिं। जलं पाहिं ति चिन्तन्तो, खुरधाराहि विवाइओ ॥ ५९ ॥
उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं। असिपत्तेहि पडन्तेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६० ॥
मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहिं य। गया संभग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥ ६१ ॥
खुरेहिं तिक्खधारेहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य। कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥ ६२ ॥
पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं। वाहिओ बद्धरुद्धो वा, बहू चेव विवाइओ ॥ ६३ ॥
गलेहि मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणन्तसो ॥ ६४ ॥
वीदंसएहि जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो बद्धो य, मारिओ य अणन्तसो ॥ ६५ ॥
कुहाडफरसुमाईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव। कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणन्तसो ॥ ६६ ॥
चवेडमुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पिव। ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणन्तसो ॥ ६७ ॥
तत्ताइं तम्बलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य। पाइओ कलकलन्ताइं, आरसन्तो सुभेरवं ॥ ६८ ॥
तुहं पियाइं मंसाइं, खण्डाइं सोल्लगाणि य। खाविओ मि समंसाइं, अग्गिवण्णाइऽणेगसो ॥ ६९ ॥
तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य। पाइओ मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥ ७० ॥
निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य। परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेदिता मए ॥ ७१ ॥
तिव्वचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा। महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेदिता मए ॥ ७२ ॥
जारिसा माणुसे लोए, ताया दीसन्ति वेयणा। एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥ ७३ ॥
सव्वभवेसु अस्साया, वेयणा वेदिता मए। निमेसन्तरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ॥ ७४ ॥
तं बिन्तम्मापियरो, छन्देणं पुत्त पव्वया। नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७५ ॥
सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं। पडिकम्मं को कुणई, अरण्णे मियपक्खिणं ॥ ७६ ॥
एगब्भूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे। एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥
जया मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई। अच्चन्तं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छई ॥ ७८ ॥
को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छई सुहं। को से भत्तं च पाणं वा, आहरित्तु पणामए ॥ ७९ ॥
जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं। भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥ ८० ॥
खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य। मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छई मिगचारियं ॥ ८१ ॥
एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए। मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥ ८२ ॥

जहा मिगे एगे अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोयरे य।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥ ॥ ८३ ॥

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं। अम्मापिईहिऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तहा ॥ ८४ ॥
मियचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। तुब्भेहिं अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्त जहासुहं ॥ ८५ ॥

एव सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविह । ममत्त छिन्दई ताहे, महानागो व कचुयं ॥ ८६ ॥
इड्ढी वित्त च मित्ते य, पुत्तदार च नायओ । रेणुय व पडे लग्ग, निध्धुत्ताण निग्गओ ॥ ८७ ॥
पचमहव्वयजुत्तो, पंचहि समिओ तिगुत्तिगुत्तो य । सब्भिन्तरबाहिरओ, तवोकम्मसि उज्जुओ ॥ ८८ ॥
निम्ममो निरहकारो, निस्सगो चत्तगारवो । समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥ ८९ ॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा । समो निन्दापससासु, तहा माणावमाणओ ॥ ९० ॥
गारवेसु कसाएसु, दण्डसल्लभएसु य । नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबन्धणो ॥ ९१ ॥
अणिस्सिओ इह लोए, परलोए अणिस्सिओ । वासीचन्दणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥ ९२ ॥
अप्पसत्थेहि दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे । अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणे ॥ ९३ ॥
एव नाणेण चरणेण, दसणेण तवेण य । भावणाहि य सुद्धाहिं, सम्म भावेत्तु अप्पय ॥ ९४ ॥
बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया । मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तर ॥ ९५ ॥
एव करन्ति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा । विणिअट्टन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥ ९६ ॥

महापभावस्स महाजसस्स, मियापुत्तस्स निसम्म भासिय ।
तवप्पहाण चरिय च उत्तमं, गइप्पहाण च तिलोगविस्सुत ॥ ॥ ९७ ॥
वियाणिया दुक्खविवद्धण धण, ममत्तबन्ध च महाभयावह ।
सुहावह धम्मधुर अणुत्तर, धारेज्ज निव्वाणगुणावहं मह ॥ ॥ ९८ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ मियापुत्तीय समत्त ॥ १९ ॥

॥ अह महानियण्ठिज्ज वीसइमं अज्झयणं ॥

सिद्धाण नमो किच्चा, सजयाण च भावओ । अत्थधम्मगइ तच्च अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥
पभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो । विहारजत्त निज्जाओ, मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥ २ ॥
नाणादुमलयाइण्ण, नाणापक्खिनिसेविय । नाणाकुसुमसछन्न, उज्जाण नन्दणोवम ॥ ३ ॥
तत्थ सो पासई साहु, सजयं सुसमाहिय । निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥
तस्स रूव तु पासित्ता, राइणो तम्मि सजए । अच्चन्तपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥
अहो वण्णो अहो रूव, अहो अज्जस्स सोमया । अहो खन्ती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥ ६ ॥
तस्स पाए उ वन्दित्ता, काऊण य पयाहिण । नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छई ॥ ७ ॥
तरुणो सि अज्जो पव्वइओ, भोगकालम्मि सजया । उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि ता ॥ ८ ॥
अणाहोमि महाराय, नाहो मज्झ न विज्जई । अणुकम्पग सुहिं वावि, कचि नाभिसमेमह ॥ ९ ॥
तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो । एवं ते इड्ढिमन्तस्स, कहं नाहो न विज्जई ॥ १० ॥
होमि नाहो भयताण, भोगे भुजाहि सजया । मित्तनाईपरिवुडो माणुस्स खु सुदुल्लहं ॥ ११ ॥
अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया मगहाहिवा । अप्पणा अणाहो सन्तो, कस्स नाहो भविस्ससि ॥ १२ ॥
एवं वुत्तो नरिन्दो सो, सुसभन्तो सुविम्हिओ । वयण अस्सुयपुव्व साहुणा विम्हयन्निओ ॥ १३

रिसे मम्पयग्गम्मि, मवक्कामसमप्पिए। कहं अणाहो भवइ, मा हु भन्ते मुसं वए ॥ १५ ॥
तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा। जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ॥ १६ ॥
णेह मे महाराय, अवक्खित्तेण चेयसा। जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥ १७ ॥
ोसम्बी नाम नयरी, पुराण पुरभेयणी। तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसंचओ ॥ १८ ॥
ढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा। अहोत्था विउलो डाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥ १९ ॥
त्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरन्तरे। आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥
ियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमंग च पीडई। इन्दासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥ २१ ॥
वट्ठिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छया। अधीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥ २२ ॥
मे तिगिच्छ कुव्वन्ति, चाउप्पायं जहाहियं। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥ २३ ॥
ाया मे सव्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २४ ॥
ाया य मे महाराय, पुत्तसोगदुहट्टिया। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २५ ॥
ायरो मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥ २६ ॥
इणीओ मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा। न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥ २७ ॥
ारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुव्वया। अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचई ॥ २८ ॥
न्नं च पाणं ण्हाणं च, गन्धमल्लविलेवणं। मए नायमणायं वा, सा बाला नेव भुंजई ॥ २९ ॥
णं पि मे महाराय, पासाओ मे न फिट्टई। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ ३० ॥
ओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो। वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणन्तए ॥ ३१ ॥
इं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ। खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वए अणगारियं ॥ ३२ ॥
वं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा। परियत्तन्तीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥
ओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बन्धवे। खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वइओऽणगारियं ॥ ३४ ॥
ो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य। सव्वे सिं चेव भूयाणं, तसाण थावराण य ॥ ३५ ॥
प्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली। अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नन्दणं वणं ॥ ३६ ॥
प्पा कत्ता विकत्ता य, दुक्खाण य सुहाण य। अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि।
नियण्ठधम्मं लहीयाण वी जहा, सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥ ३८ ॥
जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ बन्धणं से ॥ ३९ ॥
आउत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाणनिक्खेवदुगंछणाए, न धीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥
चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए ॥ ४१ ॥

कुसीललिंग इह धारइत्ता, इसिज्झय जीविय बूहइत्ता ।
असजए सजयलप्पमाणे, विणिग्घायमागच्छइ से चिरपि ॥ ४३ ॥
विस तु पीय जह कालकूड, हणाइ सत्थ जह कुग्गहीयं ।
एसो वि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥
जे लक्खण सुविण पउंजमाणे, निमित्तकोऊहलसपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी, न गच्छई सरण तम्मि काले ॥ ४५ ॥
तम तमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परियासुवेइ ।
सधावई नरगतिरिक्खजोणिं, मोण विराहेत्तु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥
उद्देसिय कीयगड नियाग, न मुचई किं च अणेसणिज्ज ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पाव ॥ ४७ ॥
न त अरी कठछेत्ता करेइ, ज से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
से नाहइ मच्चुमुह तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥
निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्ठ विवज्जासमेइ ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥
एमेव हा छन्दकुसीलरूवे, मग्ग विराहेत्तु जिणुत्तमाण ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्ठसोया परियावमेइ ॥ ५० ॥
सोच्चाण मेहावि सुभासिय इम, अणुसासण नाणगुणोववेय ।
मग्ग कुसीलाण जहाय सव्व, महानियण्ठाण वए पहेण ॥ ५१ ॥
चरित्तमायारगुणन्निए तओ, अणुत्तर सजम पालियाण ।
निरासवे सखवियाण कम्म, उवेइ ठाण विउलुत्तम धुव ॥ ५२ ॥
एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे, महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिण महासुय, से कहेई महया वित्थरेण ॥ ५३ ॥
तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयजली ।
अणाहत्त जहाभूय, सुट्ठु मे उवदसिय ॥ ५४ ॥
तुज्झ सुलद्ध खु मणुस्स जम्म, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य, ज मे ठिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥ ५५ ॥
त सि नाहो अणाहाण, सव्वभूयाण सजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउ ॥ ५६ ॥
पुच्छिऊण मए तुब्भ, झाणविग्घाओ जो कओ ।
निमन्तिया य भोगेहिं, त सव्व मरिसेहि मे ॥ ५७ ॥
एव थुणित्ताण स रायसीहो, अणगारसीह परमाइ भत्तीए ।
सओरोहो सपरियणो सबन्धवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥ ५८ ॥

अभिवन्दिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥ ५९ ॥
इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥ ६० ॥
त्ति बेमि ॥ इअ महानियण्ठिज्जं समत्तं ॥

॥ अह समुद्दपालीयं एगवीसइमं अज्झयणं ॥

चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए। महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥
निग्गन्थे पावयणे, सावए से वि कोविए। पोएण ववहरन्ते, पिहुण्डं नगरमागए ॥ २ ॥
पिहुण्डे ववहन्तस्स, वाणिओ देइ धूयरं। तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥
अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवई। अह बालए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ॥ ४ ॥
खेमेण आगए चम्पं, सावए वाणिए घरं। संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥
बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए। जोव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ॥ ६ ॥
तस्स रूववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं। पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुन्दओ जहा ॥ ७ ॥
अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ। वज्झमण्डणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥
तं पासिऊण संवेगं, समुद्दपालो इणमब्बवी। अहोऽसुभाण कम्माणं, निज्जाण पावगं इमं ॥ ९ ॥
संबुद्धो सो तहिं भगवं, परमसंवेगमागओ। आपुच्छमापियरो, पव्वए अणगारियं ॥ १० ॥

जहित्तु ऽसग्गन्थमहाकिलेसं, महन्तमोहं कसिणं भयावहं ।
परियायधम्मं चभिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥
अहिंससच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बम्भं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि, चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू ॥ १२ ॥
सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी, खन्तिक्खमे संजमबम्भयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥ १३ ॥
कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य ।
सीहो व सद्देण न सन्तसेज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥ १४ ॥
उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थ ऽभिरोयएज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए ॥ १५ ॥
अणेगछन्दामिह माणवेहिं, जे भावओ संपगरेइ भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥
परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥
सीओसिणा दंसमसा य फासा, आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।

We have,

पहाय राग च तहेव दोस, मोह च भिक्खू सतत वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥
अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पुय गरह च सजए ।
स उज्जभाव पडिवज्ज, सजए, निव्वाणमग्ग विरए उवेइ ॥ २० ॥
अरइरइसहे पहीणसथवे, विरए आयहिए पहाणव ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिचणे ॥ २१ ॥
विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई, निरोवलेवाइ असथडाइ ।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइ ॥ २२ ॥
सन्नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तर चरिउ धम्मसचय ।
अणुत्तरे नाणधरे जससी, ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे ॥ २३ ॥
दुविह खवेऊण य पुण्णपाव, निरगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्द व महाभवोघ, समुद्दपाले अपुणागम गए ॥ २४ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ समुद्दपालीय समत्त ॥

॥ अह रहनेमिज्ज बावीसइम अज्झयण ॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए । वसुदेवु त्ति नामेण, रायलक्खणसजुए ॥ १ ॥
तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा । तासिं दोण्ह दुवे पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥ २ ॥
सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए । समुद्दविजए नाम, रायलक्खणसजुए ॥ ३ ॥
तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो । भगव अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥
सो ऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसजुओ । अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥
वज्जरिसहसघयणो, समचउरसो झसोयरो । तस्स रायमईकन्न, भज्ज जायइ केसवो ॥ ६ ॥
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी । सव्वलक्खणसपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥ ७ ॥
अहाह जणओ तीसे, वासुदेव महिड्ढिय । इहागच्छउकुमारो, जा से कन्न ददामि ह ॥ ८ ॥
सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कयकोउयमगलो । दिव्वजुयलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥
मत्त च गन्धहत्थिं, वासुदेवस्स जेट्ठग । आरूढो सोहए अहिय, सिरे चूडामणि जहा ॥ १० ॥
अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए । दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥
चउरगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कम । तुरियाण सन्निनाएण, दिव्वेण गगण फुसे ॥ १२ ॥
एयारिसाए इड्ढीए, जुत्तीए उत्तमाइ य । नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुगवो ॥ १३ ॥
अह सो तत्थ निज्जन्तो, दिस्स पाणे भयद्दुए । वाडेहिं पजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥
जीवियन्त तु सम्पत्ते, मसट्ठा भक्खियव्वए । पासेत्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ॥ १५ ॥
कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ॥ १६ ॥
अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो । तुज्झ विवाहकज्जम्मि, भोयावेउ बहुजण ॥ १७ ॥

... साणुक्कोसे जिए हिऊ ॥ १८ ॥
सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणिविणासणं। चिन्तेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिऊ ॥ १९ ॥
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मन्ति सुबहू जिया। न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥ २० ॥
सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो। आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २१ ॥
मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइयं समोइण्णा। सव्वड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ॥ २२ ॥
देवमणुस्सपरिवुडो सीयारयणं तओ समारूढो, निक्खिमय बारगाओ, रेवयम्मि ट्ठिओ भगवं ॥ २३ ॥
उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ। साहस्सीइ परिवुडो, मह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥ २४ ॥
अह से सुगन्धगन्धीए, तुरियं मउकुंचिए। सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २५ ॥
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं। इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसू तं दमीसरा ॥ २६ ॥
नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य। खन्तीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥ २७ ॥
एवं ते रामकेसवा, दसारा य बहू जणा। अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता, अभिगया बारगापुरिं ॥ २८ ॥
सोऊण रायकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ। नीहासा य निराणन्दा, सोगेण उ समुत्थिया ॥ २९ ॥
राईमई विचिन्तेइ, धिरत्थु मम जीवियं। जा हं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ॥ ३० ॥
अह सा भमरसन्निभे, कुच्चफणगसाहिए। सयमेव लुंचई केसे, धिइमन्ता ववस्सिया ॥ ३१ ॥
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं। संसारसागरं घोरं, तर कन्ने लहुं लहुं ॥ ३२ ॥
सा पव्वइया सन्ती, पव्वावेसी तहिं बहुं सयणं परियणं चेव, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥ ३३ ॥
गिरिं रेवतयं जन्ती, वासेणुल्ला उ अन्तरा। वासन्ते अन्धयारम्मि, अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥ ३४ ॥
चीवराइं विसारन्ती, जहा जाय त्ति पासिया। रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥ ३५ ॥
भीया य सा तहिं दट्ठु, एगन्ते संजयं तयं। बाहाहिं काउ संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥ ३६ ॥
अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ। भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कं उदाहरे ॥ ३७ ॥
रहनेमी अहं भद्दे, सुरूवे चारुभासिणी। ममं भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सई ॥ ३८ ॥
एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं। भुत्तभोगी पुणो पच्छा, जिणमग्गं चरिस्समो ॥ ३९ ॥
दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोयपराजियं। राईमई असम्भन्ता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥ ४० ॥
अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए। जाई कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वए ॥ ४१ ॥
जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकुबरो। तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुरंदरो ॥ ४२ ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा। वन्तं इच्छसि आवाउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ४३ ॥
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अन्धगवण्हिणो। मा कुले गन्धणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ४४ ॥
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दच्छसि नारिओ। वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४५ ॥
गोवालो भण्डवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो। एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥ ४६ ॥
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं। अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ ४७ ॥
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिए। सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥ ४८ ॥
उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दोण्णि वि केवली। सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥ ४९ ॥
एवं करेन्ति संबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा। विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ ५० ॥

॥ अह केसिगोयमिज्ज तेवीसइमं अज्झयण ॥

जिणे पासि त्ति नामेण, अरहा लोगपूइओ । सबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ १ ॥
तस्स लोगपदीवस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥
ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससघसमाउले । गामाणुगाम रीयन्ते, सावत्थि पुरमागए ॥ ३ ॥
तिन्दुय नाम उज्जाण, तम्मि नगरमण्डले । फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥
अह तेणेव कालेण धम्मतित्थयरे जिणे । भगव वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥
तस्स लोगपदीवस्स आसि सीसे महायसे । भगव गोयमे नाम, विज्जाचरणपारए ॥ ६ ॥
बारसगविऊ बुद्धे, सीससघसमाउले । गामाणुगाम रीयन्ते, से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥
कोट्ठग नाम उज्जाण, तम्मी नगरमण्डले । फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥ ९ ॥
उभओ सीससघाण, सजयाण तवस्सिण, । तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवन्ताण ताइण ॥ १० ॥
केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो । आयारधम्म पणिही, इमा वा सा व केरिसी ॥ ११ ॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥
अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाण, विसेसे किं नु कारण ॥ १३ ॥
अह ते तत्थ सीसाण, विन्नाय पवितक्किय । समागमे कयमई, उभओ केसिगोयमा ॥ १४ ॥
गोयमे पडिरूवन्नू, सीससघसमाउले । जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुयं वणमागओ ॥ १५ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयम दिस्समागय । पडिरूव पडिवत्ति सम्म सपडिवज्जई ॥ १६ ॥
पलाल फासुय तत्थ, पंचम कुसतणाणि य । गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्प सपणामए ॥ १७ ॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ निसण्णा सोहन्ति, चन्दसूरसमप्पभा ॥ १८ ॥
समागया बहू तत्थ, पासण्डा कोउगा मिया । गिहत्थाण अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥ १९ ॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । अदिस्साण च भूयाण, आसी तत्थ समागमो ॥ २० ॥
पुच्छामि ते महाभाग, केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवन्त तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ २१ ॥
पुच्छ भन्ते जहिच्छ ते, केसिं गोयममब्बवी । तओ केसी अणुन्नाए, गोयम इणमब्बवी ॥ २२ ॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥ २३ ॥
एगकज्जपवन्नाण, विसेसे किं नु कारण । धम्मे दुविहे मेहावी, कह विप्पच्चओ न ते ॥ २४ ॥
तओ केसि बुवन्त तु, गोयमो इणमब्बवी । पन्ना समिक्खए धम्मतत्त तत्तविणिच्छिय ॥ २५ ॥
पुरिमा उज्जुजडा उ, वक्कजडा य पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥
पुरिमाण दुव्विसोज्झो उ, चरिमाण दुरणुपालओ । कप्पो मज्झिमगाण तु, सुविसोज्झो सुपालओ ॥ २७ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ २८ ॥
अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ॥ २९ ॥

केसिमेवं वुवाणं तु, गोयमो इणमब्बवी । विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥ ३१ ॥
पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं । जत्तत्थं गणहत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ॥ ३२ ॥
अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भूयसाहणा । नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ३४ ॥
अणेगाणं सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा। ते य ते अहिगच्छन्ति, कहं ते निज्जिया तुमे ॥ ३५ ॥
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस । दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥ ३६ ॥
सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयम मब्बवी । तओ केसिं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥
एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इन्दियाणि य । ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥ ३८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो, अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ३९ ॥
दीसन्ति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो । मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं विहरसी मुणी ॥ ४० ॥
ते पासे सव्वसो छित्ता, निहन्तूण उवायओ । मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं विहरामि अहं मुणी ॥ ४१ ॥
पासा य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी । केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ४२ ॥
रागद्दोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा । ते छिन्दित्ता जहानायं, विहरामि जहक्कमं ॥ ४३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ४४ ॥
अन्तोहियय संभूया, लया चिट्ठइ गोयमा । फलेइ विसभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ॥ ४५ ॥
तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं । विहरामि जहानायं, मुक्को मि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥
लया य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी । केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥
भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया । तमुद्धिचा जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥ ४८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ४९ ॥
संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा। जे डहन्ति सरीरत्थे, कहं विज्झाविया तुमे ॥ ५० ॥
महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं । सिंचामि सययं देहं, सित्ता नो व डहन्ति मे ॥ ५१ ॥
अग्गी य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी । केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥
कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जलं। सुयधाराभिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥ ५३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ५४ ॥
अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई । जंसि गोयममारूढो, कहं तेण न हीरसि ॥ ५५ ॥
पधावन्तं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं । न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जई ॥ ५६ ॥
आसे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी । केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ५७ ॥
मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई। तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कन्थगं ॥ ५८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥ ५९ ॥
कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासन्ति जन्तुणो। अद्धाणे कह वट्टन्ते, तं न नाससि गोयमा ॥ ६० ॥
जे य मग्गेण गच्छन्ति, जे य उम्मग्गपट्ठिया। ते सव्वे वेइया मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी ॥ ६१ ॥
मग्गे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी । केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ६२ ॥
कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया । सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥ ६३ ॥

साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ६४ ॥
महाउदगवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिण। सरण गई पइट्ठा य, दीव क मन्नसी मुणी ॥ ६५ ॥
अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ। महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विज्जई ॥ ६६ ॥
दीवे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ६७ ॥
जरामरणवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिण। धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तम ॥ ६८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ६९ ॥
अण्णवसि महोहसि, नावा विपरिधावई। जसि गोयममारूढो, कह पार गमिस्ससि ॥ ७० ॥
जा उ सस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी। जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥
नावा य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७२ ॥
सरीरमाहु नाव त्ति, जीवे वुच्चइ नाविओ। ससारो अण्णवो वुत्तो, ज तरति महेसिणो ॥ ७३ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ७४ ॥
अन्धयारे तमे घोरे, चिट्ठन्ति पाणिणो बहू। को करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७५ ॥
उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभकरो। सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७६ ॥
भाणू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥
उग्गओ खीणससारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो। सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥ ७८ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ७९ ॥
सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणाण पाणिण। खेम सिवमणाबाह, ठाण किं मन्नसी मुणी ॥ ८० ॥
अत्थि एग धुव ठाण, लोगग्गम्मि दुरारुह। जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥
ठाणे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी। केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ८२ ॥
निव्वाण ति अबाह ति, सिद्धी लोगग्गमेव य। खेम सिव अणाबाह, ज चरति महेसिणो ॥ ८३ ॥
त ठाण सासय वास, लोयग्गम्मि दुरारुह। ज सपत्ता न सोयन्ति, भवोहन्तकरा मुणी ॥ ८४ ॥
साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो। नमो ते ससयातीत, सव्वसुत्तमहोयही ॥ ८५ ॥
एव तु ससए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे। अभिवन्दित्ता सिरसा, गोयम तु महायस ॥ ८६ ॥
पचमहव्वयधम्म, पडिवज्जइ भावओ। पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥
केसीगोयमओ निच्च, तम्मि आसि समागमे। सुयसीलसमुक्कसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥ ८८ ॥
तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्ग समुवट्ठिया। सथुया ते पसीयन्तु, भयव केसिगोयमे ॥ ८९ ॥

त्ति बेमि ॥ केसिगोयमिज्ज समत्त ॥ २३ ॥

॥ अह समिईओ चउवीसइमं अज्झयणं ॥

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य । पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहिया ॥ १ ॥
इरियाभासेसणादाणे, उच्चारे समिई इय । मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अट्ठमा ॥ २ ॥
एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया । दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥ ३ ॥
आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाय य । चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥ ४ ॥
तत्थ आलम्बणं नाणं दंसणं चरणं तहा । काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । जायणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तओ । कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥ ७ ॥
इन्दियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पञ्चहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए ॥ ८ ॥
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया । हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ॥ ९ ॥
एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए । असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥ १० ॥
गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणाय य । आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ॥ ११ ॥
उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं । परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई ॥ १२ ॥
ओहोवहोवग्गहियं, भण्डगं दुविहं मुणी । गिण्हन्तो निक्खिवन्तो वा, पउंजेज्ज इमं विहिं ॥ १३ ॥
चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जयं जई । आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥ १४ ॥
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं । आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥ १५ ॥
अणावायमसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए । आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥ १६ ॥
अणावायमसंलोए, परस्सणुवघाइए । समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥ १७ ॥
वित्थिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने विलवज्जिए । तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥ १८ ॥
एयाओ पञ्च समिईओ, समासेण वियाहिया । एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १९ ॥
संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य । चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्तीओ चउव्विहा ॥ २० ॥
संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य । मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २१ ॥
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य । चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥ २२ ॥
संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य । वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २३ ॥
ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे । उल्लंघणपल्लंघणे, इन्दियाण य जुंजणे ॥ २४ ॥
संरम्भसमारम्भे, आरम्भम्मि तहेव य । कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २५ ॥
एयाओ पञ्च समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे । गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥
एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी । खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ २७

त्ति बेमि ॥ इअ समिईओ समत्ताओ

॥ अह जन्नइज्ज पञ्चवीसइम अज्झयण ॥

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो । जायाई जमजन्नम्मि, जयघोसि त्ति नामओ ॥ १ ॥
इन्दियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी । गामाणुग्गाम रीयंते, पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥ २ ॥
वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे । फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥
अह तेणेव कालेण, पुरीए तत्थ माहणे । विजयघोसि त्ति नामेण, जन्न जयइ वेयवी ॥ ४ ॥
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे । विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥ ५ ॥
समुवट्ठियं तहिं सन्तं, जायगो पडिसेहए । न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥
जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया । जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य । तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू सव्वकामियं ॥ ८ ॥
सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी । न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तिमट्ठगवेसओ ॥ ९ ॥
नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा । तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इणं वयणमब्बवी ॥ १० ॥
नवि जाणसि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥ ११ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य । न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥
तस्सक्खेवपमोक्खं तु, अचयन्तो तहिं दिओ । सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणिं ॥ १३ ॥
वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥ १४ ॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य । एयं मे संसयं सव्वं, साहू कहसु पुच्छिओ ॥ १५ ॥
अग्गिहुत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसा मुहं । नक्खत्ताण मुहं चन्दो, धम्माण कासवो मुहं ॥ १६ ॥
जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठन्ती पंजलीउडा । वन्दमाणा नमंसन्ता, उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥
अजाणगा जन्नवाई, विज्जामाहणसंपया । गूढा सज्झायतवसा, भासच्छन्ना इवग्गिणो ॥ १८ ॥
नो लोए बम्भणो वुत्तो, अग्गीव महिओ जहा । सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥ १९ ॥
जो न सज्जइ आगन्तुं, पव्वयन्तो न सोयइ । रमइ अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहणं ॥ २० ॥
जायरूवं जहामट्ठं, निद्धन्तमलपावगं । रागदोसभयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥
तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं । सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २२ ॥
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे । जो न हिंसइ तिविहेण, तं वयं बूम माहणं ॥ २३ ॥
कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया । मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥ २४ ॥
चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं । न गिण्हाइ अदत्तं जे, तं वयं बूम माहणं ॥ २५ ॥
दिव्वमाणुसतेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं । मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥
जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा । एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥
अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं । असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २८ ॥
जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइसंगे य बन्धवे । जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २९ ॥

वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो । न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण तावसो ॥ ३१ ॥
मयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो । नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥
म्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ । वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ ३३ ॥
ए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ । सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥ ३४ ॥
गुणसमाउत्ता, जे भवन्ति दिउत्तमा । ते समत्था उ उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥
तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे । समुदाय तयं तं तु, जयघोसं महामुणिं ॥ ३६ ॥
य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली । माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ३७ ॥
मे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ । जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥
मे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य । तमणुग्गहं करेहम्हं, भिक्खेणं भिक्खु उत्तमा ॥ ३९ ॥
कज्जं मज्झ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमसू दिया । मा भमिहिसि भयावट्टे, घोरे संसारसागरे ॥ ४० ॥
लेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई । भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥ ४१ ॥
ओ सुक्खो य दो छूढा, गोलया मट्टियामया । दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गई ॥ ४२ ॥
लग्गन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा । विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा से सुक्खगोलए ॥ ४३ ॥
से विजयघोसे, जयघोसस्स अन्तिए । अणगारस्स निक्खन्तो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥ ४४ ॥
वित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥ ४५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ जन्नइज्जं समत्तं ॥ २५ ॥

॥ अह सामायारी छव्वीसइमं अज्झयणं ॥

मायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं । जं चरित्ताण निग्गन्था, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥
मा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया । आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥
मी छन्दणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठओ । सत्तमो मिच्छकारो य, तहक्कारो य अट्ठमो ॥ ३ ॥
भुट्ठाणं च नवमं, दसमी उपसंपदा । एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥
मणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं । आपुच्छणं सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणं ॥ ५ ॥
दणा दव्वजाएणं, इच्छाकारो य सारणे । मिच्छाकारो य निन्दाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥
भुट्ठाणं गुरुपूया, अच्छणे उवसंपदा । एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥
इल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिए । भण्डयं पडिलेहित्ता, वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥ ८ ॥
च्छिज्ज पंजलीउडो, किं कायव्वं मए इह । इच्छं निओइउं भन्ते, वेयावच्चे व सज्झाए ॥ ९ ॥
वच्चे निउत्तेण, कायव्वं अगिलायओ । सज्झाए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥
सस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो । तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥ ११ ॥
मं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई । तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥ १२ ॥

आसाढबहुलपक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य। फग्गुणवइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥ १५ ॥
जेट्ठामूले आसाढसावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा। अट्ठहिं बीयतम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥ १६ ॥
रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो। तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥ १७ ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई। तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥ १८ ॥
जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए। संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालम्मि ॥ १९ ॥
तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसम्मि। वेरत्तियं पि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥ २० ॥
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भण्डयं। गुरुं वन्दित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥ २१ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं। अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥
मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं। गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥
उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे। तो बिइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ॥ २४ ॥
अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबन्धिमसोमलिं चेव। छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ॥ २५ ॥
आरभडा सम्मद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया। पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥ २६ ॥
पसिढिलपलम्बलोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा। कुणइ पमाणिपमायं, संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥ २७ ॥
अणूणाइरित्तपडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य। पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥ २८ ॥
पडिलेहणं कुणन्तो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा। देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ २९ ॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ-वणस्सइ-तसाणं। पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥ ३० ॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ-तसाणं। पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ॥ ३१ ॥
तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए। छण्हं अन्नयराए, कारणम्मि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥
वेयण वेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥ ३३ ॥
निग्गन्थो धिइमन्तो, निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव। ठाणेहि उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥ ३४ ॥
आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु। पाणिदया तवहेउं, सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ ३५ ॥
अवसेसं भण्डगं गिज्झ, चक्खुसा पडिलेहए। परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥ ३६ ॥
चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं। सज्झायं तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥ ३७ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं। पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥
पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई। काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥
देवसियं च अईयारं, चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो। नाणे य दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥ ४० ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। देसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४२ ॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं। थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥ ४३ ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं, बितियं झाणं झियायई। तइयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥ ४४ ॥
पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया। सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहेन्तो असंजए ॥ ४५ ॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दिऊण तओ गुरुं। पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥
आगए कायवोस्सग्गे, सव्वदुक्खविमोक्खणे। काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४७ ॥

ाइयं च अईयारं, चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो । नाणंमि दंसणंमि य, चरित्तंमि तवंमि य ॥ ४८ ॥
ारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं । राइयं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४९ ॥
डिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ५० ॥
कं तवं पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिन्तए । काउस्सग्गं तु पारित्ता, वन्दई य तओ गुरुं ॥ ५१ ॥
ारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं । तवं तु पडिवज्जेज्जा, कुज्जा सिद्धाण संथवं ॥ ५२ ॥
ेसा सामायारी, समासेण वियाहिया । जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ ५३ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सामायारी समत्ता ॥ २६ ॥

॥ अह खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं ॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए । आइण्णे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥
वहणे वहमाणस्स, कन्तारं अइवत्तई । जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई ॥ २ ॥
खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई । असमाहिं च वेएइ, तोत्तओ से य भज्जई ॥ ३ ॥
एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विन्धइऽभिक्खणं । एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥
एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जई । उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ॥ ५ ॥
माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छे पडिप्पहं । मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ॥ ६ ॥
छिन्नाले छिन्दई सेल्लिं, दुद्दन्तो भंजए जुगं । सेवि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायए ॥ ७ ॥
खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोइया धम्मजाणम्मि, भज्जन्ती धिइदुब्बला ॥ ८ ॥
इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए । थद्धे एगे अणुसासम्मी, हेऊहिं कारणेहि य ॥ १० ॥
सो वि अन्तरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वई । आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइऽभिक्खणं ॥ ११ ॥
न सा ममं वियाणाइ; न य सा मज्झ दाहिई । निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोत्थ वच्चउ ॥ १२ ॥
पेसिया पलिउंचन्ति, ते परियन्ति, समन्तओ । रायवेट्ठिं च मन्नन्ता, करेन्ति भिउडिं मुहे ॥ १३ ॥
वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया । जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमन्ति दिसो दिसिं ॥ १४ ॥
अह सारही विचिन्तेइ, खलुंकेहिं समागओ । किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयई ॥ १५ ॥
जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्दहा । गलिगद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हई तवं ॥ १६ ॥
मिउमद्दवसंपन्नो, गम्भीरो सुसमाहिओ । विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणं ॥ १७ ॥

त्ति बेमि ॥ खलुंकिज्जं समत्तं ॥ २७ ॥

॥ अह मोक्खमग्गगई अट्ठावीसइमं अज्झयण ॥

मोक्खमग्गगइ तच्च, सुणेह जिणभासिय । चउकारणसजुत्त, नाणदसणलक्खणं ॥ १ ॥
नाण च दसणं चेव, चरित्त च तवो तहा । एस मग्गु त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं ॥ २ ॥
नाण च दसण चेव, चरित्त च तवो तहा । एयमग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइ ॥ ३ ॥
तत्थ पचविह नाण, सुय आभिनिबोहिय । ओहिनाण तु तइय, मणनाण च केवल ॥ ४ ॥
एय पचविह नाण, दव्वाण य गुणाण य । पज्जवाण य सव्वेसिं, नाण नाणीहि दसिय ॥ ५ ॥
गुणाणमासओ दव्व, एगदव्वस्सिया गुणा । लक्खण पज्जवाण तु उभओ अस्सिया भवे ॥ ६ ॥
धम्मो अहम्मो आगास, कालो पुग्गल जन्तवो । एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं ॥ ७ ॥
धम्मो अहम्मो आगास, दव्व इक्किक्कमाहिय । अणन्ताणि य दव्वाणि, कालो, पुग्गलजन्तवो ॥ ८ ॥
गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायण सव्वदव्वाण, नह ओगाहलक्खण ॥ ९ ॥
वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओगलक्खणो । नाणेण दसणेण च, सुहेण य दुहेण य ॥ १० ॥
नाण च दसणं चेव, चरित्त च तवो तहा । वीरिय उवओगो य, एय जीवस्स लक्खण ॥ ११ ॥
सद्दन्धयार-उज्जोओ, पहा छाया तवे इ वा । वण्णरसगन्धफासा, पुग्गलाण तु लक्खण ॥ १२ ॥
एगत्त च पुहत्त च, सखा सठाणमेव य । सजोगा य विभागा य, पज्जवाण तु लक्खण ॥ १३ ॥
जीवाजीवा य बन्धो य, पुण्ण पावासवा तहा । सवरो निज्जरा मोक्खो, सन्तेए तहिया नव ॥ १४ ॥
तहियाण तु भावाण, सब्भावे उवएसण । भावेण सद्दहन्तस्स, सम्मत्त त वियाहिय ॥ १५ ॥
निसग्गुवएसरुई, आणरुई सुत्त बीयरुइमेव । अभिगम वित्थाररुई, किरिया सखेव धम्मरुई ॥ १६ ॥
भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपाव च । सहसम्मुइयासवसवरो य रोएइ उ निस्सग्गो ॥ १७ ॥
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव । एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥ १८ ॥
एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई । छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥ १९ ॥
रागो दोसो मोहो, अन्नाण जस्स अवगय होइ । आणाए रोएतो, सो खलु आणारुई नाम ॥ २० ॥
जो सुत्तमहिज्जन्तो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्त । अगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ २१ ॥
एगेण अणेगाइ, पयाइ जो पसरई उ सम्मत्त । उदए व्व तेल्लबिन्दू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥ २२ ॥
सो होइ अभिगमरुई, सुयनाण जेण अत्थओ दिट्ठ । एक्कारस अगाइ, पइण्णग दिट्ठिवाओ य ॥ २३ ॥
दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा । सव्वाहि नयविहीहिं, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥ २४ ॥
दसणनाणचरित्ते, तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु । जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥ २५ ॥
अणभिग्गहियकुदिट्ठी सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो। अविसारओ पवयणे,अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥ २६ ॥
जो अत्थिकायधम्म,सुयधम्म खलु चरित्तधम्म च। सद्दहइ जिणाभिहिय,सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥ २७ ॥
परमत्थसथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवण वा वि । वावन्नकुदसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥
नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूण, दसणे उ भइयव्व । सम्मत्तचरित्ताइं, जुगव पुव्व व सम्मत्त ॥ २९ ॥

नादसणिस्स नाण, नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाण ॥ ३० ॥

निस्संकिय-निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूह थिरीकरणे, वच्छल-पभावणे अट्ठ ॥ ३१ ॥
सामाइयत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे वीयं । परिहारविसुद्धीय, सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा । एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥ ३३ ॥
तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एमेवब्भन्तरो तवो ॥ ३४ ॥
नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे । चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ ३५ ॥
खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ ३६ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ मोक्खमग्गगई समत्ता ॥ २८ ॥

॥ अह सम्मत्तपरक्कमं एगूणतीसइमं अज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं–तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति । तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तंजहा–संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थवे ९ वन्दणे १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० पडियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अपडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपुण्णया ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ॥ ७३ ॥

संवेगेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । कम्मं न बन्धइ । तप्पच्चयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव

भन्ते जीवे किं जणयइ। निव्वेदेण दिव्वमाणुसतेरिच्छएसु कामभोगेसु निव्वेय हव्वमागच्छेइ सव्वविसएसु विरज्जइ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चाय करेइ। आरम्भपरिच्चाय करेमाणे ससारमग्ग वोच्छिन्दइ, सिद्धिमग्ग पडिवन्ने य भवइ ॥२॥ धम्मसद्धाए ण भन्ते जीवे कि जणयइ। धम्मसद्धाए ण मायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। आगारधम्म च ण चयइ। अणगारिए ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण छेयणभेयणसजोगाईण वोच्छेय करेइ अव्वाबाह च सुह निव्वत्तेइ ॥ ३ ॥ गुरुसाहम्मिय-सुस्सूसणाए ण विणयपडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य ण जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरि-क्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवगईओ निबन्धइ, सिद्धिं सोग्गइ च विसोहेइ। पसत्थाइ च ण विणयामूलाइ सव्वकज्जाइ साहेइ अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ॥४। आलोयणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। आलोयणाए ण मायानियाणमिच्छा दसणसल्लाण मोक्खमग्गविग्घाण अणतससारबन्धणाण उद्धरण करेइ। उज्जुभाव च जणयइ। उज्जु-भावपडिवन्ने य ण जीवे अमाई इत्थीवेयनपुसगवेय च न बन्धइ। पुव्वबद्ध च ण निज्जरेइ ॥ ५ ॥ निन्दणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। निन्दणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ। पच्छाणुतावेण विर ज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढीपडिवन्ने य ण अणगारे मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ॥६॥ गरहणयाए ण भत जीवे किं जणयइ। गरहणयाए अपुरेक्कार जणयइ। अपुरेक्कारगए ण जीवे अप्प-सत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ,पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थजोगपडिवन्ने य ण अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ७॥सामाइएण भन्ते जीवे कि जणयइ। सामाइएण सावज्जजोगविरइ जणयइ॥८॥चउव्वीस-त्थएण भन्ते जीवे किं जणयइ। च० दसणविसोहिं जणयइ॥९। वन्दणएण भन्ते जीवे किं जणयइ। व०नीयागोय कम्म खवेइ। उच्चागोय कम्म निबन्धइ सोहग्ग च ण अपडिहिय आणाफल निव्वत्तेइ। दाहिणभाव च ण जणयइ ॥१०॥ पडिक्कमणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। प० वयछिद्दाणि पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणि-हिइदिए विहरइ ॥ ११ ॥ काउसग्गेण भन्ते जीवे कि जणयइ। का० तीयपडुप्पन्न पायच्छित्त विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरु व्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुह सुहेण विहरइ ॥ १२ ॥ पच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। प० आसवदाराइ निरुम्भइ। पच्च-क्खाणेण इच्छानिरोह जणयइ। इच्छानिरोह गए य ण जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए वि-हरइ ॥ १३ ॥ थवथुइमगलेण भन्ते जीवे कि जणयइ। थ० नाणदसणचरित्तबोहिलाभ जणयइ। नाणदसणचरित्तबोहिलाभसपन्ने य ण जीवे अन्तकिरिय कप्पविमाणोववत्तिग आराहण आराहेइ ॥ १४ ॥ कालपडिलेहणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। का० नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १५ ॥ पायच्छित्तकरणेण भन्ते जीवे किं जणयइ। पा० पावविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्म च ण पायच्छित्त पडिवज्जमाणे मग्ग च मग्गफल च विसोहेइ, आयार च आयारफल च आराहेइ ॥ १६ ॥ खमावणयाए ण भन्ते जीवे कि जणयइ। ख० पल्हायणभाव जणयइ। पल्हायणभावमु-वगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु-मेत्तीभावमुप्पाएइ। मेत्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥१७॥ सज्झाएण भन्ते जीवे किं जणयइ। स० नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १८ ॥ वायणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ। वा० निज्जर जणयइ सुयस्स य अणासायणाए

वट्टए । सुयसअणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥ पडिपुच्छणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ॥२०॥ परियट्टणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥ अणुप्पेहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालठिईआओ पकरेइ । तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । (बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ) आउयं च णं कम्मं सिया बन्धइ, सिया नो बन्धइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ। अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥ धम्मकहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ध० निज्जरं जणयइ । धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ । पवयणपभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ । २३ ॥ सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । सु० अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ए० चित्तनिरोहं करेइ ॥ २५ ॥ संजमएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सं० अणण्हयत्तं जणयइ ॥ २६ ॥ तवेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ तवेण वोदाणं जणयइ । २७ ॥ वोदाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । वो० अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ २८ ॥ सुहसाएणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सु० अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥ अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥ ३० ॥ विवित्तसयणासणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंठिं निज्जरेइ ॥३१॥ विनियट्टयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ । पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ । तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ ॥ ३२ ॥ संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । सं० आलम्बणाइं खवेइ । निरालम्बणस्स य आयट्ठिया जोगा भवन्ति । सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परलाभं नो आसादेइ, परलाभं नो तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ । परलाभं अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥ ३३ ॥ उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । उ० अपलिमन्थं जणयइ । निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सई ॥३४॥ आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । आ० जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दइ । जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥ कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । क० वीयरागभावं जणयइ । वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥ जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । जो० अजोगत्तं जणयइ अजोगे णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥ ३७ ॥ सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । स० सिद्धा-

सहायपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । स० एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए वि य णं जीवे एगत्तं भावेमाणे अप्पझञ्झे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ॥ ३९ ॥ भत्तपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । भ० अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ॥ ४० ॥ सब्भावपच्चक्खाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ स० अनियट्टिं जणयइ । अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तंजहा-वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ४१ ॥ पडिरूवणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । प० लाघवियं जणयइ । लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ॥ ४२ ॥ वेयावच्चेण भन्ते जीवे किं जणयइ । वे० तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ॥ ४३ ॥ सव्वगुणसपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । स० अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥ ४४ ॥ वीयरागयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । वी० नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिन्दइ, मणुन्नामणुन्नेसु सद्दफरिसरूवरसगन्धेसु चेव विरज्जइ ॥ ४५ ॥ खन्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ख० परीसहे जिणइ ॥ ४६ ॥ मुत्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । मु० अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं अपत्थणिज्जो भवइ ॥ ४७ ॥ अज्जवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥ मद्दवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । म० अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ ॥ ४९ ॥ भावसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ । भा० भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ॥ ५० ॥ करणसच्चेण भन्ते जीवे किं जणयइ । क० करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहा वाई तहा कारी यावि भवइ ॥ ५१ ॥ जोगसच्चेण भन्ते जीवे किं जणयइ । जो० जोगं विसोहेइ ॥ ५२ ॥ मणगुत्तयाए णंभन्ते जीवे किं जणयइ म० जीवे एगग्गं जणयइ । एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥ ५३ ॥ वयगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । व० निव्वियारं जणयइ । निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि विहरइ ॥ ५४ ॥ कायगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । का० संवरं जणयइ । संवरेण कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥ मणसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । म० एगग्गं जणयइ । एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥ ५६ ॥ वयसमाहारणयाए भन्ते जीवे किं जणयइ । व० वयसमाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ । वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ॥ ५७ ॥ कायसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । का० चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ५८ ॥ नाणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ । ना० जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणस्सइ ।

जहा सूईससुत्ता न विणस्सइ तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ, नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमयपरसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ दंसणसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ। दं० भवमिच्छत्तछेयणं करेइ न विज्झायइ। परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥ चरित्तसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ। च० सेलेसीभावं जणयइ। सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ६१ ॥ सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। सो० मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६२ ॥ चक्खिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। च० मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६३ ॥ घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। घा० मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६४ ॥ जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। जि० मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६५ ॥ फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। फा० मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६६ ॥ कोहविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। को० खन्तिं जणयइ, कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६७ ॥ माणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। मा० मद्दवं जणयइ, मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६८ ॥ मायाविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। मा० अज्जवं जणयइ, मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६९ ॥ लोभविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। लो० संतोसं जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ७० ॥ पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ। पि० नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ। अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पञ्चविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अन्तराइयं, एए तिन्नि वि कम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ, ताव ईरियावहियं कम्मं निबन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं। तं पढमसमए बद्धं, बिइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मयाच भवइ ॥ ७१ ॥ अह आउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ वयजोगं निरुंभइ, कायजोगं निरुंभइ, आणपाणुनिरोहं करेइ, ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥ ७२ ॥ तओ ओरालियवेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ ७३ ॥ एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए उवदंसिए ॥ ७४ ॥ त्ति बेमि ॥ इअ सम्मत्तपरक्कमे समत्ते ॥ २९ ॥

॥ अह तवमग्ग तीसइम अज्झयण ॥

जहा उ पावग कम्म, रागदोसम्मज्जिय । खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥
पाणिवहमुसावायाअदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ । राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥
पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइन्दिओ । अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥
एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जिय । खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ ४ ॥
जहा महातलायस्स, सन्निरुद्धे जलागमे । उस्सिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥ ५ ॥
एव तु सजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे । भवकोडीसचिय कम्म, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥ ७ ॥
अणसणमूणोयरिया,भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ। कायकिलेसो सलीणया य बज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥
इत्तरिय मरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे। इत्तरिय सावकंखा, निरवकंखा उ बिइज्जिया ॥ ९ ॥
जो सो इतरियतवो, सो समासेण छव्विहो। सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥ १० ॥
तत्तो य वग्गवग्गो, पचमो छट्ठओ पइण्णतवो। मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इतरिओ ॥ ११ ॥
जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वि वियाहिया। सवियारमवियारा, कायचिट्ठ पई भवे ॥ १२ ॥
अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया । नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि ॥ १३ ॥
ओमोयरण पचहा, समासेण वियाहिय । दव्वओ खेत्तकालेण, भावेण पज्जवेहि य ॥ १४ ॥
जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु जो करे । जहन्नेणेगसित्थाई, एव दव्वेण ऊ भवे ॥ १५ ॥
गामे नगरे तह रायहाणिनिगमे य आगरे पल्ली । खेडे कब्बडदोणमुहपट्टणमडम्बसंबाहे ॥ १६ ॥
आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे य । थलिसेणाखन्धारे, सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥ १७ ॥
वाडेसु व रच्छासु व, घरेसु वा एवमित्तिय खेत्त। कप्पई उ एवमाई, एव खेत्तेण ऊ भवे ॥ १८ ॥
पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्तिपयगवीहिया चेव । सम्बुकावट्टाययगन्तुंपच्चागया छट्ठा ॥ १९ ॥
दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्ह पि उ जत्तिओ भवे कालो। एव चरमाणो खलु कालोमाण मुणेयव्व ॥ २० ॥
अहवा तइयाए पोरिसीए ऊणाइ घासमेसन्तो । चउभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥
इत्थी वा पुरिसो वा, अलकिओ वा नलकिओ वावि। अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥ २२ ॥
अन्नेण विसेसेण, वण्णेण भावमणुमुयन्ते उ । एव चरमाणो खलु, भावोमाण मुणेयव्व ॥ २३ ॥
दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा। एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥ २४ ॥
अट्ठविहगोयरग्ग तु, तहा सत्तेव एसणा । अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥
खीरदहिसप्पिमाई, पणीयं पाणभोयण । परिवज्जण रसाणं तु, भणियं रसविवज्जण ॥ २६ ॥
ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा। उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायकिलेस तमाहियं ॥ २७ ॥
एगन्तमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए । सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासण ॥ २८ ॥
एसो बाहिरगतवो, समासेण वियाहिओ । अब्भिन्तर तव एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो । २९ ॥
पायच्छित्त विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ । झाण च विउस्सग्गो, एसो अब्भिन्तरो तवो ॥ ३० ॥

ालोयणारिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं । जं भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥ ३१ ॥
ब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं । गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥
ायरियमाईए, वेयावच्चम्मि दसविहे । आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ॥ ३३ ॥
ायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा । अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पञ्चहा भवे ॥ ३४ ॥
ट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए । धम्मसुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहावए ॥ ३५ ॥
ायणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे । कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥
ं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी । सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥ ३७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ तवमग्गं समत्तं ॥ ३० ॥

॥ अह चरणविही एगतीसइमं अज्झयणं ॥

रणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं । जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥
गओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं । असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं ॥ २ ॥
ागदोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे । जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ३ ॥
ण्डणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं । जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ४ ॥
िव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे । जे भिक्खू सहई जयई, से न अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥
ेगहाकसायसन्नाणं, झाणाणं च दुयं तहा । जे वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥
एसु इन्दियत्थेसु, समिईसु किरियासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ७ ॥
ेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ८ ॥
ेण्डोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ९ ॥
देसु बम्भगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १० ॥
वासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ११ ॥
किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १२ ॥
ाहासोलसएहिं, तहा असंजमम्मि य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १३ ॥
म्भम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य समाहिए । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १४ ॥
गवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १५ ॥
वीसाइ सूयगडे, रुवाहिएसु सुरेसु अ । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १६ ॥
णवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १७ ॥
णगारगुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १८ ॥
ावसुयपसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ १९ ॥
सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ २० ॥
इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया । खिप्पं सो सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डियो ॥ २१ ॥

॥ अह पमायट्ठाणं बत्तीसइम अज्झयणं ॥

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगन्तहियं हियत्थं ॥ १ ॥
नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥
तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगन्तनिसेवणा य, सुत्तत्थसचिन्तणया धिई य ॥ ३ ॥
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥
न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥
जहा य अण्डप्पभवा बलागा, अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥ ६ ॥
रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
कम्मं च जाइमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥ ७ ॥
दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥
रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तु कामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥
रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवन्ति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥ १० ॥
जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो, न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥
विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं, ओमासणाणं दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥ १२ ॥
जहा बिरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥
न रूवलावण्णविलासहासं, न जंपियइंगियपेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥
अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियज्झाणजुग्गं, हियं सया बम्भवए रयाणं ॥ १५ ॥

कामं तु देवीहि विभूसियाहिं, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा, विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥ १६ ॥
मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥ १७ ॥
एए य संगे समइक्कमित्ता, सुदुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥ १८ ॥
कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥ १९ ॥
जहा य किम्पागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥ २० ॥
जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ २१ ॥
चक्खुस्स चक्खुं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ २२ ॥
रूवस्स चक्खु गहणं वयन्ति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ २३ ॥
रूवेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किञ्चि रूवं अवरज्झई से ॥ २५ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ २६ ॥
रूवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ २७ ॥
रूवाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, वए सम्भोगकाले य अतित्तलाभे ॥ २८ ॥
रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ३० ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ३२ ॥
एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥
रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ३५ ॥
सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति, सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ३६ ॥
सद्देसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे, सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥ ३७ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि सद्दं अवरुज्झई से ॥ ३८ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥
सद्दाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ४० ॥
सद्दाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ४१ ॥
सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ४२ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥
सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ४५ ॥
एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ४६ ॥
सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ४७ ॥
घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ४८ ॥

गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति, घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ४९ ॥
गन्धेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते ॥ ५० ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि गन्धं अवरुज्झई से ॥ ५१ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥
गन्धाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ५३ ॥
गन्धाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ५४ ॥
गन्धे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ५५ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ५६ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ५७ ॥
गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वतई जस्स कएण दुक्खं ॥ ५८ ॥
एमेव गन्धम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ५९ ॥
गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ६१ ॥
रसस्स जिब्भं गहणं वयंति, जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ६२ ॥
रसेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि रसं अवरुज्झई से ॥ ६४ ॥

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६० ॥
रसाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरेहिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ६६ ॥
रसाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ६७ ॥
रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ६८ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रसे अदत्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ६९ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥
रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ७१ ॥
एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ७२ ॥
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ७३ ॥
कायस्स फासं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ७४ ॥
फासस्स कायं गहणं वयन्ति, कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ७५ ॥
फासेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे विवन्ने ॥ ७६ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि फासं अवरुज्झई से ॥ ७७ ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥
फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरूकिलिट्ठे ॥ ७९ ॥
फासाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ८० ॥
फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ८२ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥
फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ८४ ॥
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥
मणस्स भावं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ८७ ॥
भावस्स मणं गहणं वयन्ति, मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ८८ ॥
भावेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गावहिए गजे वा ॥ ८९ ॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि भावं अवरुज्झई से ॥ ९० ॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥
भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥
भावाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ९३ ॥
भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ९४ ॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ९५ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ९७ ॥

पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ९८ ॥
भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणी पलास ॥ ९९ ॥
एविन्दियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउ मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोव पि कयाइ दुक्ख, न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥ १०० ॥
न कामभोगा समय उवेन्ति, न यावि भोगा विगइ उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइ उवेइ ॥ १०१ ॥
कोह च माण च तहेव माय, लोह दुगुच्छ अरइ रइ च ।
हास भय सोगपुमित्थिवेय, नपुसवेय विविहे य भावे ॥ १०२ ॥
आवज्जई एवमणेगरूवे, एवविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥
कप्प न इच्छिज्ज सहायलिच्छू, पच्छाणुतावे न तवप्पभाव ।
एव वियारे अमियप्पयारे, आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥ १०४ ॥
तओ से जायन्ति पओयणाइ, निमिज्जिउ मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा, तप्पच्चय उज्जमए य रागी ॥ १०५ ॥
विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था, सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नय वा, निव्वत्तयन्ती अमणुन्नय वा ॥ १०६ ॥
एव ससंकप्पविकप्पणासु, सजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे असकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥ १०७ ॥
स वीयरागो कयसव्वकिच्चो, खवेइ नाणावरण खणेण ।
तहेव ज दंसणमावरेइ, ज चऽतराय पकरेइ कम्म ॥ १०८ ॥
सव्व तओ जाणइ पासए य, अमोहणे होइ निरन्तराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥ १०९ ॥
सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को, ज बाहई सयय जन्तुमेय ।
दीहामय विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥ ११० ॥
अणाइकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहिओ ज समुविच्च सत्ता, कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥ १११ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ पमायट्ठाण समत्त ॥ ३२ ॥

॥ अह कम्मप्पयडी तेत्तीसइमं अज्झयणं ॥

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहाकमं । जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिवट्टई ॥ १ ॥
नाणस्सावरणिज्जं, दंसणावरणं तहा । वेयणिज्जं तहा मोहं, आउकम्मं तहेव य ॥ २ ॥
नामकम्मं च गोयं च, अन्तरायं तहेव य । एवमेयाइ कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ॥ ३ ॥
नाणावरणं पञ्चविहं, सुयं आभिणिबोहियं । ओहिनाणं च तइयं, मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥
निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा पयलपयला य । तत्तो यथीणगिद्धी उ, पंचमा होइ नायवा ॥ ५ ॥
चक्खुमचक्खूओहिस्स, दंसणे केवले य आवरणे । एवं तु नवविगप्पं, नायवं दंसणावरणं ॥ ६ ॥
वेयणीयंपि य दुविहं, सायमसाहियं च अहियं । सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥ ७ ॥
मोहणिज्जंपि च दुविहं, दंसणे चरणे तहा । दंसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥ ८ ॥
सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य । एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥ ९ ॥
चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तं वियाहियं कसायमोहणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥ १० ॥
सोलसविहभेएण, कम्मं तु कसायजं । सत्तविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं ॥ ११ ॥
नेरइयतिरिक्खाउं, मणुस्साउं तहेव य । देवाउयं चउत्थं तु, आउं कम्मं चउव्विहं ॥ १२ ॥
नामं कम्मं तु दुविहं, सुहमसुहं च आहियं । सुभस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥
गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं नीयं च आहियं । उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं ॥ १४ ॥
दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तहा । पञ्चविहमन्तरायं, समासेण वियाहियं ॥ १५ ॥
एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया । पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥ १६ ॥
सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणन्तगं । गणिठयसत्ताईयं, अन्तो सिद्धाण आहियं ॥ १७ ॥
सवजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं । सव्वेसु वि पएसेसु, सवं सव्वेण बद्धगं ॥ १८ ॥
उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ । उक्कोसिय ठिई होइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९ ॥
आवरणिज्जाण दुण्हंपि, वेयाणिज्जे तहेव य । अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥ २० ॥
उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २१ ॥
तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया । ठिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २२ ॥
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ । नामगोत्ताणं उक्कोसा, अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥
सिद्धाणणन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ । सव्वेसु वि पएसग्गं, सवजीवे अइच्छियं ॥ २४ ॥
तम्हा एएसि कम्माणं, अणुभागा वियाणिया । एएसि संवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥ २५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ कम्मप्पयडी समत्ता ॥ ३३ ॥

॥ अह लेसज्झयण चोत्तीसइम अज्झयण ॥

लेसज्झयण पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कम । छण्हंपि कम्म लेसाण, अणुभावे सुहेण मे ॥ १ ॥
नामाइ वण्णरसगन्धफासपरिणामलक्खणं । ठाण ठिइ गइ चाउ, लेसाण तु सुणेह मे ॥ २ ॥
किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य । सुक्कलेसा य छट्ठा य, नामाइ तु जहक्कम ॥ ३ ॥
जीमूयनिद्धसकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा । खञ्जणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥
नीलासोगसकासा, चासपिच्छसमप्पभा । वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥
अयसीपुप्फसकासा, कोइलच्छदसन्निभा । सुयतुण्डपईवनिभा, काउलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥
हिंगुलधाउसकासा, तरुणाइच्चसन्निभा । सुयतुण्डपईवनिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥
हरियालभेयसकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥
सखककुन्दसङ्कासा, खीरपूरसमप्पभा । रयणहारसकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

जह कडुयतुम्बगरसो, निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो ॥ १० ॥
जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो ॥ ११ ॥
जह परिणअम्बगरसो, तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो ॥ १२ ॥
जह परिणयम्बगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ तेऊए नायव्वो ॥ १३ ॥
वरवारुणीए वारसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरयस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएण ॥ १४ ॥

खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खडसक्करसो वा । एत्तो वि अणतगुणो, रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥ १५ ॥
जह गोमडस्स गधो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स। एत्तो वि अणतगुणो, लेसाण अप्पसत्थाण ॥ १६ ॥
जह सुरहिकुसुमगधो, गधवासाण पिस्समाणाण। एत्तो वि अणतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्ह पि ॥ १७ ॥
जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सागपत्ताण। एत्तो वि अणतगुणो, लेसाण अप्पसत्थाण ॥ १८ ॥
जह बूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाण। एत्तो वि अणतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हपि ॥ १९ ॥
तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा। दुसओ तेयालो वा, लेसाण होइ परिणामो ॥ २० ॥
पचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य। तिव्वारम्भपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥ २१ ॥
निद्धन्धसपरिणामो, निस्ससो अजिइन्दिओ । एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेस तु परिणमे ॥ २२ ॥
इस्सा अमरिस अतवो, अविज्जमाया अहीरिय । गेही पओसे य सढे, पमत्त रसलोलुए ॥ २३ ॥
सायगवेसए य आरम्भाओ अविरओ,खुद्दो साहस्सिओ नरो। एयजोगसमाउत्तो,नीललेस तु परिणमे २४
वके वकसमायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए । पलिउचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥

नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले। विणीयविणए दन्ते, जोगवं उवहाणवं ॥ २७ ॥
पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जभीरू हिएसए। एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥ २८ ॥
पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए। पसन्तचित्ते दन्तप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥ २९ ॥
तहा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए। एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥ ३० ॥
अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए। पसन्तचित्ते दन्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३१ ॥
सरागे वीयरागे वा, उवसन्ते जिइन्दिए। एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥ ३२ ॥
असंखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया। संखाईया लोगा, लेसाण हवन्ति ठाणाइं ॥ ३३ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥ ३४ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होन्ति य सागरा मुहुत्तहिय। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ३९ ॥
एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई वण्णिया होइ। चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिई तु वोच्छामि ॥ ४० ॥
दस वाससहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निया होइ। तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥ ४१ ॥
तिण्णुदही पलिओवमसंखभागो जहन्नेण नीलठिई। दस उदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥ ४२ ॥
दसउदही पलिओवमअसंखभगं जहन्निया होइ। तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसए ॥ ४३ ॥
एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिा होइ। तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥ ४४ ॥
अन्तोमुहुत्तमद्धं, लेसाण जहिं जहिं जाउ। तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥ ४५ ॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ। नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ४६ ॥

एसा तिरियनराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिईउ देवाणं। ४७ ॥
दस वाससहस्सइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ।
पलियमसंखिज्ज इमो, उक्कोसो होइ किण्हाए ॥ ४८ ॥
जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसो ॥ ४९ ॥
जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ५० ॥

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगाणं। भवणवइवाणमन्तरजोइसवेमाणियाणं च ॥ ५१ ॥
पलिओवमं जहन्नं, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिआ। पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ॥ ५२ ॥
दस वाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ। दुन्नुदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥ ५३ ॥

जा तेऊण ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा ॥ ५४ ॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया। जहन्नेण सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्तमब्भहिया ॥ ५५ ॥
किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहंमलेसाओ। एयाहि तिहिवि जीवो, दुग्गइं उववज्जई ॥ ५६ ॥
तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्निवि एयाओ धम्मलेसाओ। एयाहि तिहिवि जीवो, सुग्गइं उववज्जई ॥ ५७ ॥
लेसाहिं सव्वाहि, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु। न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५८ ॥
लेसाहिं सव्वाहिं, चरिमे समयम्मिं परिणयाहिं तु। न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥ ५९ ॥
अन्तमुहुत्तम्मि गए अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव। लेसाहि परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥ ६० ॥
तम्हा एयासि लेसाणं, आणुभावे वियाणिया। अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणि ॥ ६१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ लेसज्झयणं समत्तं ॥ ३४ ॥

॥ अह अणगारज्झयणं णाम पचतीसइमं अज्झयणं ॥

सुणेह मे एगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहि देसियं। जमायरन्तो भिक्खू, दुक्खाणन्त करे भवे ॥ १ ॥
गिहवासं परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी। इमे संगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥ २ ॥
तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबम्भसेवणं। इच्छाकामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥
मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासियं। सकवाडं पण्डुरुल्लोचं, मणसावि न पत्थए ॥ ४ ॥
इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए। दुक्कराइं निवारेउं, कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कओ। पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ॥ ६ ॥
फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए। तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए ॥ ७ ॥
न सयं गिहाइं कुव्विज्जा, णेव अन्नेहिं कारए। गिहकम्मसमारम्भे, भूयाणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥
तसाणं थावराणं च, सुहुमाणं बादराण य। तम्हा गिहसमारम्भं, संजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥
तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य। पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ॥ १० ॥
जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्ठनिस्सिया। हम्मन्ति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥ ११ ॥
विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणिविणासणे। नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ॥ १२ ॥
हिरण्णं जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए। समलेट्ठुकंचणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ॥ १३ ॥
किणन्तो कइओ होइ, विक्किणन्तो य वाणिओ। कयविक्कयम्मि वट्टन्तो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥ १४ ॥
भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा। कयविक्कओ महादोसो, भिक्खावत्ती सुहावहा ॥ १५ ॥
समुयाणं उञ्छमेसिज्जा, जहासुत्तमणिन्दियं। लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं चरे मुणी ॥ १६ ॥
अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादन्ते अमुच्छिए। न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥ १७ ॥
अच्चणं रयणं चेव, वन्दणं पूयणं तहा। इड्ढीसक्कारसम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥ १८ ॥
सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे। वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥ १९ ॥
निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए। जहिऊण माणुसं बोन्दिं, पहू दुक्खे विमुच्चई ॥ २० ॥
निम्ममे निरहंकारे, वीयरागो अणासवो। संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥ २१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ अणगारज्झयणं समत्तं ॥ ३५ ॥

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३१ ॥
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३२ ॥
रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ । गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३३ ॥
रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३४ ॥
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३५ ॥
फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३६ ॥
फासए गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३७ ॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३८ ॥
फासए सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३९ ॥
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ४० ॥
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ४१ ॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ४२ ॥
परिमण्डलसठाणे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४३ ॥
सठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४४ ॥
सठाणओ भवे तसे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४५ ॥
सठाणओ जे चउरसे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४६ ॥
जे आययसठाणे, भइए से वण्णओ । गन्धओ रसओ चेव, भइए से फासओवि य ॥ ४७ ॥
एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया । इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो । ४८ ॥
ससारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया । सिद्धाणेगविहा वुत्ता, त मे कियतओ सुण ॥ ४९ ॥
इत्थी पुरिससिद्धा य, तहेव य नपुसगा । सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥ ५० ॥
उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य । उड्ढ अहे तिरिय च, समुद्दम्मि जलम्मि य ॥ ५१ ॥
दस य नपुसएसु वीस इत्थियासु य । पुरिसेसु य अट्ठसय, समएणेगेण सिज्झई ॥ ५२ ॥
चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य । सलिंगेण अट्ठसय, समएगेण सिज्झई ॥ ५३ ॥
उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगवं दुवे । चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तर सय ॥ ५४ ॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य ।
सय च अट्ठुत्तर तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुव ॥ ॥ ५५ ॥

कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिया । कहिं बोन्दिं, चइत्ताण, कत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५६ ॥
आलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया । इह बोन्दिं चइत्ताण, तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५७ ॥
बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे । ईसिपब्भारनामा, पुढवी छत्तसठिया ॥ ५८ ॥
पणयालसयसहस्सा, जोयणाण तु आयया । तावइय चेव वित्थिण्णा, तिगुणो तस्सेव परिरओ ॥ ५९ ॥
अट्ठजोयणबाहुला, सा मज्झम्मि वियाहिया । परिहायन्ती चरिमन्ते, मच्छियपत्ताउ तणुयरी ॥ ६० ॥

अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण ।

दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥ ९३ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया। साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥ ९४ ॥
पत्तेगसरीराओऽणेगहा ते पकित्तिया। रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥ ९५ ॥
वलया पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तहा। हरियकाया बोधव्वा, पत्तेगाइ वियाहिया ॥ ९६ ॥
साहारणसरीराओऽणेगहा ते पकित्तिया। आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥ ९७ ॥
हरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकन्दली। पलण्डुलसणकन्दे य, कन्दली य कुडुंबए ॥ ९८ ॥
लोहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य। कन्दे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तहा ॥ ९९ ॥
अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य। मुसुण्ढी य हलिद्दा, य णेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥ १०१ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १०२ ॥
दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया पणगाण। वणप्फईण आउं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १०३ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १०४ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥ १०५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १०६ ॥
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया। इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १०७ ॥
तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा। इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १०८ ॥
दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ताणेगहा ते वियाहिया। इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ॥ ११० ॥
उक्का विज्जू य बोधव्वा णेगहा एवमायओ। एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥ १११ ॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा। इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ ११२ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ ११३ ॥
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई तेऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ११४ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ११५ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, तेऊजीवाण अन्तरं ॥ ११६ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ११७ ॥
दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा। पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ११८ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पकित्तिया। उक्कलिया मण्डलिया, घणगुंजा सुद्धवाया य ॥ ११९ ॥
संवट्टगवाया यणेगहा एवमायओ। एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ १२० ॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, एगदेसे य बायरा। इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ १२१ ॥
सन्तइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १२२ ॥
तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे। आउठिई वाऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १२३ ॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १२४ ॥

(६८)

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १२६ ॥

संखंककुंदसंकाउराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया। बेइन्दिय–तेइन्दिय–चउरो पंचिन्दिया चेव ॥ १२७ ॥

जोयणस्स उ बेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १२८ ॥

तत्थ सिद्धा मकिमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइवाहया। वासीमुहा य सिप्पिया, संख संखणगा तहा ॥ १२९ ॥

उस्सेहो जेसिं ज्वल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा। जलूगा जालगा चेव, चन्दणा य तहेव य ॥ १३० ॥

एगत्तेण साईइ बेइन्दिया एएऽणेगहा एवमायओ। लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १३१ ॥

अरूविणो जीवसंतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १३२ ॥

लोगेगदेसे ते वासाइं वारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया। बेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १३३ ॥

संसारत्था उ जेसंखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। बेइन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १३४ ॥

पुढवी आउजीअणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। बेइन्दियजीवाणं, अन्तरं च वियाहियं ॥ १३५ ॥

दुविह पुढवीजीएएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १३६ ॥

वायरा जे उ तेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १३७ ॥

किण्हा नीला कुन्थुपिवीलिउड्डंसा, उक्कलुद्देहिया तहा। तणहारकट्ठहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥ १३८ ॥

कप्पासट्ठिम्मि जायन्ति, दुगा तउसमिंजगा। सदावरी य गुम्मी य, बोधव्वा इन्दगाइया ॥ १३९ ॥

इन्दगोवगमाईयाणेगहा एवमायओ। लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १४० ॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १४१ ॥

एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया। तेइन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १४२ ॥

गोमेज्जए य रुसंखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। तेइन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १४३ ॥

चन्दण गेरुय अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। तेइन्दियजीवाणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १४४ ॥

एए खरपुढवी एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १४५ ॥

सुहुमा सव्वलोगचउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १४६ ॥

संतइं पप्पाईअन्धिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा। भमरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कंकणे तहा ॥ १४७ ॥

बावीससहस्सा कुक्कुडे भिंरीडी य, नन्दावत्ते य विच्छुए। डोले भिंगारी य, विरली अच्छिवेहए ॥ १४८ ॥

असंखकालमुव

अच्छिले माहए अच्छिरोडए, विचित्ते चित्तपत्तए।

अणन्तकालमुह

उहिजलिया जलकारी य, नीया तन्तवयाइया ॥ ॥ १४९ ॥

एएसिं वण्णओइय चउरिन्दिया, एएऽणेगहा एवमायओ। लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥ १५० ॥

दुविहा आऊसंतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १५१ ॥

वायरा जे उ छच्चेव मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया। चउरिन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १५२ ॥

एगविहमणाण संखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। चउरिन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १५३ ॥

सन्तइं पप्पण अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। चउरिन्दियजीवाणं, अन्तरं च वियाहियं ॥ १५४ ॥

सत्तेव सहस्स एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १५५ ॥

असंखकालमुक्कं पंचिन्दिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया। नेरइयतिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया ॥ १५६ ॥

पङ्काभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा। इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥ १५८ ॥
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया। एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १५९ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥ १६० ॥
सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया। पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥ १६१ ॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥ १६२ ॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥ १६३ ॥
दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥ १६४ ॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। पंचमीए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा ॥ १६५ ॥
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥ १६६ ॥
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥ १६७ ॥
जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया। सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥ १६८ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, नेरइयाणं अन्तरं ॥ १६९ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १७० ॥

पंचिन्दियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ ॥ १७१ ॥

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा। नहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १७२ ॥
मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा। सुसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया ॥ १७३ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १७४ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १७५ ॥
एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १७६ ॥
पुव्वकोडिपुहत्तं तु, उक्कोसेण वियाहिया। कायठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ १७७ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, जलयराणं अन्तरं ॥ १७८ ॥
चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे। चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयओ सुण ॥ १७९ ॥
एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डीपयसणप्पया। हयमाइगोणमाइगयमाइसीहमाइणो ॥ १८० ॥
भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे। गोहाई अहिमाई य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥ १८१ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया। एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १८२ ॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १८३ ॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई थलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १८४ ॥
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया। कायठिई थलयराणं, अन्तरं तेसिमं भवे ॥ १८५ ॥
कालमणन्तमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अन्तरं ॥ १८६ ॥

ंतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १८९ ॥
ालिओवमस्स भागो, असंखेज्जइमो भवे। आउठिई खहयरगणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९० ॥
असंखभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया। पुव्वकोडीपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९१ ॥
ठेई खहयराणं, अन्तरे तेसिमे भवे। कालं अणन्तकोसं, मुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं, जहन्नयं ॥ १९२ ॥
एसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १९३ ॥
गुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण। संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ १९४ ॥
ाब्भवक्कन्तिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया। कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरद्दीवया तहा ॥ १९५ ॥
ान्नरस तीसविहा, भेया अट्ठवीसइं। संखा उ कम्मसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥ १९६ ॥
ंमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ। लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥ १९७ ॥
ंतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य। ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १९८ ॥
ालिओवमाउ तिण्णवि, असंखेज्जइमो भवे। आउट्ठिई मणुयणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९९ ॥
ालिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण उ साहिया। पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २०० ॥
ायठिई मणुयाणं, अन्तरं तेसिमं भवे। अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ २०१ ॥
एसिं, वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ २०२ ॥
वा चउविहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण। भोमिज्जवाणमन्तरजोइसवेमाणिया तहा ॥ २०३ ॥
सहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो। पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥ २०४ ॥

असुरा नागसुवण्णा, विज्जू अग्गी वियाहिया।
दीवोदहिदिसा वाया, थणिया भवणवासिणो ॥ ॥ २०५ ॥
पिसायभूया जक्खा य, रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा।
महोरगा य गन्धव्वा, अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥ ॥ २०६ ॥
चन्दा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा।
ठिया विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥ ॥ २०७ ॥

माणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया। कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य ॥ २०८ ॥
प्पोवगा बारसहा, सोहम्मीसाणगा तहा। सणंकुमारमाहिन्दबम्भलोगा य सन्तगा ॥ २०९ ॥
हासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा। आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥ २१० ॥
प्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया। गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥ २११ ॥
ट्ठिमा हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमा मज्झिमा तहा। हेट्ठिमा उवरिमा चेव, मज्झिमा हेट्ठिमा तहा ॥ २१२ ॥

मज्झिमा मज्झिमा चेव, मज्झिमा उवरिमा तहा।
उवरिमा हेट्ठिमा चेव, उवरिमा मज्झिमा तहा ॥ ॥ २१३ ॥

वरिमा उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा। विजया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥ २१४ ॥
वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा। इय वेमाणिया एएऽणेगहा एवमायओ ॥ २१५ ॥
ोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेवि वियाहिया। इत्तो कालविभागं तु, वच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ २१६ ॥

साहीय सागर एक्क, उक्कोसेण ठिई भवे। भोमेज्जाण जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ॥ २१८ ॥
पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। वन्तराण जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ॥ २१९ ॥
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं। पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥ २२० ॥
दो चेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया। सोहम्मम्मि जहन्नेण, एगं च पलिओवमं ॥ २२१ ॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया। ईसाणम्मि जहन्नेण, साहियं पलिओवमं ॥ २२२ ॥
सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे। सणक्कुमारे जहन्नेण, दुन्नि उ सागरोवमा ॥ २२३ ॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे। माहिन्दम्मि जहन्नेण, साहिया दुन्नि सागरा ॥ २२४ ॥
दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। बम्भलोए जहन्नेण, सत्त ऊ सागरोवमा ॥ २२५ ॥
चउदस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। लन्तगम्मि जहन्नेण, दस उ सागरोवमा ॥ २२६ ॥
सत्तरस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। महासुक्के जहन्नेण, चोद्दस सागरोवमा ॥ २२७ ॥
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। सहस्सारम्मि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥ २२८ ॥
सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। आणयम्मि जहन्नेण, अट्ठारस सागरोवमा ॥ २२९ ॥
वीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। पाणयम्मि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥ २३० ॥
सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ॥ २३१ ॥
बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। अच्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥ २३२ ॥
तेवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। पढमम्मि जहन्नेण, बावीसं सागरोवमा ॥ २३३ ॥
चउवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। बिइयम्मि जहन्नेण, तेवीसं सागरोवमा ॥ २३४ ॥
पणवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। तइए जहन्नेण चउवीसं सागरोवमा ॥ २३५ ॥
छवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। चउत्थम्मि जहन्नेण, सागरा पणुवीसई ॥ २३६ ॥
सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। पञ्चमम्मि जहन्नेण, सागरा उ छवीसई ॥ २३७ ॥
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। छट्ठम्मि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई ॥ २३८ ॥
सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे। सत्तमम्मि जहन्नेण, सागरा अट्ठवीसई ॥ २३९ ॥
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। अट्ठमम्मि जहन्नेण, सागरा अउणतीसई ॥ २४० ॥
सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। नवमम्मि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ॥ २४१ ॥
तेत्तीसा सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे। चउसुपि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कतीसई ॥ २४२ ॥
अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीसं सागरोवमा। महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥ २४३ ॥
जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया। सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥ २४४ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥ २४५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ २४६ ॥
संसारत्था य सिद्धा य, इइ जीवा वियाहिया। रूविणो चेवरूवी य, अजीवा दुविहावि य ॥ २४७ ॥
इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य। सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज संजमे मुणी ॥ २४८ ॥
तओ बहूणि वासाणि, सामण्णमणुपालिय। इमेण कम्मजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥ २४९ ॥
बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिया भवे। संवच्छरमज्झिमिया छम्मासा य जहन्निया ॥ २५० ॥

पढमे वासचउक्कम्मि, विगईनिज्जूहणं करे। बिइए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे ॥ २५१ ॥
एगन्तरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे। तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगट्ठं तवं चरे ॥ २५२ ॥
तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे। परिमियं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे ॥ २५३ ॥
कोडी सहियमायामं, कट्टु, संवच्छरे मुणी। मासद्धमासिएणं तु, आहारेण तवं चरे ॥ २५४ ॥

कन्दप्पमाभिओगं च, किव्विसियं मोहमासुरत्तं च।
एयाउ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥ ॥ २५५ ॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा उ हिंसगा। इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ २५६ ॥
सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा। इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥ २५७ ॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणाकण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ ॥ २५८ ॥

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं करेन्ति भावेण। अमला असंकिलिट्ठा, ते होन्ति परित्तसंसारी ॥ २५९ ॥

बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि।
मरिहन्ति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥ ॥ २६० ॥

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही। एएणं कारणेणं, अरिहा आलोयण सोउं ॥ २६१ ॥
कन्दप्पकुक्कुयाइं, तह सीलसहावहसणविगहाइं। विम्हावेन्तोवि परं, कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥ २६२ ॥
मन्ताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजन्ति। साय-रस-इड्ढिहेउं- अभिओगं भावणं कुणइ ॥ २६३ ॥
नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स सङ्घसाहूणं। माई अवण्णवाई, किव्विसियं भावणं कुणइ ॥ २६४ ॥
अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी। एएहि कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ ॥ २६५ ॥

सत्थगहणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो य।
अणायारभण्डसेवा, जम्मणमरणाणि बंधन्ति ॥ ॥ २६६ ॥

इय पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए। छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंवुडे ॥ २६७ ॥

त्ति बेमि ॥ जीवाजीवविभत्ती समत्ता ॥ ३६ ॥

॥ इअ उत्तरज्झयण सुत्तं समत्तं ॥



॥ णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

॥ सिरि-दसवेआलियं-सुत्तं ॥

॥ दुमपुप्फिया पढम अज्झयणं ॥

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो । देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ।
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं । ण य पुप्फं किलामेइ, सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो । विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ।
वयं च वित्तिं लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ । अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ।
महुगा (का) रसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया । नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ।

त्ति बेमि ॥ दुमपुप्फिया पढममज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह सामण्णपुव्वयं दुइअं अज्झयणं ॥

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए । पए पए विसीअंतो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ।
वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य । अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ।
जे य कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठि कुव्वइ । साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ।

समाइ पेहाइ परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
न सा महं नोवि अहं वि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ॥ ४ ।
आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ॥ ५ ।

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं । नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ।
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा । वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ।
अहं च भोगरायस्स तं चऽसि अंधगवण्हिणो । मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ।
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ । वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ।
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं । अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ।
एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा । विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ।

त्ति बेमि ॥ इअ सामण्णपुव्वयं नाम अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

॥ अह खुड्डयायारकहा तइअं अज्झयणं ॥

संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं । तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं ॥ १ ॥
उद्देसियं कीयगडं, नियागमभिहडाणि य । राइभत्ते सिणाणे य, गंधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
संनिही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए । संबाहणा दंतपहोयणा य, संपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
अट्ठावए य नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए । तेगिच्छं पाहणापाए, समारंभं च जोइणो ॥ ४ ॥
सेज्जायरपिंडं च, आसंदीपलियंकए । गिहंतरनिसिज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेआवडियं, जा य आजीववत्तिया । तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥
मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अनिव्वुडे । कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥
सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमए । समुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धूवणे त्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे । अंजणे दंतवणे य, गायब्भंगविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइन्नं, निग्गंथाण महेसिणं । संजमम्मि अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥
पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया । पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा । वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परीसहरिऊदंता, धूअमोहा जिइंदिआ । सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ १३ ॥
दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य । केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झन्ति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडे ॥ ॥ १५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ खुड्डयायारकहा नाम तइयमज्झयणं ॥

॥ अह छज्जीवणियानामं चउत्थं अज्झयणं ॥

सुअं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु साछज्जीवणिया नामज्झयणं समणेण भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ॥ २ ॥ इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ तंजहा—पुढविकाइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, वाउकाइया ४, वणस्सइकाइया ५, तसकाइया ६ । पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं । आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं । वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं । वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थपरिणएणं । वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं तंजहा—अग्गवीया, मूलवीया, पोरवीया, खंधवीया, बीयरुहा, संमुच्छिमा, तणलया, वणस्सइकाइया, सवीया चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं । से जे पुण इमे

अणेगे बहवे तसा पाणा, तजहा–अडया, पोयया, जराउया, रसया, ससेइमा, सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया, जेसिं केसिंचि पाणाण, अभिक्त, पडिक्त, सकुचिय, पसारिय, रुय, भत, तसिय, पलाइय आगइगइविन्नाया, जे अ कीडपयङ्गा, जा य कुथुपिपीलिया, सव्वे बेइदिया, सव्वे तेइदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पचिंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे नेरइया, सव्वे मणुआ, सव्वे देवा, सव्वे पाणा, परमाहम्मिआ, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तमकाओ त्ति पवुच्चइ । इच्चेसिं छण्ह जीवनिकायाण नेव सय दड समारभिज्जा, नेवन्नेहिं दड समारभाविज्जा, दड समारभन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥

पढमे भन्ते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमण । सव्व भन्ते ! पाणाइवाय पच्चक्खामि । से सुहुम वा, बायर वा, तस वा, थावर वा, नेव सय पाणे अइवाइज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायन्तेऽवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । पढमे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण ॥ १ ॥

अहावरे दुच्चे भन्ते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमण । सव्व भन्ते ! मुसावाय पच्चक्खामि । से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सय मुस वइज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुस वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । दुच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण । सव्व भन्ते ! अदिन्नादाण पच्चक्खामि । से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूल वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा, नेव सय अदिन्न गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्न गिण्हाविज्जा, अदिन्न गिण्हन्तें वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । तच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भन्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण । सव्व भन्ते ! पच्चक्खामि । से दिव्वं वा, माणुस वा, तिरिक्खजोणिय वा, नेव सयं मेहुण सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुण सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि । चउत्थे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण ॥ ४ ॥

अहावरे पञ्चमे भन्ते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमण । सव्व भते ! परिग्गह पच्चक्खामि । से

नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि। पञ्चमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भन्ते! वए राइभोअणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! राइभोयणं पच्चक्खामि। से असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा। नेव सयं राइं भुंजिज्जा, नेव राइं भुंजिज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजतेऽवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥६॥ इच्चेयाइं पंचमहव्वयाइं राइभोअणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठियाए उवसंपज्जित्ता णं विहरामि ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण किलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सिलागाए वा, सिलागहत्थेण वा न आलिहिज्जा, न विलिहिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, अन्नं न आलिहाविज्जा, न विलिहाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिंदाविज्जा, अन्नं आलिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टंतं वा, भिंदंतं वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स। भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ १ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा, हरितणुगं वा, सुद्धोदगं वा, उदउल्लं वा वत्थं, ससिणिद्धं वा कायं, ससिणिद्धं वा वत्थं न आमुसिज्जा, न संफुसिज्जा, न आवीलिज्जा, न पवीलिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं न आमुसाविज्जा, न संफुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा, न पवीलाविज्जा, न अक्खोडाविज्जा, न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं आमुसंतं वा, संफुसंतं वा, आवीलंतं वा, पवीलंतं वा, अक्खोडंतं वा, पक्खोडंतं वा, आयावन्तं वा, पयावन्तं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥२॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इंगालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणिं वा, उक्कं वा, न उंजिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा, न उज्जालिज्जा, न पज्जालिज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्नं न उज्जाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिंदाविज्जा, न

उज्जालाविज्जा, न पज्जालाविज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न उज्जन्त वा, पज्जलन्त वा, भिदत वा, उज्जालत वा, पज्जालत वा, निव्वावत वा, न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ३ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, पत्तभगेण वा, साहाए वा, साहाभगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय, बाहिर वा वि पुग्गल न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्न न फुमाविज्जा, न वीआविज्जा, अन्न फुमत वा, वीअत वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ४ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा, बीयपइट्ठेसु वा, रूढेसु वा रूढपइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठेसु वा, हरिएसु हरियपइट्ठेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीइज्जा, न तुअट्टिज्जा, अन्न न गच्छाविज्जा, न चिट्ठाविज्जा, न निसीआविज्जा, न तुअट्टाविज्जा अन्न गच्छत वा, चिट्ठत वा, निसीअत वा, तुयट्टत वा न समणुजामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ५ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा एगओ वा, परिसागओ वा सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीड वा, पयग वा, कुथु वा, पिपीलिय वा, हत्थसि वा, पायसि वा, बाहुसि वा, उरुसि वा, उदरसि वा, सीससि वा, वत्थसि वा, पडिग्गहसि वा, कबलसि वा, पायपुच्छणसि वा, रयहरणसि वा, गुच्छगसि वा, उडगसि वा दडगसि वा, पीढगसि वा, फलगसि वा, सथारगसि वा, अन्नयरसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ सजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिअ एगतमवणिज्जा, नो ण सघायमावज्जिज्जा ॥ ६ ॥

अजय चरमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ १ ॥
अजय चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ २ ॥
अजय आसमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ३ ॥
अजय सयमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ४ ॥
अजय भुजमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ५ ॥
अजय भासमाणो अ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ६ ॥

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमाए कहं सए। कहं भुंजन्तो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ ॥ ७ ॥
जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए। जयं भुंजन्तो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥
सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइ पासओ। पिहिआसवस्स दंतस्स, पावकम्मं न बंधइ ॥ ९ ॥
पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए। अन्नाणी किं काही, किं वा नाही सेयपावगं ॥ १० ॥
सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं। उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥ ११ ॥
जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ। जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥ १२ ॥
जो जीवे वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ। जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं ॥ १३ ॥
जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ। तया गइं बहुविहं, सव्वं जीवाण जाणइ ॥ १४ ॥
जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ। तथा पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ ॥ १५ ॥
जया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ। तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
जया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे। तया चयइ संजोगं, सब्भिन्तरं बाहिरं ॥ १७ ॥
जया चयइ संजोगं, सब्भिंतरं बाहिरं। तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ॥ १८ ॥
जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं। तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥ १९ ॥
जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं। तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ॥ २० ॥
जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं। तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥
जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ। तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥
जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली। तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥ २३ ॥
जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ। तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥
जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ। तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥

सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोअस्स, दुल्लहा सुगई तारिसगस्स ॥ २६ ॥
तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ खन्तिसंजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स, सुलहा सुगई तारिसगस्स ॥ २७ ॥
पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं।
जेसिं पिओ तवो संजमो अ, खंती अ बंभचेरं च ॥ २८ ॥
इच्चेयं छज्जीवणिअं, सम्मदिट्ठी सया जए।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥ २९ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ छज्जीवणिआ णामं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

॥ अह पिंडेसणा णाम पचमज्झयण ॥

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असमतो अमुच्छिओ। इमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥ १
से गामे वा नगरे वा, गोअरग्गगओ मुणी। चरे मदमणुव्विग्गो, अवक्खित्तेण चेअसा ॥ २
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे। वज्जतो बीअहरियाइ, पाणे अदगमट्टिअ ॥ ३
ओवाय विसम खाणु, विज्जल परिवज्जए। सकमेण न गच्छिज्जा, विज्जमाणे परकमे ॥ ४
पवडते व से तत्थ, पक्खलते व सजए। हिंसेज्ज पाणभूयाइ, तसे अदुव थावरे ॥ ५
तम्हा तेण न गच्छिज्जा, सजए सुसमाहिए। सइ अण्णेण मग्गेण, जयमेव परकमे ॥ ६
इगाले छारिय रासिं, तुसरासिं च गोमय। ससरक्खेहिं पाएहिं, सजओ त नइक्कमे ॥ ७
न चरेज्ज वासे वासंते, महियाए पडतिए। महावाए व वायते, तिरीच्छसपाइमेसु वा ॥ ८
न चरेज्ज वेससामते, बभचेरवसाणुए। बभयारिस्स दतस्स, होज्जा तत्थ विसोहिआ ॥ ९
अणायणे चरतस्स, ससग्गीए अभिक्खए। होज्ज वयाण पीला, सामणम्मि अ ससओ ॥ १०
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। वज्जए वेससामन्त, मुणी एगतमस्सिए ॥ ११
साण सूइअ गाविं, दित्त गोण हय गय। सडिब्भ कलह जुद्ध, दूरओ परिवज्जए ॥ १२
अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले। इदिआइ जहाभाग, दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३
दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो अगोचरे। हसन्तो नाभिगच्छेज्जा, कुल उच्चावय सया ॥ १४
आलोअ थिग्गल दार, सधिं दगभवणाणि अ। चरन्तो न विणिज्झाए, सकट्ठाण विवज्जए ॥ १५
रन्नो गिहवईण च, रहस्सारक्खियाण य। सकिलेसकर ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥ १६
पडिकुट्ठ कुलं न पविसे, मामग परिवज्जए। अचियत्त कुल न पविसे, चियत्त पविसे कुल ॥ १७
साणीपावारपिहिअ, अप्पणा नावपगुरे। कवाड नो पणुल्लिज्जा, उग्गहसि अजाइआ ॥ १८
गोअरग्गपविट्ठो अ, वच्चमुत्त न धारए। ओगास फासुअ नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे ॥ १९
णीय दुवार तमस, कुट्ठग परिवज्जए। अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २०
जत्थ पुप्फाइ बीआइ, विप्पइन्नाइ कोट्ठए। अहुणोवलित्त उल्ल, दट्ठूण परिवज्जए ॥ २१
एलग दारग साण, वच्छग वा वि कुट्ठए। उल्लघिआ न पविसे, विउहित्ताण व सजए ॥ २२
असंसत्त पलोइज्जा, नाइदूरावलोअए। उप्फुल्ल न विणिज्झाए, नियट्टिज्ज अयपिरो ॥ २३
अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोअरग्गगओ मुणी। कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिअ भूमिं परकमे ॥ २४
तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागविअक्खणो। सिणाणस्स य वच्चस्स, सलोग परिवज्जए ॥ २५
दगमट्टिअआयाणे, बीआणि हरिआणि अ। परिवज्जतो चिट्ठिज्जा, सव्विंदिअसमाहिए ॥ २६
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहारे पाणभोअण। अकप्पिअ न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअ ॥ २७
आहारन्ती सिआ तत्थ, परिसाडिज्ज भोअण। दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ २८
समद्दमाणी पाणाणि, बीआणि हरिआणि अ। असजमकरिं नच्चा, तारिसिं परिवज्जए ॥ २९
साहट्टु निक्खिवित्ता ण, सच्चित्त घट्टियाणि य। तहेव समणट्ठाए, उदग सपणुल्लिया ॥ ३०

गाहइत्ता चलइत्ता, आहारे पाणभोअणं । दितिअं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३१ ॥
रेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३२ ॥
वं उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टिआओसे । हरिआले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥ ३३ ॥
रुअवन्निअसेढिअ, सोरट्ठिअपिट्ठकुक्कुसकए अ । उक्किट्ठमसंसट्ठे, संसट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥ ३४ ॥
संसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥ ३५ ॥
सट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा । दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३६ ॥
ण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए । दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, छंदं से पडिलेहए ॥ ३७ ॥
ण्हं भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए । दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३८ ॥
गुव्विणीए उवण्णत्थं, विविहं पाणभोअणं । भुंजमाणं विवज्जिज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए ॥ ३९ ॥
सेआ य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी । उट्ठिआ वा निसीइज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥ ४० ॥
ं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४१ ॥
थणगं पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारिअं । तं निक्खिवित्तु रोअंतं, आहारे पाणभोयणं ॥ ४२ ॥
ं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४३ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, कप्पाकप्पम्मि संकियं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४४ ॥
दगवारेण पिहिअं, नीसाए पीढएण वा । लोढेण वा विलेवेण, सिलेसेण वा केणइ ॥ ४५ ॥
तं च उब्भिदिआ दिज्जा, समणट्ठा एव दावए । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४६ ॥
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा । जं जाणिज्जा सुणिज्ज वा, दाणट्ठा पगडं इमं ॥ ४७ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४८ ॥
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा । जं जाणिज्जा सुणिज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥ ४९ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५० ॥
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा । जं जाणिज्जा सुणिज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं ॥ ५१ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५२ ॥
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा । जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं ॥ ५३ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५४ ॥
उद्देसियं कीयगडं, पूइकम्मं च आहडं । अज्झोअरपामिच्चं, मीसजायं विवज्जए ॥ ५५ ॥
उग्गमं से अ पुच्छिज्जा, कस्सट्ठा केण वा कड । सुच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहिज्ज संजए ॥ ५६ ॥
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा । पुप्फेसु हुज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ॥ ५७ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५८ ॥
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा । उदगम्मि हुज्ज निक्खित्तं, उत्तिंगपणगेसु वा ॥ ५९ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दितिअं पडिआइक्खे, नमे कप्पइ-तारिसं ॥ ६० ॥

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा ।
उम्मि (अगणिम्मि) होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिआ दए ॥ ॥ ६१ ॥

त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ६२ ॥
एव उस्सिकिया ओसक्किया, उज्जालिआ पज्जालिआ निव्वाविया ।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया, उव्वत्तिया (उव्वत्तिया) ओवारिया दए ॥ ॥ ६३ ॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ६४ ॥
हुज्ज कट्ठ सिल वावि, इट्टाल वावि एगया । ठविअ सकमट्ठाए, त च हुज्ज चलाचल ॥ ६५ ॥
न तेण भिक्खू गच्छिज्जा, दिट्ठो तत्थ असजमो । गभीर झुसिर चेव, सव्विदिअ समाहिय ॥ ६६ ॥
निस्सेणिं फलग पीढ, उस्सवित्ता ण मारुहे । मच कील च पासाय, समणट्ठा एव दावए ॥ ६७ ॥
दुरूहमाणी पवडिज्जा, (पडिवज्जा) हत्थ पाय व लूसए ।
पुढवीजीवे वि हिंसेज्जा, जे अ तन्निस्सिआ जगे ॥ ॥ ६८ ॥
एआरिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो । तम्हा मालोहड भिक्खा, न पडिगिण्हंति सजया ॥ ६९ ॥
कद मूल पलब वा, आम छिन्न च सन्निर । तुबाग सिंगबेर च, आमग परिवज्जए ॥ ७० ॥
तहेव सत्तुचुन्नाइ, कोलचुन्नाइ आवणे । सक्कुलिं फाणिअ पूअ, अन्न वा वि तहाविह ॥ ७१ ॥
विक्कायमाणं पसढ, रएण परिफासिअ । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ७२ ॥
बहुअट्ठिअ पुग्गल, अणिमिस वा बहुकटय । अत्थिय तिंदुय बिल्लं, उच्छुखड व सिंबलिं ॥ ७३ ॥
अप्पे सिआ भोअणजाए, बहुउज्झिय धम्मिए (य) ।
दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ॥ ७४ ॥
तहेवुच्चावय पाण, अदुवा वारधोअण । ससेइम चाउलोदग, अहुणाधोअ विवज्जए ॥ ७५ ॥
जाजाणेज्जा चिराधोआ, मइए दसणेण वा, पडिपुच्छिऊण सुच्चा वा, ज च निस्सकिय भवे ॥ ७६ ॥
अजीव परिणय नच्चा, पडिगाहिज्ज सजए । अह सकिय भविज्जा, आसाइत्ताण रोअए ॥ ७७ ॥
थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे । मामे अच्चबिल पूअ, नाल तिण्ह विणित्तए ॥ ७८ ॥
त च अच्चबिल पूअ, नाल तिण्हविणित्तए । दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ७९ ॥
त च हुज्जा अकामेण, विमणेण पडिच्छिअ । त अप्पणा न पिबे । नो वि अन्नस्स दावए ॥ ८० ॥
एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिआ । जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥
सिया अ गोअरग्गओ इच्छिज्जा परिभुत्तुअ । कुट्ठग भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण फासुअ ॥ ८२ ॥
अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छिन्नम्मि सवुडे । हत्थग सपमज्जित्ता, तत्थ भुजिज्ज सजए ॥ ८३ ॥
तत्थ से भुजमाणस्स, अट्ठिअ कटओ सिआ । तणकट्ठसक्कर वावि, अन्न वावि तहाविह ॥ ८४ ॥
त उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए । हत्थेण त गहेऊण, एगतमवक्कमे ॥ ८५ ॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्त पडिलेहिआ । जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८६ ॥
सिआ आभिक्खूइच्छिज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुअ । सपिंडपायमागम्म, उडुअ पडिलेहिआ ॥ ८७ ॥
विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी । इरियावहियमायाय, आगओ अ पडिक्कमे ॥ ८८ ॥
आभोइत्ताण नीसेस, अइआर च जहक्कम । गमणागमणे चेव, भत्ते पाणे च सजए ॥ ८९ ॥
उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो, अवक्खित्तेण चेअसा । आलोए गुरुसगासे, ज जहा गहिय भवे ॥ ९० ॥
न सम्ममालोइअ हुज्जा, पुव्विं पच्छा व ज कड । पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसट्ठो चितए इम ॥ ९१ ॥

अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिआ । मुक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥ ९२ ॥
णमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिणसंथवं । सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥ ९३ ॥
वीससंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ । मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥
साहवो तो चिअत्तेणं, निमंतिज्ज जहक्कमं । जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥ ९५ ॥
अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुंजिज्ज एकओ । आलोए भायणे साहू, जयं अपरिसाडिअं ॥ ९६ ॥

तित्तगं च कडुअं च, कसायं अंबिलं च महुरं लवणं वा ।
एयलद्धमन्नत्थपउत्तं, महु घयं व भुंजिज्ज संजए ॥ ॥ ९७ ॥

अरसं विरसं वावि, सूइअं वा असूइअं । उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथुकुम्मासभोअणं ॥ ९८ ॥
उप्पण्णं नाइहीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुअं । मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिअं ॥ ९९ ॥
दुल्लहाओ मुहादाई, मुहाजीवी, वि दुल्लहा । मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइं ॥ १०० ॥

॥ इअ पिंडेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाइ संजए । दुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो अगोचरे । अयावयट्ठा भुच्चाणं, जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पण्णे, भत्तपाणं गवेसए । विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता (ज्जा), काले कालं समायरे ॥ ॥ ४ ॥
अकाले चरिसि भिक्खू, कालं न पडिलेहिसि ।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहासि ॥ ॥ ५ ॥

सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारिअं । अलाभोत्ति न सोइज्जा, तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया । तं उज्जुअं न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोअरग्गपविट्ठो अ, न निसीइज्ज कत्थई । कहं च न पबंधिज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए । अवलंबिआ न चिट्ठिज्जा, गोअरग्गओ मुणी ॥ ९ ॥
समणं माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं । उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १० ॥
तमइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोअरे । एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज संजए ॥ ११ ॥
वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा । अप्पत्तिअं सिआ हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए । उवसंकमिज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १३ ॥
उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं । अन्नं वा पुप्फसचित्तं, तं च संलुंचिआ दए ॥ १४ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥
उप्पलं पउमं वावि, कुमुअं वा मगदंतिअं । अन्नं वा पुप्फसचित्तं, तं च सम्मद्दिआ दए ॥ १६
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं । दिंतिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १७ ॥
सालुअं वा विरालिअं, कुमुअं उप्पलनालियं । मुणालिअं सासवनालिअं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥ १८ ॥
[illegible] वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा । अन्नस्स वा वि हरिअस्स, [illegible] ॥ १९ ॥

तरुणिअ वा छिवाडिं, आमिअ भज्जिय सय। दिंतिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस २०॥
तहा कोलमणुस्सिन्न, वेलुअ कासवनालिअ। तिलपप्पडग नीम, आमग परिवज्जए॥ २१॥
तहेव चाउल पिट्ठ, विअड तत्तनिव्वुड। तिलपिट्ठपूइपिन्नाग, आमग परिवज्जए॥ २२॥
कविट्ठ माउलिंग च, मूलग मूलगत्तिअ, आम असत्थपरिणय मणसा वि न पत्थए॥ २३॥
तहेव फलमथूणि, बीअमथूणि जाणिआ। विहेलग पियाल च, आमग परिवज्जए॥ २४॥
समुआण चरे भिक्खू कुलमुच्चावय सया। नीय कुलमइक्कम्म, ऊसढ नाभिधारए॥ २५॥
अदीणो वित्तिमेसिज्जा, न विसीएज्ज पडिए। अमुच्छिम्मि भोअणम्मि मायण्णे एसणारए॥ २६॥
बहु परघरे अत्थि विविह खाइमसाइम। न तत्थ पडिओ कुप्पे इच्छा दिज्ज परो नवा॥ २७॥
सयणासणवत्थ वा, भत्त पाण च सजए। अदितस्स न कुप्पिज्जा, पच्चक्खे वि अ दीसओ॥ २८॥
इत्थिअ पुरिस वावि, डहर वा महल्लग। वदमाण न जाइज्जा, नो अण फरुस वए॥ २९॥
जे न वदे न से कुप्पे, वदिओ न समुक्कसे। एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ॥ ३०॥
सिआ एगइओ लद्धु लोभेण विणिगूहइ। मामेय दाइय सत, दट्ठूण सयमायए॥ ३१॥
अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, बहु पाव पकुव्वइ। दुत्तोसओ अ से (सो) होइ,निव्वाण च न गच्छइ॥ ३२॥
सिआ एगइओ लद्धु, विविह पाणभोअणं। भद्दग भद्दग भुच्चा, विवन्न विरसमाहरे॥ ३३॥
जाणतु ता इमे समणा, आययट्ठी अय मुणी। सतुट्ठो सेवए पत, लूहवित्ती सुतोसओ॥ ३४॥
पूयणट्ठा जसोकामी, माणसमाणकामए। बहु पसवई पाव, मायासल्ल च कुव्वइ॥ ३५॥
सुर वा मेरग वावि, अन्न वा मज्जग रस। ससक्ख न पिवे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो॥ ३६॥
पियए एगओ तेणो, न मे कोई विआणइ। तस्स पस्सह दोसाइ, नियडिं च सुणेह मे॥ ३७॥
वड्ढई सुडिआ तस्स, मायामोस च भिक्खुणो। अयसो अनिव्वाण, सयय च असाहुआ॥ ३८॥
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई। तारिसो मरणते वि न आराहेइ सवर॥ ३९॥
आयरिए नाराहेइ, समणे आवी तारिसो। गिहत्था वि ण गरिहति, जेण जाणति तारिस॥ ४०॥
एव तु अगुणप्पेही, गुणाण च विवज्जए। तारिसो मरणते वि, ण आराहेइ सवर॥ ४१॥
तव कुव्वइ मेहावी, पणीअ वज्जए रस। मज्जप्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो॥ ४२॥
तस्स पस्सह कल्लाण, अणेगसाहुपूइअ। विउल अत्थसजुत्त, कित्तइस्स सुणेह मे॥ ४३॥
एव तु गुणप्पेही, अगुणाण च विवज्जए (ओ)। तारिसो मरणते वि, आराहेइ सवर॥ ४४॥
आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो। गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥ ४५॥
तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे, अ जे नरे। आयारभावतेणे अ, कुव्वइ देवकिब्बिस॥ ४६॥
लद्धूण वि देवत्त, उववन्नो देवकिब्बिसे। तत्थावि से न याणाइ किं मे किच्चा इम फल॥ ४७॥
तत्तो वि से चइत्ताण, लब्भइ एलमूअग। नरग तिरिक्खजोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा॥ ४८॥
एअ च दोस दट्ठूण, नायपुत्तेण भासिअ। अणुमाय पि मेहावी, मायामोस विवज्जए॥ ४९॥
सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं, सजयाण बुद्धाण सगासे। तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए, तिव्वलज्जगुणव विहरिज्जासि॥५०॥ त्ति बेमि॥ इअ पिंडेसणाए बीओ उद्देसो॥ पचमज्झयण समत्त॥

॥ अह छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं ॥

णदंसणसंपन्नं, संजमे अ तवे रयं। गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
याओ रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिआ। पुच्छंति निहुअप्पाणो, कहं मे आयारगोयरो ॥ २ ॥
सिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूअसुहावहो, सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ विअक्खणो ॥ ३ ॥
दि धम्मत्थकामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे। आयारगोअरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठिअं ॥ ४ ॥
न्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं। विउलट्ठाणभाइस्स, न भूअं न भविस्सइ ॥ ५ ॥
खुड्डगविअत्ताणं, वाहिआणं च जे गुणा। अक्खंडफुडिआ कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥
स अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ। तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथाओ भस्सइ ॥ ७ ॥
यछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंकनिस[सि]ज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ ८ ॥
त्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसिअं। अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥
ावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा। ते जाणमजाणं वा, न हणे णो विघायए ॥ १० ॥
व्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं। तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ ११ ॥
प्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया। हिंसगं न मुसं बूआ, नोवि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥
ुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरिहिओ। अविस्सासो य भूआणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥ १३ ॥
चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं। दंतसोहणमित्तं पि, उग्गहंसि अजाइया ॥ १४ ॥
ं अप्पणा न गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं। अन्नं वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥ १५ ॥
अबंभचरिअं घोरं, पमायं दुरहिट्ठिअं। नायरंति मुणी लोए, भेआयणवज्जिणो ॥ १६ ॥
मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं। तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १७ ॥
विडमुब्भेइमं लोणं, तिल्लं सप्पिं फाणिअं। न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥
लोहस्सेसणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि। जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ॥ १९ ॥
जं पि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं। तं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति अ ॥ २० ॥
न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा। मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २१ ॥
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिग्गहे अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, नायरंति ममाइयं ॥ २२ ॥
अहो निच्चं तवो कम्मं, सव्वबुद्धेहिं वन्निअं। जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोअणं ॥ २३ ॥
संति मे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा। जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणिअं चरे ॥ २४ ॥
उदउल्लं बीअसंसत्तं, पाणा निवडिया महिं। दिआ ताइं विवज्जिज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ॥ २५ ॥
एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं। सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोअणं ॥ २६ ॥
पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ २७ ॥
पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ २८ ॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं। पुढविकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ २९ ॥

आउकाय विहिंसंतो, हिंसई तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ३१ ॥
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। आउकायसमारंभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३२ ॥
जायतेअं न इच्छंति पावगं जलइत्तए। तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासय ॥ ३३ ॥
पाईणं पडिणं वावि, उड्ढं अणुदिसामवि। अहे दाहिणिओ वा वि दहे उत्तरओ वि अ ॥ ३४ ॥
भूआणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ। तं पईवपयावट्ठा, संजया किंचि नारभे ॥ ३५ ॥
तम्हा एयवियाणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। तेउकायसमारंभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३६ ॥
अणिलस्स समारंभ, बुद्धा मन्नंति तारिस। सावज्जबहुलं चेअं, नेअं ताईहिं सेविअं ॥ ३७ ॥
तालिअंटेण पत्तेण, साहाविहुअणेण वा। न ते वीइउमिच्छंति, वीआवेऊण वा पर ॥ ३८ ॥
जं पि वत्थं व (च) पायं वा, कंबलं पायपुंछणं न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति अ ॥ ३९ ॥
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। वाउकायसमारंभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४० ॥
वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ ४१ ॥
वणस्सइ विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४२ ॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। वणस्सइ समारंभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४३ ॥
तसकाय न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा। तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥ ४४ ॥
तसकाय विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए। तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४५ ॥
तम्हा एअ विआणित्ता, दोस दुग्गइवड्ढण। तसकायसमारंभ, जाज्जीवाए [इ] वज्जए ॥ ४६ ॥
जाइं चत्तारि भुज्जाइं, इसिणा हारमाइणि। ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥ ४७ ॥
पिंड सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य। अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ॥ ४८ ॥
जे नियाग ममायंति, कीअमुद्देसिआहडं। वहं ते समणुजाणंति, इअ उ (वु)त्त महेसिणा ॥ ४९ ॥
तम्हा असणपाणाइं, कीयमुद्देसियाहडं। वज्जयंति ठिअप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो ॥ ५० ॥
कंसेसु कंसपाएसु कुंडमोएसु वा पुणो। भुंजंतो असणपाणाइं, आयारा परिभस्सइ ॥ ५१ ॥
सीओदग समारंभे, मत्तधोअणछड्डणे जाइं छनंति भूआइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥ ५२ ॥
पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिआ तत्थ न कप्पइ। एअमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहिभायणे ॥ ५३ ॥
आसंदीपलिअंकेसु, मंचमासालएसु वा। अणायरिअमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥ ५४ ॥
नासंदीपलिअंकेसु, न निसिज्जा न पीढए। निग्गंथा पडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥ ५५ ॥
गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा। आसंदी पलिअंको अ, एयमट्ठं विवज्जिआ ॥ ५६ ॥
गोअरग्गपविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ। इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहिअं ॥ ५७ ॥
विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो। वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥
अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वा वि संकणं। कुसीलवड्ढणं, ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥ ५९ ॥
तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ। जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥
वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए। वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥ ६१ ॥
संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु अ। जे अ भिक्खू सिणायंतो, विअडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥

सिणाणं अदुवा कक्कं, लुद्धं पउमगाणि अ। गायस्सुवट्टणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ॥ ६४ ॥
नगिणस्स वावि मुंडस्स, दीहरोमनहंसिणो। मेहुणाओ उवसंतस्स, किं विभूसाय कारिअं ॥ ६५ ॥
विभूसावत्तिअं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥
विभूसावत्तिअं चेअं, बुद्धा मन्नंति तारिसं। सावज्जं बहुलं चेअं, नेयं ताईहि सेविअं ॥ ६७ ॥

खवंति अप्पाणममोहदंसिणो, तवे रया संजम अज्जवे गुणे।
धुणंति पावाइ, पुरेकडाइं नवाइं पावाइं न ते करंति ॥ ॥ ६८ ॥
सओवसंता अममा अकिंचणा, सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा। सिद्धिं विमाणाइ उवेंति (वयंति) ताइणो ॥ ६९ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ अह सुवक्कसुद्धी णाम सत्तमं अज्झयणं ॥

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं। दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा अ सच्चा अवत्तवा, सच्चामोसा अ जा मुसा। जा अ बुद्धेहिं नाइन्ना, न तं भासिज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं। समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासिज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं। स भासं सच्चमोसं च पि तं (पि) धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासओ नरो। तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥

तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥ ॥ ६ ॥

एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिआ। संपयाइअमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
अईअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए। जमट्ठं तु न जाणिज्जा, एवमेअं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए। जत्थ संका भवे तं तु, एवमेअं तु नो वए ॥ ९ ॥
अईअम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पणमणागए। निस्संकिअं भवे जं तु, एवमेअं तु निद्दिसे ॥ १० ॥
तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी। सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥ ११ ॥
तहेव काणं काण त्ति, पंडगं पंडग त्ति वा। वाहिअं वा वि रोगि त्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ॥ १२ ॥
एएणन्नेण अट्ठेणं, परो जेणुवहम्मइ। आयारभावदोसन्नू, न तं भासिज्ज पण्णवं ॥ १३ ॥
तहेव होले गोलि त्ति, साणे वा वसुलि त्ति अ। दमए दुहए वा वि, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ १४ ॥

अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउस्सिअ त्ति अ।
पिउस्सिए भायणिज्ज त्ति, धूए णत्तुणिअ त्ति अ ॥ ॥ १५ ॥
हले हलित्ति अन्नि त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुलि त्ति, इत्थिअं नेवमालवे ॥ ॥ १६ ॥

अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति अ। माउलो भाइणिज्ज त्ति, पुत्ते णत्तुणिअ त्ति अ ॥ १८ ॥
हे भो! हलित्ति अन्नित्ति, भट्टा सामि अ गोमिअ। होला गोल वसुलित्ति, पुरिस नेवमालवे ॥ १९ ॥
नामधिज्जेण ण बूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो। जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ॥ २० ॥
पचिंदिआण पाणाण, एस इत्थी अय पुम। जाव ण नो विजाणिज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥
तहेव मणुस पसु, पक्खि वा वि सरीसिव। थूले पमेइले वज्झे, पाइमि त्ति अ नो वए ॥ २२ ॥
परिवुड्ढे त्ति ण बूआ, बूआ उवचिए त्ति अ। सजाए पीणिए वावि महाकाय त्ति आलवे ॥ २३ ॥
तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति अ। वाहिमा रहजोगि त्ति, नेव भासिज्ज पण्णव ॥ २४ ॥
जुव गवि त्ति ण बूआ, धेणु रसदय त्ति अ। रहस्से महल्लए वा वि, वए सवहणि त्ति अ ॥ २५ ॥
तहेव गतुमुज्जाण, पव्वयाणि वणाणि अ। रुक्खा महल्ल पेहाए, नेव भासिज्ज पण्णव ॥ २६ ॥
अल पासायखभाण, तोरणाणि गिहाणि अ। फलिहग्गलनावाण, अल उदगदोणिण ॥ २७ ॥
पीढए चगबेरे अ, नगले मइय सिआ। जतलट्ठी व नाभी वा, गडिआ व अल सिआ ॥ २८ ॥
आसण सयण जाण, हुज्जा वा किचुवस्सए। भूओवघाइणिं भास, नेव भासिज्ज पण्णव ॥ २९ ॥
तहेव गतुमुज्जाण, पव्वयाणि वणाणि अ। रुक्खा महल्ल पेहाए, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ३० ॥
जाइमता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया। पयायसाला विडिमा, वए दरिसणि त्ति अ ॥ ३१ ॥
तहा फलाइ पक्काइ, पायखज्जाइ नो वए। वेलोइयाइ टालाइ, वेहिमाइ त्ति नो वए ॥ ३२ ॥
असथडा इमे अबा, बहुनिव्वडिमा फला। वइज्ज बहुसभूआ, भूअरूव त्ति वा पुणो ॥ ३३ ॥
तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलिआओ छवीइ अ। लाइमा भज्जिमाउ त्ति, पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥ ३४ ॥
रूढा बहुसभूआ, थिरा ओसढा वि अ। गब्भिआओ पसूआओ, ससाराउ त्ति आलवे ॥ ३५ ॥

तहेव सखडिं नच्चा, किच्च कज्ज ति नो वए।
तेणग वावि वज्झि त्ति, सुतित्थि त्ति अ आवगा ॥ ॥ ३६ ॥
सखडिं सखडिं बूआ, पणिअट्ठ त्ति तेणग।
बहुसमानि तित्थाणि, आवगाण विआगरे ॥ ॥ ३७ ॥
तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्ज त्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाउ त्ति, पाणिपिज्ज त्ति नो वए ॥ ॥ ३८ ॥

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा। बहुवित्थडोदगा आवि, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ३९ ॥
तहेव सावज्ज जोग, परस्सट्ठा अ निट्ठिअ। कीरमाण ति वा नच्चा, सावज्ज न लवे मुणी ॥ ४० ॥
सुकडि त्ति सुपक्कि त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे। सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्ज वज्जए मुणी ॥ ४१ ॥

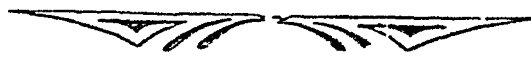
पयत्तपक्कि त्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्न त्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउअ, पहारगाढि त्ति व गाढमालवे ॥ ॥ ४२ ॥

सव्वुक्कस परग्घ वा, अउल नत्थि एरिस। अविक्किअमवत्तव्व अचिअत्त चेव नो वए ॥ ४३ ॥
सव्वमेअ वइस्सामि, सव्वमेअ ति नो वए। अणुवीइ सव्व सव्वत्थ, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ४४ ॥
सुक्कीअ वा सुविक्कीअ अकिज्ज किज्जमेव वा। इम गिण्ह इम मुच, पणिण नो विआगरे ॥ ४५ ॥

दुअप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा। पडिअट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं विआगरे ॥ ४६ ॥
तहेवासंजयं धीरो, आस एहि करेहि वा। सयंचिट्ठ वयाहित्ति, नेवं भासिज्ज पण्णवं ॥ ४७ ॥
बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो। न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥ ४८ ॥
नाणदंसणसंपन्नं, संजमे अ तवे रयं। एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे ॥ ४९ ॥
देवाणं मणुआणं च, तिरिआणं च वुग्गहे। अमुगाणं जओ होउ, मा वा होउत्ति नो वए ॥ ५० ॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा।
कया णु हुज्ज एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५१ ॥
तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देवदेव त्ति गिरं वइज्जा।
समुच्छिए उन्नए वा पओए, वइज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥ ५२ ॥
अंतलिक्ख त्ति णं बूआ, गुज्झाणुचरिअ त्ति अ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतं ति आलवे ॥ ५३ ॥
तहे सावज्जणुमोअणी गिरा, जा य परोवघायणी।
से कोह लोह भय हास माणवो, न हासमाणो विगिरं वइज्जा ॥ ५४ ॥
सुवक्कसुद्धिं समुपेहिआ मुणी, गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मिअं अदुट्ठं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥ ५५ ॥
भासाइ दोसे अ गुणे अ जाणिआ, तीसेअ दुट्ठे परिवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए, वइज्ज बुद्धे हिअमाणुलोअं ॥ ५६ ॥
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए, चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुत्तमलं पुरेकडं, आराहए लोगमिणं तहा परं ॥ ५७ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ सुवक्कसुद्धीनामं सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥



॥ अह आयारपणिही अट्ठममज्झयण ॥

आयारपणिहिं लद्धु, जहा कायव्व भिक्खुणा । त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढविदगअगणिमारुअ, तणरुक्खस्स बीयगा । तसा अ पाणा जीव त्ति, इइ वुत्त महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण, निच्च होअव्वय सिआ । मणसा कायवक्केण, एव हवइ सजए ॥ ३ ॥
पुढविं भित्तिं सिल लेलु, नेव भिंदे न सलिहे । तिविहेण करणजोएण, सजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीं न निसीए, ससरक्खम्मि अ आसणे । पमज्जित्तु निसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गह ॥ ५ ॥
सीओदग न सेविज्जा, सिलावुट्ठ हिमाणि अ । उसिणोदग तत्तफासुअ, पडिगाहिज्ज सजए ॥ ६ ॥
उदउल्ल अप्पणो काय, नेव पुछे न सलिहे । समुप्पेह तहाभूअ, नो ण सघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इगाल अगणिं अच्चिं, अलाय वा सजोइअ । न उजिज्जा न घट्टिज्जा, नो ण निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
तालिअटेण पत्तेण, साहाए विहुयणेण वा । न वीइज्ज अप्पणो काय, बाहिर वा वि पुग्गल ॥ ९ ॥
तणरुक्ख न छिंदिज्जा, फल मूल च कस्सइ । आमग विविह बीअ, मणसा वि ण पत्थए ॥ १० ॥
गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा । उदगम्मि तहा निच्च, उत्तिंगपणगेसु वा ॥ ११ ॥
तसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा । उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविह जग ॥ १२ ॥
अट्ठ सुहुमाइ पेहाए, जाइ जाणित्तु सजए । दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥ १३ ॥
कयराइ अट्ठ सुहुमाइ, जाइ पुच्छिज्ज सजए । इमाइ ताइ मेहावी, आइक्खिज्ज विअक्खणो ॥ १४ ॥
सिणेह पुप्फसुहुम च, पाणुत्तिंग तहेव य । पणग बीअ हरिअ च, अंडसुहुम च अट्ठम ॥ १५ ॥
एवमेआणि जाणित्ता, सव्वभावेण सजए । अप्पमत्तो जए निच्च, सव्विंदिअसमाहिए ॥ १६ ॥
धुव च पडिलेहिज्जा, जोगसा पायकवल । सिज्जमुच्चारभूमिं च, सथार अदुवासण ॥ १७ ॥
उच्चार पासवण, खेल सिंघाणजल्लिअ । फासुअ पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज सजए ॥ १८ ॥
पविसित्तु परागार, पाणट्ठा भोअणस्स वा । जय चिट्ठे मिअ भासे, न य रुवेसु मण करे ॥ १९ ॥
बहु सुणेइ कण्णेहिं, बहु अच्छीहिं पिच्छइ । न य दिट्ठ सुअ सव्व भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥ २० ॥
सुअ वा जइ वा दिट्ठ, न लविज्जोवघाइअ । न य केण उवाएण, गिहिजोग समायरे ॥ २१ ॥
निट्ठाण रसनीज्जूढ, भदग पावग ति वा । पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा, लाभालाभ न निद्दिसे ॥ २२ ॥
न य भोअणम्मि गिद्धो, चरे उछ अयपिरो । अफासुअ न भुजीज्जा, कीअमुद्देसिआहड ॥ २३ ॥
सनिहिं च न कुव्विज्जा, अणुमाय पि सजए । मुहाजीवी असबद्धे, हविज्ज जगनिस्सिए ॥ २४ ॥
लूहवित्ति सुसतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिआ । आसुरत्त न गच्छिज्जा, सुचा ण जिणसासण ॥ २५ ॥
कण्णसुक्खेहिं सद्देहिं, प्रेम नाभिनिवेसए । दारुण कक्कस फास, काएण अहिआसए ॥ २६ ॥
खुह पिवास दुस्सिज्ज, सीउण्ह अरइ भय । अहिआसे अव्वहिओ देहदुक्ख महाफल ॥ २७ ॥
अत्थ गयम्मि आइच्चे, पुरत्था अ अणुग्गए । आहारमाइअ सव्व, मणसा वि ण पत्थए ॥ २८ ॥
अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी, मिआसणे । हविज्ज उअरे दते, थोव लद्धु न खिसए ॥ २९ ॥
न बाहिर परिभवे अत्ताण न समुक्कसे । सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए ॥ ३० ॥

अट्ठं जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मिअं पयं। संवरे खिप्पमप्पाणं, बीअं तं न समायरे ॥ ३१ ॥
वाअणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे। सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ॥ ३२ ॥
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरीअस्स महप्पणो। तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥
अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं विआणिआ। विणिअट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमिअमप्पणो ॥ ३४ ॥
बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो। खित्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए ॥ ३५ ॥
जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ। जाविंदिआ न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥ ३६ ॥
कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं। वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हिअमप्पणो ॥ ३७ ॥
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो। माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो ॥ ३८ ॥
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे। मायमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥

कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ, माया अ लोभो अ पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइ पुणब्भवस्स ॥ ॥ ४० ॥
रायणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावइज्जा।
कुम्मुव्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमिज्जा तवसंजमम्मि ॥ ॥ ४१ ॥

निद्दं च न बहु मन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए। मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया ॥ ४२ ॥
जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अनलसो धुवं। जुत्तो अ समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥ ४३ ॥
इहलोगपारत्तहिअं, जेणं गच्छइ सुग्गइं। बहुस्सुअं पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छअं ॥ ४४ ॥
हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए। अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ। न य ऊरुं समासिज्ज, चिट्ठिज्जा गुरुणंतिए ॥ ४६ ॥
अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा। पिट्ठिमंसं न खाइज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥ ४७ ॥

अप्पत्तिअं जेण सिआ, आसु कुप्पिज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहिअगामिणिं ॥ ॥ ४८ ॥

दिट्ठं मिअं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जिअं। अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥ ४९ ॥
आयारपन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं। वायविक्खलिअं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं। गिहिणो तं न आइक्खे, भूआहिगरणं पयं ॥ ५१ ॥
अन्नट्ठं पगडं लयणं, भइज्जा सयणासणं। उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थीपसुविवज्जिअं ॥ ५२ ॥
विवित्ता अ भवे सिज्जा, नारीणं न लवे कहं। गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥ ५३ ॥
जहा कुक्कुडपोअस्स, निच्चं कुललओ भयं। एवं खु बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं ॥ ५४ ॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सअलंकिअं। भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५५ ॥
हत्थपायपडिच्छिन्नं, कन्ननासविगप्पिअं। अवि वाससयं नारिं, बंभयारि विवज्जए ॥ ५६ ॥
विभूसा इत्थिसंसग्गी, पणीअं रसभोअणं। नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ ५७ ॥
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लविअप्पेहिअं। इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥ ५८ ॥

पोग्गलाण परिणाम, तेसिं नच्चा जहा तहा । विणीअतिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥
जाइ सद्धाइ निक्खतो, परिआयट्ठाणमुत्तम । तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरियसमए ॥ ६१ ॥
तव चिम संजमजोगय च, सज्झायजोग च सया अहिट्ठ ए ।
सूरे व सेणाइ सम्मत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अल परेसिं ॥ ६२ ॥
सज्झायसुज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई ज सि मल पुरेकड, समीरिअ रुप्पमल व जोइणा ॥ ६३ ॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिणब्भपुडावगमे व चंदिम ॥ ६४ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ आयारपणिही णाम अट्ठममज्झयण ममत्त ॥ ८ ॥

॥ अह विणयसमाही णाम नवममज्झयण ॥

थभा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विणय न सिक्खे ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फल व कीअस्स वहाय होइ ॥ १ ॥
जे आवि मंदि त्ति गुरु विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलति मिच्छ पडिवज्जमाणा, करति आसायण ते गुरूण ॥ २ ॥
पगईए मदा वि भवति एगे, डहरा वि अ जे सुअबुद्धोववेआ ।
आयारमता गुणसुट्ठिअप्पा, जे हीलिआ सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे आवि नाग डहर ति नच्चा, आसायए से अहिआय होइ ।
एवायरिअ पि हु हीलयतो, निअच्छई जाइपह खु मदो (ढ) ॥ ४ ॥
आसीविसो वावि पर सुरुट्ठो, कि जीवनासाउ पर न कुज्जा ।
आयरिआया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो ॥ ५ ॥
जो पावग जलिअमवक्कमिज्जा, आसीविस वा वि हु कोवइज्जा ।
जो वा विस खायइ जीविअट्ठी, एसोवमासायणया गुरूण ॥ ६ ॥
सिआ हु से पावय नो डहिज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिआ विस हालहल न मारे, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
जो पव्वय सिरसा भित्तुमिच्छे, सुत्त व सीह पडिबोहइज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहार, एसोवमासायणया गुरूण ॥ ८ ॥
सिआ हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिआ हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिआ न भिंदिज्ज व सत्तिअग्ग, न आवि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहिआसायण नत्थि मुक्खो ।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा ॥ १० ॥
जहाहिअग्गी जलण नमसे न ।

एवायरिअं उवचिट्ठइज्जा, अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥
जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ, कायग्गिरा भो मणसा अ निच्चं ॥ १२ ॥
लज्जा दया संजमबंभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति, तेहिं गुरू सययं पूजयामि ॥ १३ ॥
जहा निसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुअसीलबुद्धिए, विरायई सुरमज्झे व इंदो ॥ १४ ॥
जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो, नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥ १५ ॥
महागरा आयरिआ महेसी, समाहिजोगे सुअसीलबुद्धिए ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं, आराहए तोसइ धम्मकामी ॥ १६ ॥
सुच्चा ण मेहावी सुभासिआइं, सुस्सूसए आयरिअप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तरं त्ति बेमि ॥ १७ ॥

॥ इअ विणयसमाहिज्झयणे पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥

मूलाउ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाउ पच्छा समुविंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सि (से)पुप्फं च फलं रसो अ ॥ ॥ १ ॥
ाम्मस्स विणओ, मूलं परमो अ से मुक्खो, जेण कित्तिं सुअं सिद्धं, नीसेसं चाभिगच्छइ ॥ २ ॥
चंडे मिए थद्धे, दुवाई नियडी सढे । वुज्झइ से अविणीअप्पा, कट्ठं सोअगयं जहा ॥ ३ ॥
यम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पइ नरो । दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहिए ॥ ४ ॥
अविणीअप्पा, उववज्झा हया गया । दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिआ ॥ ५ ॥
सुविणीअप्पा, उववज्झा हया गया । दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
अविणीअप्पा, लोगम्मि नरनारिओ । दीसंति दुहमेहंता, छाया ते विगलिंदिआ ॥ ७ ॥
त्थपरिज्जुन्ना, असब्भवयणेहि अ । कलुणा विवन्नछंदा, खुप्पिवासपरिग्गया ॥ ८ ॥
सुविणीअप्पा, लोगंसि नरनारिओ । दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
अविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा । दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिआ । १० ॥
सुविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा । दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
ायरिअउवज्झायाणं, सुस्सूसावयणं करे । तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता इव पायवा ॥ १२ ॥
ाणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणिआणि अ । गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥
बंधं वहं घोरं, परिआवं च दारुणं । सिक्खमाणा निअच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिआ ॥ १४ ॥
वि तं गुरु पूअंति, तस्स सिप्पस्स कारणा । सक्कारंति नमंसंति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥ १५ ॥
इ पुण जे सुअग्गाही, अणंतहिअकामए । आयरिआ जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥ १६ ॥

नीअ सिज्ज गई ठाण, नीअ च आसणाणि अ। नीअ च पाए वदिज्जा, नीअ कुज्जा अ अजलिं ॥ १७ ॥
सघट्टइत्ता काएण, तहा उवहिणामवि। खमेह अवराह मे, वइज्ज न पुणु त्ति अ ॥ १८ ॥
दुग्गओ वा पओएण, चोइओ वहइ रह। एव दुबुद्धि किच्चाण, वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ ॥ १९ ॥
आलवते लवते वा, न निसिज्जाए पडिस्सुणे। मुत्तूण आसण धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥ २० ॥
काल छदोवयार च, पडिलेहित्ताण हेउहिं। तेण तेण उवाएण, त त सपडिवायए ॥ २१ ॥
विवत्ति अविणीअस्स, संपत्ती विणिअस्स य। जस्सेय दुहओ नाय, सिक्ख से अभिगच्छइ ॥ २२ ॥

जे आवि चडे मइइड्ढिगारवे, पिसुणे नरे साहसहीणपेसणे।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए, असविभागी न हु तस्स मुक्खो ॥ ॥ २३ ॥
निद्देसवित्ती पुण जे गुरूण, सुअत्थधम्मा विणयम्मि कोविआ।
तरित्तु ते ओघमिण दुरुत्तर, खवित्तु कम्म गइमुत्तम गया ॥ ॥ २४ ॥

त्ति बेमि इअ विणयसमाहिणामज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो ॥

आयरिअ(अ) अग्गिमिवाहिअग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा।
आलोइअ इगिअमेव नच्चा, जो छदमाराहयई स पुज्जो ॥ १ ॥
आयारमट्ठा विणय पउजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्क।
जहोवइट्ठ अभिकखमाणो, गुरु च नासायइ जे स पुज्जो ॥ २ ॥
रायणिएसु विणय पउजे डहरा वि अ जे परिआयजिट्ठा।
नीअत्तणे वट्टइ सच्चवई, ओवायव वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥
अन्नायउछ चरई विसुद्ध, जवणट्ठया समुआण च निच्च।
अलद्धुअ नो परिदेवइज्जा, लद्धु न विकत्थई स पुज्जो ॥ ४ ॥
सथारसिज्जासणभत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभे वि सते।
जो एवमप्पाणभितोसइज्जा, सतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥
सक्का सहेउ आसाइ कटया, अओमया उच्छहया नरेण।
अणासए जो उ सहिज्ज कटए, वईमए कन्नसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
मुहुत्तदुक्खा उ हवति कटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥
समावयता वयणाभिघाया, कन्नगया दुम्मणिअ जणति।
धम्मु त्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥
अवण्णवाय च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीअ च भास।
ओहारणिं अप्पिअकारणिं च, भास न भासिज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥
अलोलुए अक्कुहए अमाई, अपिसुणे आवि अदीणवित्ती।
नो भावए नो वि अ भाविअप्पा, अकोउहल्ले अ सया स पुज्जो ॥ १० ॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुंचऽसाहू ।
विआणिआ अप्पगमप्पएणं, जो रागदोसेहि समो स पुज्जो ॥ ११ ॥
तहेव डहरं च महल्लगं वा, इत्थी पुमं पव्वइअं गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि अ खिंसइज्जा थंभं च कोहं च चए पुज्जो ॥ १२ ॥
जे माणिआ सययं माणयंति, जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥ १३ ॥
तेसिं गुरूणं गुणसायराणं, सुच्चाण मेहावि सुभासिआइं ।
चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो, चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥ १४ ॥
गुरुमिह सययं पडिगरिअ मुणी, जिणमयनिउणे अभिगमकुसले ।
धुणिअ रयमलं पुरेकडं, भासुरमउलं गइं वइ (गय) ॥ १५ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ विणयसमाहीए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

सुअं मे आउसं-तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिठाणा पन्नत्ता । कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता। इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता । तंजहा-विणयसमाही, सुअसमाही, तवसमाही, आयारसमाही । "विणए सुए अ तवे, आयारे निच्च पंडिआ । अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिआ" चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ । तंजहा-अणुसासिज्जंतो, सुस्सूसइ । सम्मं पडिवज्जइ। वयमाराहइ। न य भवइ अत्तसंपग्गहिए। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥ "पेहेइ हिआणुसासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठिए । न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाहिआययट्ठिए" ॥ २ ॥ चउव्विहा खलु सुअसमाही भवइ । तंजहा-सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ । एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ । अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइअव्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ। भवइ अ इत्थ सिलोगो॥ "नाणमेगग्गचित्तो अ, ठिओ अ ठावइ परं । सुआणि अ अहिज्जित्ता, रओ सुअसमाहिए" ॥ ३ ॥ चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ । तंजहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो कित्तिवन्नसद्दसिलोगट्ठआए तवमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा । चउत्थं पयं भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो ॥ "विविहगुणतवोरए, निच्चं भवइ थिरासए निज्जरट्ठिए । तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए" ॥ ४ ॥ चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ । तंजहा-नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नो नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्ज, नो कित्तिवन्नसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठिज्जा । चउत्थं पयं भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो । "जिणवयणरए अतिंतणे, पडिपुन्नाययमाययट्ठिए । आयारसमाहिसंवुडे, भवइ अ दंते भावसंधए ॥ ४ ॥ अभिगम चउरो समाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहिअप्पणो । विउलहिअं सुहावहं पुणो, कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥ जाइमरणाओ मुच्चइ इत्थत्थं

च चएइ सव्वसो । सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ७ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ विणयसमाही नाम चउत्थो उद्देसो नवममज्झयणं समत्तं ॥ ९ ॥

॥ अह भिक्खू नाम दसममज्झयणं ॥

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे, निच्चं चित्तसमाहिओ हविज्जा ।
इत्थीण वसं न आवि गच्छे, वंतं नो पडिआयइ जे स भिक्खू ॥ १ ॥
पुढविं न खणे न खणावए, सीओदगं न पिए न पिआवए ।
अगणिं सत्थं जहा सुनिसिअं, तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥ २ ॥
अनिलेण न वीए न वीयावए, हरियाणि न छिंदे न छिंदावए ।
बीआणि सया विवज्जयंतो, सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥
वहणं तसथावराण होइ, पुढवितणकट्ठनिस्सिआणं ।
तम्हा उद्देसिअं न भुंजे नो वि, पए न पयावए जे स भिक्खू ॥ ४ ॥
रोइअ नायपुत्तवयणे, अत्तसमे मन्निज्ज छप्पि काए ।
पंच य फासे महव्वयाइं, पंचासवसंवरे जे स भिक्खू ॥ ५ ॥
चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी हविज्ज बुद्धवयणे ।
अहणे निज्जायरूवरयए, गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥
सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे, अत्थि हु नाणे तवे संजमे अ ।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
होही अट्ठो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ ८ ॥
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
छंदिअ साहम्मिआण भुंजे, भुच्चा सज्झायरए जे स भिक्खू ॥ ९ ॥
न य वुग्गहिअं कहं कहिज्जा, न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजमधुवजोगजुत्ते, उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू ॥ १० ॥
जो सहइ हु गामकंटए, अक्कोसपहारतज्जणाओ अ ।
भयभेरवसद्दसप्पहासे, समसुहदुक्खसहे अ जे स भिक्खू ॥ ११ ॥
पडिमं पडिवज्जिआ मसाणे, नो भायए भयभेरवाइं दिस्स ।
विविहगुणतवोरए अ निच्चं, न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू ॥ १२ ॥
असइं वोसट्ठचत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए लूसिए वा ।
पुढविसमे मुणी हविज्जा अनिआणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू ॥ १३ ॥
अभिभूअ काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइपहाउ अप्पयं ।
विइत्तु जाईमरणं महब्भयं, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥ १४ ॥

हत्थसंजए पायसंजए, वायसंजए संजइंदिए ।
अज्झप्परए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू ॥ १५ ॥
उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे, अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए ।
कयविक्कयसन्निहिओ विरए, सव्वसंगावगए अ जे स भिक्खू ॥ १६ ॥
अलोल(लु)भिक्खू न रसेसु गिज्झे,उंछं चरे जीविअनाभिकंखी ।
इड्ढिं च सक्कारण पूअणं च, चए ठिअप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥ १७ ॥
न परं वइज्जासि अयं कुसीले, जेणं च कुप्पिज्ज न तं वइज्जा ।
जाणिअ पत्तेअं पुन्नपावं' अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए जे स भिक्खू ॥ १९ ॥
पवेअए अज्जपयं महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयइ परं पि ।
निक्खम्म वज्जिज्ज कुसीललिंगं,न आवि हासं कुहए जे स भिक्खू ॥ २० ॥
तं देहवासं असुइं असासयं, सया चए निच्चहिअट्ठिअप्पा ।
छिंदित्तु जाइमरणस्स बंधणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥ २१ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ भिक्खु नामं दसमज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह रइवक्का पढमा चूलिआ ॥

इह खलु भो पव्वइएण उप्पण्णदुक्खेणं संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव हयरस्सिगयंकुसपोयपडागाभूआइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहिअव्वाइं भवंति । तंजहा हं भो! दुस्समाइ दुप्पजीवी ॥ १ ॥ लहुसगा इत्तरिआ गिहीणं कामभोगा ॥ २ ॥ भुज्जो अ साय-बहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥ इमे अ मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ॥ ४ ॥ ओमजणपुरक्कारे ॥५॥ वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥ अहरगइवासोवसंपया ॥ ७ ॥ दुल्लहे खलु भो! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ॥८॥ आयंके से वहाय होइ ॥९॥ संकप्पे से वहाय होइ ॥१०॥ सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परिआए ॥ ११ ॥ बंधे गिहवासे, मुक्खे परिआए ॥१२॥ सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परिआए ॥ १३ ॥ बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥ १४ ॥ पत्तेअं पुन्नपावं ॥ १५ ॥ अणिच्चे खलु भो! मणुआण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले ॥१६॥ बहुं च खलु भो! पावं कम्मं पगडं ॥ १७ ॥ पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिन्नाणं दुप्पडिकंताणं वेइत्ता मुक्खो नत्थि अवेइत्ता तवसा वा झोसइत्ता ॥ १८ ॥ अट्ठारसमं पयं भवइ, भवइ अ इत्थ सिलोगो—

जया य चयई धम्मं, अणज्जो भोगकारणा । से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झई ॥ १ ॥
जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं । सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥
जया अ वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो । देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया अ माणिमो होइ, पच्छाहोइ अमाणिमो । सिट्ठिव कवडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ।
जया अ थेरओ होइ, समइक्कतजुव्वणो । मच्छुव्व गलिं गलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ।
जया अ कुकुडुवस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ । हत्थी व बधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ।
पुत्तदारपरिकिन्नो, मोहसताणसतओ । पकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ।
अज्ज आह गणी हुतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ । जइ हरमतो परिआए, सामन्ने जिणदेसिए ॥ ९ ।
देवलोगसमाणो अ, परिआओ महेसिण । रयाण, अरयाण च, महानरयसारिसो ॥ १० ।

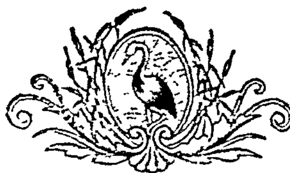
अमरोवम जाणिअ सुक्खमुत्तम, रयाण परिआए तहाऽरयाण ।
निरओवम जाणिअ दुक्खमुत्तम, रमिज्ज तम्हा परिआयपडिए ॥ ११ ॥
धम्माउ भट्ठ सिरिओववेय, जन्नग्गि विज्झायमिवप्पतेअ ।
हीलति ण दुव्विहिअ कुसीला, दाढुद्धिअ घोरविस व नाग ॥ १२ ॥
इहेव धम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामधिज्ज च पिहुज्जणम्मि ।
चुअस्स धम्माउ अहम्मसेविणो, सभिन्नवित्तस्स य हिट्ठओ गई ॥ १३ ॥
भुजित्तु भोगाइ पसज्झ चेअसा, तहाविह कट्टु असजम बहु ।
गइ च गच्छे अणहिज्झिअ दुह, बोही अ से नो सुलहा पुणो पुणो ॥ १४ ॥
इमस्स ता नेरइअस्स जतुणो, दुहोवणीअस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवम झिज्जइ सागरोवम, किमग पुण मज्झ इम मणोदुह ॥ १५ ॥
न मे चिर दुक्खमिण भविस्सइ, असासया भोगपिवास जतुणो ।
न चे सरीरेण इमेण विस्सइ, अविस्सई जीविअपज्जवेण मे ॥ १६ ॥
जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ, चइज्ज देह न हु धम्मसासण ।
त तारिस नो पइलिंति इदिआ, उवेंति वाया व सुदसण गिरिं ॥ १७ ॥
इच्चेव सपस्सिअ बुद्धिम नरो आय उवाय विविह विआणिआ ।
काएण वाया अदु माणसेण तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥ १८ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ रइवक्का पढमा चूला समत्ता ॥ १ ॥

॥ अह विवित्तचरिया बीआ चूलिआ ॥

चूलिअ तु पवक्खामि, सुअ केवलिभासिअ । ज सुणित्तु सुपुण्णाण, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १
अणुसोअपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोअलद्धलक्खेण । पडिसोअमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेण ॥
अणुसोअसुहो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहिआण। अणुसोओ ससारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥
तम्हा आयारपरक्कमेण सवरसमाहिबहुलेण । चरिआ गुणा अ नियमा अ, हुति साहूण दट्ठव्वा ॥
अणिएअवासो समुआणचरिआ, अन्नायउछ पयरिक्कया अ ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा अ, विहारचरिआ इसिण पसत्था ॥ ५ ॥
आइन्नओ माणविवज्जणा अ, ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे ।

संसट्ठकप्पेण चरिज्ज भिक्खू, तज्जायसंसट्ठ जई जइज्जा ॥ ६ ॥
असज्जमंसासि अमच्छरीआ, अभिक्खणं निव्विगइं गया अ।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झायजोगे पयओ हविज्जा ॥ ७ ॥
न पडिन्नविज्जा सयणासणाइं, सिज्जं निसिज्जं तह भत्तपाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तभावं न कहिं पि कुज्जा ॥ ८ ॥
गिहिणो वेआवडिअं न कुज्जा, अभिवायणं वंदणपूअणं वा।
असंकिलिट्ठेहि समं वसिज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहिअं वा गुणओ समं वा।
इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥
संवच्छरं वा वि परं पमाणं, बीअं च वासं न तहिं वसिज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरिज्जभिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥
जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, संपिक्खए अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥ १२ ॥
किं मे परो पासइ किंच अप्पा, किं वाहं खलिअं न विवज्जयामि।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥ १३ ॥
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइन्नओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥ १४ ॥
जस्सेरिसा जोग जिइंदिअस्स, धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी, सो जीअइ संजमजीविएणं ॥ १५ ॥
अप्पा खलु सययं रक्खिअव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ, सुरक्खिओ सव्वदूहाण मुच्चइ ॥ १६ ॥
त्ति बेमि ॥ इअ विवित्तचरिआ बीआ चूला समत्ता ॥

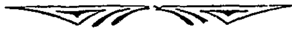
॥ इअ दसवेआलिअं सुत्तं समत्तं ॥





॥ श्रीमद्देवऋद्धिगणिक्षमाश्रमणप्रणीत ॥

श्री नन्दीसूत्र मूलपाठः ।



जयइ जग जीव जोणी वियाणओ । जगगुरू जगाणदो ॥ जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहोभयवं ॥ १ ॥ जयइ सुआण पभवो । तित्थयराण अपच्छिमो जयइ ॥ जयइ गुरूलोगाण, जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भद्द सव्व जगुज्जोयगस्स । भद्द जिणस्स वीरस्स ॥ भद्द सुरासुरनमसियस्स । भद्द धुयरयस्स ॥ ३ ॥ गुणभवणगहण । सुयरयण भरियदसणविसुद्धरत्थागा सघ नगभद्द ते । अखड चारित्तपागारा ॥ ४ ॥ सजम तव तुबारयस्स । नमो सम्मत्त पारियल्लस्स । अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया सघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भद्द सील पडागूसियस्स । तव नियम तुरयजुत्तस्स ॥ सघरहस्स भगवओ । सज्झाय सुनदिघोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरय जलोह विणिग्गयस्स सुयरयण दीहनालस्स ॥ पच महव्वय थिरकन्नियस्स । गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥ सावग जण महुअरिपरिवुडस्स । जिण सूर तेय बुद्धस्स ॥ सघपउमस्स भद्द । समण गण सहस्स पत्तस्स ॥ ८ ॥ तसजम मयलछण । अकिरिय राहुमुह दुद्धरिसनिच्च । जय सघ चद । निम्मल सम्मत्त विसुद्ध जोण्हागा ॥ ९ ॥ पर तित्थिय गह पह नासगस्स । तवतेय दित्त लेसस्स ॥ नाणु ज्जोयस्स जए भद्द दम सघ सूरस्स ॥ १० ॥ भद्द धिइ वेला परिगयस्स । सज्झाय जोग मगरस्स ॥ अक्खोहस्स भगवओ । सघ समुद्दस्स रुद्दस्स ॥ ११ ॥ सम्म द्दसण वर वइर दढ रूढ गाढावगाढ पेढस्स ॥ धम्म वररयण मडिय चामीयर मेहलागस्स ॥ १२ ॥ निय मूसिय कणय सिलायलुज्जल जलत चित्तकूडस्स ॥ नदण वण मणहर सुरभि सील गधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥ जीवदया सुन्दर कद रुद्दरिय मुणिवर मइद इन्नस्स ॥ हेउ सय धाउ पगलत रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥ १४ ॥ सवर वर जल पगलिय उज्झर पविराय माणहारस्स ॥ सावग जण पउर रवत मोर नच्चत कुहरस्स ॥ १५ ॥ विणय नय पवर मुणिवर फुरत विज्जुज्जलत सिहरस्स । विविह गुण कप्प रुक्खग फलभर कुसुमाउल वणस्स ॥ १६ ॥ नाण वर रयण दिप्पत कत वेरुलिय विमल चूलस्स ॥ वदामि विणय पणओ सघ महामदर गिरिस्स ॥ १७ ॥ गुण रयणुज्जल कडय सील सुगधि तव मडिउद्देस ॥ सुयबारसगसिहर सघ महामदर वदे ॥ १८ ॥ नगर रह चक्क पउमे चदे सूरे समुद्द मेरुम्मि ॥ जो उवमिज्जइ सयय त सघगुणायर वदे ॥ १९ ॥ वदे उसभ अजिय सभव मभिनदण सुमइ सुप्पभ सुपास ॥

ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥ २० ॥ विमल मणंत य धम्मं सन्ति कुंथुं अरं च मल्लिं च ॥ मुनिसुव्वय नमिनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ २१ ॥ पढमत्थि इंदभूइ बीए पुणहोइ अग्गिभूइत्ति ॥ तईए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मेय ॥ २२ ॥ मंडिअ मोरिय पुत्ते अकंपिए चेव अयल भायाय॥ मे यज्जेय पहासेय गणहरा हुंति वीरस्स ॥ २३ ॥ निव्वुइ पह सामणयं जयइ सया सव्व भाव देसणयं॥ कु समय मय नासणयं जिणिंदवर वीर सासणयं ॥२४॥ सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंबूनामं च कासवं पभवं ॥ कच्चायणं वंदे वच्छं सिज्जंभवं तहा ॥ २५ ॥ जसभद्दं तुंगियं वंदे संभूयं चेव माढरं ॥ भद्दबाहुं च पाइन्नं थूलभद्दं च गोयमं ॥ २६ ॥ एलावच्चसगोत्तं वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ॥ तत्तो कोसियगोत्तं बहुलस्स सरिव्वयं वन्दे ॥ २७ ॥ हारिय गुत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ॥ वन्दे कोसिय गोत्तं संडिल्लं अज्ज जीयधरं ॥ २८ ॥ तिसमुद्दखायकित्तिं दीव समुद्देसु गहिय पेयालं ॥ वंदे अज्ज समुद्दं अक्खुभिय समुद्दगंभीरं ॥ २९ ॥ भणगं करगं झरगं पभावगं णाणदंसण गुणाणं ॥ वंदामि अज मंगुं सुय सागर पारगं धीरं ॥३०॥ वंदामि अज्ज धम्मं तत्तो वंदे य भद्द गुत्तं च ॥ तत्तोय अज्ज वइरं तव नियम गुणेहिं वइरं समं ॥ ३१ ॥ वंदामि अज्ज रक्खिय खमणे रक्खिय चारित्त सवस्से ॥ रयण करडंग भूओ अणुओगो जेहिं ॥ ३२ ॥ नाणम्मि दंसण म्मिय तव विणए णिच्च काल मुज्जुत्तं ॥ अज्जं नंदिलखमणं सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥ ३३ ॥ वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्ज नागहत्थीणं॥ वागरण करण भंगिय कम्मपयडी पहाणाणं ॥३४॥ जच्चंजण धाउ समप्पहाण मुद्दिय कुवलय निहाण ॥ वड्ढउ वायगवंसो रेवइनक्खत्त नामाणं ॥३५॥ अयलपुरा णिक्खंते कालियसुय आणुओगिए धीरे ॥ बंभदीवगसीहे वायगपय मुत्तमं पत्ते ॥ ३६॥ जेसिं इमो अणु ओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ॥ बहु नयर निग्गय जसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३७ ॥ तत्तो हिमवन्त महंत विक्कमे धिइ परकम मणंते ॥ सज्झाय मणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ ३८ ॥ कालिय सुय अणु ओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं ॥ हिमवंत खमा समणे वंदे णागज्जुणायरिये ॥ ३९ ॥ मिउमद्दव संपन्ने आणुपुव्वि [illegible] पत्ते ॥ ओहसुय समायारे नागज्जुण वायए वंदे ॥ ४० ॥ गोविंदाणं पि नमो अणुओग विउल धारिणिं दाणं ॥ णिच्चं खंति दयाणं परुवणे दुल्लभिं दाणं ॥ ४१ ॥ तत्तो य भूयदिन्नं निच्चं तव संजमे अनिव्विण्णं ॥ पंडिय जण सामण्णं वंदामो संजम विहिण्णु ॥ ४२ ॥ वरकणगतविय चंपग विमउलवर कमल गब्भ सरिवन्ने ॥ भविय जणहिययदइए दयागुण विसारए धीरे॥४३॥ अड्ढ भरहप्पहाणे बहुविह सज्झाय सुमुणिय पहाणे । अणुओगिय वर वसभे नाइल कुल वंसनंदिकरे ॥४४॥ भूयहियअपगब्भे वंदेऽहं भूयदिन्न मायरिए ॥ भवभय वुच्छेय करे सीसे नागज्जुण रिसीणं ॥ ४५ ॥ सुमुणिय निच्चा निच्चं सुमुणिय सुत्तत्थ धारयं वन्दे ॥ सब्भावुब्भावणया तत्थं लोहिच्चणामाणं ॥ ४६ ॥ अत्थ महत्थक्खाणिं सुसमण वक्खाण कहण निव्वाणिं॥ पयईए महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४७ ॥ तव नियम सच्च संजम विणयज्जव खंति मद्दवरयाणं ॥ सील गुणगद्दियाणं अणुओग जुगप्पहाणाणं ॥ ४८ ॥ सुकुमाल कोमल तले तेसिं पणमामि लक्खण पसत्थे पाए पावयणीणं पडिच्छ सय एहिं पणि वइए ॥ ४९ ॥ जे अन्ने भगवन्ते कालिय सुय आणु ओगिए धीरे ॥ ते पणमिऊण सिरसा [illegible]

इति ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १
सेल-घण, कुडग, चालणि, परिपूणग, हंस. महिस, मेसे य, ममग, जलूग, बिराली जाहग, गो
१३ १४
मेरी आमीरी ॥ ५१ ॥

"सा समासओ तिविहा पन्नत्ता तजहा जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा" जाणिया जहा खीर मिव, जहा हसा जे घुट्टन्ति इह गुरुगुण समिद्धा दोसे य विवज्जति त जाणसु जाणिय परिस ॥५२॥ अजाणिया जहा–जा होइ पगइमहुरा मियछावय सीह कुक्कुडय भूआ । रयणमिव असठविया, अजाणिया माभवे परिसा ॥ ५३ ॥ दुव्वियड्ढा जह–नय कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण । वत्थिव्ववायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो दुव्वियड्ढो ॥ ५४ ॥ (सूत्र) नाण पञ्चविहं पन्नत तजहा–आभिणि बोहियनाण सुयनाण, ओहिनाण, मणपज्जवनाण, केवलनाण ॥ १ ॥ त समासओ दुविह पण्णत, तजहा–पच्चक्ख च परोक्ख च ॥ सू० २ ॥ से कि तं पच्चक्ख ? पच्चक्ख दुविहं पण्णत्त, तजहा इदियपच्चक्ख । नोइदियपच्चक्ख च ॥ सू० ३ ॥ से कि त इदिय पच्चक्ख ? इदिय पच्चक्ख पञ्चविह पण्णत्त, तजहा–सो इदियपच्चक्ख । चक्खिदिय पच्चक्ख । घाणिंदिय पच्चक्ख जिब्भिदिय पच्चक्ख । फासिंदिय पच्चक्ख । सेतं इदियपच्चक्ख ॥ सू० ४ ॥ से किं तं नोइदियप च्चक्ख ? नोइदियपच्चक्ख तिविह पण्णत्त तजहा–ओहिनाण पच्चक्ख । मणपज्जवनाण पच्चक्ख । केवलनाण पच्चक्ख ॥ ५ ॥ से किं तं ओहिनाण पच्चक्ख ? ओहिनाण पच्चक्ख दुविह पण्णत्त, तजहा–भवपच्चइयच खा ओवसमिय च ॥ ६ ॥ से किं त भवपच्चइय ? भवपच्चइय दुण्ह, तजहा–देवाणय नेरइयाणय ॥ ७ ॥ से किं त खा ओवसमिय ? खा ओवसमय दुण्ह, तजहा—मणूमाण य पचेंदिय तिरिक्ख जोणियाण य । को हेऊ खाओवसमिय ? खाओवसमिय तयावरणि,ज्जाण कम्माण उदिण्णाण खएण अणुदिण्णाण उवसमेण ओहिनाण समुप्पज्जइ ॥ सू० ८ ॥ अहवा

१
पडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाण समुप्पज्जइ तं समासओ छविह पण्णत्त, तजहा–आणुगामिय
२ ३ ४ ५ ६
अणाणुगामिय, वड्ढमाणय, हीयमाणय, पडिवाइय, अपडिवाइय ॥ ६ ॥ से किं त
आणुगामिय ओहिनाण दुविह पण्णत्त, तजहा–अतगय च मज्झगय च । से किं तं अतगय, अतगय तिविह पण्णत्त तजहा पुरओ अतगय ? मग्गओ अतगय। पासओ अतगय से किं त पुरओ अतगय ? पुरओ अतगय–से जहा नामए केइ पुरिसे उक्का चडुलिय वा अलाय मणिं वा पईव वा जोइ वा पुरओ काउ पणुल्लेमाणे २ गच्छेज्जा, से त पुरओ अतगय । से कि मग्गओ अतगय ? मग्गओ अतगय से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलिय वा अलायं मणिं वा पईव वा जोइ वा मग्गओ काउ अणुकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से त अतगय । से किं पासओ अतगय ? पासओ अतगय सेजहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलिय वा अलाय वा म वा पईव वा जोइ वा पासओ काउ परिकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से त पासओ अतगय से तं

गंणि वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वह माणे २ गच्छिज्जा सेतं मज्झगयं । अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो । पुरओ अंतगएणं ओहि नाणेणं पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । मज्झगएणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से तं आणुगामियं ओहिनाणं ॥ १० ॥ से किं तं अणाणुगामियं ओहिनाणं अणाणु गामियं ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरं तेहिं परियेरंतेहिं, परिघोले माणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेव अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संवद्धाणि वा असंवद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ; अन्नत्थगएण पासइ, से त्तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ॥ ११ ॥ से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ? वड्ढमाणयं ओहिनाणं पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वड्ढमाणस्स वड्ढमाण चरित्तस्स । विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण चरित्तस्स । सव्वओ समंता ओहि वड्ढइ—

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ॥ ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्तं जहन्नं ॥ ५५ ॥ सव्व बहु अगणि जीवा निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु ॥ खित्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ॥ ५६ ॥ अंगुलमावलियाणं भाग मसंखिज्ज दोसु संखिज्जा ॥ अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुल पुहुत्तं ॥ ५७ ॥ हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ॥ जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥ ५८ ॥ भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुद्दीवम्मि साहिआ मासा ॥ वासं च मणुय लोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥ ५९ ॥ संखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दावि हुंति संखिज्जा ॥ कालम्मि असंखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥ ६० ॥ काले चउण्हवुड्ढी, कालो भइयव्वु खित्त वुड्ढीए ॥ वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ६१ ॥ सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं अंगुल सेढी मित्ते, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥ ६२ ॥ से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ॥ १२ ॥ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं ? हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वड्ढमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स संकिलिस्स माणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समन्ता ओही परिहायइ से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं ॥ १३ ॥ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ? पडिवाइ ओहिनाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जय भागं वा संखिज्जय भागं वा वालग्गं वा वालग्ग पुहुत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहुत्तं वा, जूयं वा जूयंपुहुत्तं वा, जवं वा जव पुहुत्तं वा । अंगुलं वा अंगुलपुहुत्तं वा । पायं वा पायपुहुत्तं वा । विहत्थिं वा विहत्थि पुहुत्तं वा । रयणिं वा रयणि पुहुत्तं वा । कुच्छिं कुच्छिपुहुत्तं वा, धणुं वा धणुपहुत्तं वा । गाउअं वा गाउयपुहुत्तं वा । जोयण वा जोयणं पुहुत्तं वा । जोअणसयं वा जोयणसय पुहुत्तं वा जोयण सहस्सं वा जो यणसहस्स पुहुत्तं वा । जोयणलक्खं वा जोयणलक्ख पुहुत्तं वा । जोयणकोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्तं वा । जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडि पहुत्तं वा । [जो अणसंखिज्जं वा जो अणसंखिज्ज पुहुत्तं वा जो अण

असखेज्जवा जो अणअसखेज्जपुहुत्तवा ।] उक्कोसेण लोग वा पासि त्ताण पडिवइज्जा। से त पडिवा ओहिनाण ॥ १४ ॥ से कि त अपडिनाइ ओहिनाण । अपडिनाइ ओहिनाणजेण अलोगस्स एग मवि आगासपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिनाइ ओहिनाण। से त्त अपडिनाइ ओहिनाण ॥१५ त समासओ चउविह पण्णत्त, तजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्व ओ ण ओहि नाणी जहन्नेण अणताइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ खित्त ओण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलस्स असखिज्जय भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखि ज्जाइ अलोगे लोगप्पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ, कालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आवलियाए असखिज्जइ भाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय मणागय च काल जाणइ, पासइ भावओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कसेणवि अणते भाव जाणइ पासइ । सव्व भावाण मणत भाग भावे जाणइ पासइ ॥ १६ ॥ ओही भवपचइओ गुणपच इओ य वण्णिओ दुविहो। तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य कालेय। नेरइयदेवतित्थकरा य ओहिस्सऽवाहिरा हुति । पासति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासति। से त्त ओहिनाणपच्चक्ख से किं त मणपज्जवनाण? मणपज्जवनाणे ण भते! किं मणुस्साण उप्पज्जइ अमणुस्साण? गोयमा! मणुस्साण नो अमणुस्साण० ? जइमणुस्साण कि समुच्छिममणुस्साण गब्भवक्कतिय मणुस्साण? गोयमा? नोसमुच्छिममणुस्साण उपज्जई गब्भवक्कतियमणुस्साण । जइगब्भवक्कतियमणुस्साण किं कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, अन्तरदीवगगब्भव क्कतिय मणुस्साण, गोयमा? कम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण नो अकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो अन्तरदीवग गब्भ वक्कतियमणुस्साण जइ कम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, किं सखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतियमणुस्साण असखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणु स्साण? गोयमा! सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, नो असखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साण। जइ सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, कि पज्जत्तग सखे ज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण,अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण? गोयमा! पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण,नो अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण। जइ पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण० किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्क तिय मणुस्साण, मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण, स- म्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण? गोयमा! सम्म दिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जावासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण नो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण०, नो सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभू मिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण कि सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ- वक्कतिय मणुस्साण, असजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मणुस्साण। सजया सजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कतिय मण-

णं ? गोयमा ! संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणु-
णं, नो असंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं।
संजयासंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं । जइ
य सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं किं पमत्त संजय
दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि
त्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साण ? गोयमा ! अपमत्तसंजय सम्मदिट्ठि
त्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो पमत्त सञ्जय सम्मदिट्ठि
त्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं । जइ अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि
त्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, किं इड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि
त्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं अणिड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्म-
ट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ! इड्ढीपत्तअपमत्त
य सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो अणिड्ढीपत्त
मत्तसंजयसम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साणं । मणपज्जवनाणं समु-
ज्जइ ॥ सू० ॥ १७ ॥ तं च दुविहं उप्पज्जइ तंजहा उज्जुमई य विउलमई य तं समासओ
विहं पन्नत्तं तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओणं उज्जुमई अणंते अणंत
सिए खंधे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियंतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिर-
ए जाणइ पासइ । खित्तओणं उज्जुमई यजहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जय भागं उक्कोस्सेणं अहे
व इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डग पयरे उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले,
रेयं जाव अन्तोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु तीसाए अकम्म-
मेसु छपन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्निपंचेंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ तं चेव
उलमई अड्ढाईज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियत्तरं विउलतरं विसुद्धतर वितिमिरतराग खेत्तं जाणइ पासइ।
लओ णं उज्जुमई जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखि-
यभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ । तं चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतरागं
उद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ । भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्व-
वाणं अणतभागं जाणइ पासइ । तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वि-
मिरतरागं जाणइ पासइ । मणपज्जवनाणं पुण जणमणपरिचिंतियत्थपागडणं। माणुसखित्तनिबद्धं
पच्चइयं चरित्तवओ ॥ ६९ ॥ से तं मणपज्जवनाण सू० ॥ १८ ॥ से किं तं केवलनाणं ?
लनाणं दुविहं पन्नत्त, तंजहा-भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवलनाणं च । से किं तं भवत्थकेवल-
णं ? भवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-सजोगिभवत्थकेवलनाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं
। से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ? सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—पढम-
यसजोगिभवत्थ, केवलनाणं च अपढम समय सजोगिभवत्थकेवलनाणं च, अहवा, चरमसमयस-
गिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं।
किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं? अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा-पढमसमयअजोगि-

भवत्थकेवलनाण च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाण च, से त्त अजोगिभवत्थकेवलनाण, से त्त भवत्थकेवलनाण ॥ सू० ॥ १९ ॥ से किं त सिद्धकेवलनाण? सिद्धकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा—अणतरसिद्धकेवलनाण च परपरसिद्धकेवलनाण च ॥ सू० ॥ २० ॥ से किं त अणतरसिद्धकेवलनाण? अणतरसिद्धकेवलनाण पन्नरसविह पण्णत्त, तजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४, सयबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्धसिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा, ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरिसलिंगसिद्धा ९, नपुसगलिंगसिद्धा १०, सलिंगसिद्धा ११, अन्नलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंग सिद्धा १३, एगसिद्धा १४, अणेगसिद्धा १५, से त्त अणतरसिद्धकेवलनाण ॥ सू० ॥ २१ ॥ से किं त परपरसिद्धकेवलनाण? परपरसिद्धकेवलनाण अणेगविह पण्णत्त, तजहा-अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव दससमयसिद्धा, सखिज्जसमयसिद्धा, असखिज्जसमयसिद्धा, अणतसमयसिद्धा, से त्त परपरसिद्धकेवलनाण, से त्त सिद्धकेवलनाण ॥ त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ ण केवलनाणी सव्वदव्वाइ जाणइ पासइ। खित्तओ ण केवलनाणी सव्व खित्त जाणइ पासइ। कालओ ण केवलनाणी सव्व काल जाणइ पासइ। भावओ ण केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ। अह सव्वदव्वपरिणाम, भावविण्णत्तिकारणमणत। सासय मप्पडिवाइ, एगविह केवल नाण ॥ ६६ ॥ सू० ॥ २२ ॥ केवलनाणेणऽत्थे नाउ जे तत्थ पण्णवणजोगे। ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुय हवइ सेस ॥ ६७ ॥ से त्त केवलनाण, से त्त नोइदियपच्चक्ख से त्त पच्चक्खनाण ॥ सू० ॥ २३ ॥ से किं त परोक्खनाण? परोक्खनाण दुविह पन्नत्त, तजहा—आभिणिबोहियनाणपरोक्ख च, सुयनाण परोक्ख च, जत्थ आभिणिबोहियनाण तत्थ सुयनाण, जत्थ सुयनाण तत्थाभिणिबोहियनाण, दोऽवि एयाइ अण्णमण्णमणुगयाइ, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्त पण्णवयति-अभिनिबुज्झइति आभिणिबोहियनाण, सुणेइत्ति सुय, मइपुव्व जेण सुय, न मई सुयपुव्विया ॥ सू० ॥ २४ ॥ अविसेसिया मई, मइनाण च मइअन्नाण च। विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाण मिच्छदिट्ठिस्स मई मइअन्नाण। अविसेसिय सुय सुयनाण च सुयअन्नाण च। विसेसिय सुय सम्मदिट्ठिस्स सुय सुयनाण, मिच्छदिट्ठिस्स सुय सुयअन्नाण ॥ सू० २५ ॥ से किं त आभिणिबोहियनाण? आभिणिबोहियनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-सुयनिस्सिय च, अस्सुयनिस्सिय च। से किं त अस्सुयनिस्सिय? अस्सुयनिस्सिय चउव्विह पण्णत्त, तजहा—उप्पत्तिया १ वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४। बुद्धि चउव्विहा वुत्ता पचमा नोवलब्भइ ॥ ६८ ॥ सू० ॥ २६ ॥ पुव्वमदिट्ठमस्सुयमवेइय, तक्खणविसुद्धगहियत्था। अव्वाहयफलजोगा, बुद्धि उप्पत्तिया नाम ॥ ६९ ॥ भरहसिल १ पणिय २ रुक्ख ३ खुड्डग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८। गय ९ घयण १० गोल ११ खभे १२, खुड्डग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पइ १६ पुत्ते १७ ॥ ७० ॥ भरह १ सिल २ मिंढ ३ कुक्कुड ४, तिल ५ वालुय ६ हत्थि ७ अगड ८ वणसडे ९। पायस १० अइया ११ पत्ते १२, खाडहिला १३ पच पिअरो य १४ ॥ ७१ ॥ महुसित्थ १८ मुद्दि १९ अके २०, य नाणए २१ भिक्खु २२ चेडगनिहाणे २३ सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५ इच्छा य मह २६ सयसहस्से २७ ॥ ७२ ॥

णसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला। उभओलोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी
निमित्ते १ अत्थसत्थे य २. लेहे ३ गणिए य कूव ५ अस्से ६ य। गद्दभ ७ लक्खण
, अगए १० रहिए ११ य गणिया १२ य ॥ ७४ ॥ सीया साडी दीहं, च तणं अवस-
ुंचस्स १३ निव्वोदए १४ य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाओ १५ ॥ ७५ ॥ उवओग-
कम्मपसंगपरिघोलणविसाला। साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७६ ॥ हेर-
करिसए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ तुन्नाए ८ वड्डइय ९ पूयइ
११ चित्तकारे १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा। हिय-
फलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ ७८ ॥ अभए १ सिट्ठि कुमारे ३, देवी ४ उदिओदए
५ साहू य नंदिसेणे ६. धणदत्त ७ सावग ८ अमच्चे ९ ॥ ७९ ॥ खमए १० अमच्च-
चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य। नासिकसुंदरिनंदे १४ वइरे परिणामिया बुद्धी ॥८०॥
१६ आमंडे १७, मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० थूभिंदे २१। परिणामियबु-
माई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्तं अस्सुयनिस्सियं। से किं तं सुयनिस्सियं? सुयनिस्सियं
पण्णत्तं, तंजहा-उग्गहे १ ईहा २ अवाओ ३ धारणा ४ ॥ सू० ॥ २६ ॥ से किं तं
दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य, ॥ सू० ॥ २७ ॥ से किं तं
? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते. तंजहा-सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे
यवंजणुग्गहे फासिंदियवंजणुग्गहे, से त्तं वंजणुग्गहे ॥ सू० ॥ ॥ २८ ॥ से किं
ग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे,
अत्थुग्गहे, जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे ॥ सू० ॥
तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा-
, उवधारणया. सवणया, अवलंबणया, मेहा, से त्तं उग्गहे ॥ सू० ॥ ३० ॥ से किं तं
व्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियईहा, चक्खिंदियईहा, घाणिंदियईहा, जिब्भिंदियईहा, फा-
, नोइंदियईहा, तीसेणं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणा वंजणा पंच नामधिज्जा भवंति,
भोगणया, मग्गणया, गवेसणया, चिंता, वीमंसा, से त्तं ईहा ॥ सू० ॥ ३१ ॥ से किं
? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअवाए, चक्खिंदियअवाए, घाणिंदियमवाए
यअवाए, फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए, तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा
नधिज्जा भवन्ति, तंजहा—आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे, से त्तं
सू० ३२ ॥ से किं तं धारणा? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियधारणा, च-
धारणा, घाणिंदियधारणा, जिब्भिंदियधारणा, फासिंदियधारणा, नोइंदियधारणा, तीसे णं
ट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा-धरणा, धारणा, ठवणा. पइट्ठा.
त्तं धारणा ॥ सू० ॥ ३३ ॥ उग्गहे इक्कसमइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवा
संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ॥ सू० ॥ ३४ ॥ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभि-
नाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण। से किं तं
दिट्ठंणं? पडिबोहगदिट्ठंतेणंसे जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा.

अमुगा अमुगत्ति- तत्थ चोयगे पन्नवयं एव वयासी-किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति। दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? जाव दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? संखिज्ज समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति?, असंखिज्ज समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति?, एवं वयंत चोयगं पण्णवए एवं वयासी-नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, से तं पडिबोहग दिट्ठंतेणं। से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं? मल्लगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खेविज्जा, से नट्ठे, अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे, एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं रावेहिइत्ति, होही से उदगबिंदू, जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं भरिहिंति, होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ, ताहेहुंति करइ नो चेव णं जाणइ के वेस सदाइ? तओ ईहं पविसइ, तओजाणइ अमुगे एस सद्दइ, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओणं धारेइ संखिज्जं वा कालं, असंखिज्जं वा कालं, से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा, तेणं सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा तेणं रूवति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रूवत्ति, तओ ईहंपविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइपुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेणं गंधत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए-केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा तेणं फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासओत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं, से त्तं मल्लगदिट्ठंतेणं ॥ सू० ३५ ॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ। खेत्तओणं आभिणिबोहियनाणी

एसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ। कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ
पासइ। भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हुंति चत्तारि। आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेणं
२॥ *अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा। ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं
॥ ८३॥ उग्गह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु। कालमसंखं संखं, च धारणा होई
व्वा॥ ८४॥ पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु। गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं विया-
॥ ८५॥ भासासमसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ। वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा
घाए॥ ८६॥ ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा। सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभि-
बोहियं॥ ८७॥

से त्तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं, से त्तं मइनाणं॥ सू० ॥ ३६॥ से किं तं सुयनाणपरो-
? सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं तंजहा—अक्खरसुयं १ अणक्खरसुयं २ सण्णिसुयं ३
ण्णिसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ साइयं ७ अणाइयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १०
यं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १३ अणंगपविट्ठं १४॥सू०३७॥ से किं तं अक्खरसुयं? अक्ख-
तिविहं पण्णत्तं तंजहा—सन्नक्खरं वंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं। से किं तं सन्नक्खरं? सन्नक्खरं
खरस्स संठाणागिई, से त्तं सन्नक्खरं। से किं तं वंजणलक्खरं? वंजणक्खरंअक्खरस्स वंजणा-
वो, से त्तं वंजणक्खरं। से किं तं लद्धिअक्खरं? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं
पजइ, तंजहा—सोइंदिय लद्धिअक्खरं, चक्खिदिय लद्धिअक्खरं, घाणिंदिय लद्धिअक्खरं, रस-
य लद्धिअक्खरं, फासिंदिय लद्धिअक्खरं, नोइंदिय लद्धिअक्खरं, से त्तं लद्धिअक्खरं, से त्तं
खरसुयं॥ से किं तं अणक्खरसुयं? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—ऊससियं नीससियं,
ट्ठं खासियं च छीयं च। निस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं॥ ८८॥

से त्तं अणक्खरसुयं॥ सू० ३८॥ से किं तं सण्णिसुयं? सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं, तंजहा—
ओवएसेणं, हेऊवएसेणं, दिट्ठिवाओवएसेणं। से किं तं कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं
णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं सण्णीति लब्भइ। जस्सणं
ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं कालिओ-
सेणं। से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्सणं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं
ीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं
वएसेणं। से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी
इ, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भइ, से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं, से त्तं सण्णिसुयं,
असण्णिसुयं॥ सू० ॥ ३९॥ से किं तं सम्मसुयं? सम्मसुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं
ण्णनाणदंसणधरेहिं तेलुक्कनिरिक्खियमहियपूइएहिं तीयपडुप्पण्णमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं
दरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तंजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ

* अत्थाणं उग्गहणं, च उग्गहं तह वियालणं ईहं। ववसायं च अवाय धरणं पुण धारणं बिंति॥ १॥

४ विवाहपण्णत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगडदसाओ अतगडदसाओ ८ अ णुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ १२, इच्चेय दुवालसग गणिपिडग चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुय, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुय, तेण पर भिण्णेसु भयणा, से त्त सम्मसुय ॥ सू० ॥ ४० ॥ से कि त मिच्छासुय ? मिच्छासुय ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छदबुद्धिमइविगप्पिय, तजहा—भारह, रामायण, भीमासुरुक्ख, कोडिल्लय, सगडभद्दियाओ, खोड (घोडग) मुह, कप्पासिय, नागसुहुम, कणगसत्तरी, वइसेसिय, बुद्धवयण, तेरासिय, काविलिय, लोगायय, सट्ठितत, माढर, पुराण, वागरण, भागवय, पायजली पुस्सदेवय, लेह, गणिय, सउणरुय नाडयाइ, अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया सगोवगा, एयाइ मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइ मिच्छासुय एयाइ चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइ सम्मसुय, अहवा मिच्छदिट्ठिस्सवि एयाइ चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ चयति,से त्त मिच्छासुय ॥ सू० ॥ ४१ ॥ से कि त साइय सपज्जवसिय, अणाइय अपज्जवसिय च ? इच्चेय दुवालसग गणि पिडग वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइय सपज्जवसिय अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइय अपज्जवसिय, त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ ण सम्मसुय एग पुरिस पडुच्च साइय सपज्जवसिय, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, खेत्तओ ण पच भरहाइ पचेरवयाइ पडुच्च साइय सपज्जवसिय, पच महाविदेहाइ पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, कालओ ण उस्सप्पिणि ओसप्पिणि च पडुच्च साइय सपज्जवसिय, नो उस्सप्पिणि नो ओसप्पिणि च पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, भावओ ण जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, ते तया भावे पडुच्च साइय सपज्जवसिय खाओवसमिय पुण भाव पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय, अहवा भवसिद्धियस्स सुय साइय सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स सुय अणाइय अपज्जवसिय च, सव्वागासपएसग्ग सव्वागासपएसेहिं अणतगुणिय पज्जवक्खर निप्फज्जइ, सव्वजीवाणपि य ण अक्खरस्स अणतभागो,निच्चुग्घाडियो जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्त पाविज्जा,— "सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चदसूराण" से त्त साइय सपज्जवसिय, से त्त अणाइय अपज्जवसिय ॥ सू० ॥ ४२ ॥ से कि त गमिय ? गमिय दिट्ठिवाओ, से कि त अगमिय अगमिय कालिय सुय, से त्त गमिय, से त्त अगमिय । अहवा त समासओ दुविह पण्णत्त, तजहा—अगपविट्ठ, अग बाहिर च । से किं त अगबाहिर ? अगबाहिर दुविह पण्णत्त, तजहा—आवस्सय च, आवस्सयवइरित्त च । से किं त आवस्सय ? आवस्सय छव्विह पण्णत्त, तजहा—सामाइय, चउवीसत्थओ, वदणय, पडिक्कमण, काउस्सग्गो, पच्चक्खाण, से त्त आवस्सय । से किं त आवस्सयवइरित्त ? आवस्सयवइरित्त दुविह पण्णत्त, तजहा—कालिय च, उक्कालिय च।से किं त उक्कालिय ? अणेगविह पण्णत्त,तजहा—दसवेयालिय, कप्पियाकप्पिय, चुल्लकप्पसुय, महाकप्पसुय, उववाइय, रायपसेणिय, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमाय, नदी, अणुओगदाराइ, देविंदत्थओ, तदुलवेयालिय, चदाविज्झय, सूरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डल, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती आयवि

सोही, वीयरागसुयं, संलेहणासुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ; से त्तं उक्कालियं। से किं तं कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहं, महानिसीहं, इसिभासियाइं, जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चंदपन्नत्ती, खुड्डिया विमाणपविभत्तीमहल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावलियाओ, निरयावलियाओ कप्पियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ, आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, सुमिण भावणणं महासुमिणभावणाणं, तेयग्गिनिसग्गाणं, एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइन्नगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स. अवहा. जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव, से त्तं कालियं, से त्तं आवस्सयवइरित्तं, से त्तं अणंगपविट्ठं ॥ सू० ॥ ४३ ॥ से किं तं अंगपविट्ठं? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तंजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२ ॥ सू० ४४ ॥ से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामायावित्तीओ आघविज्जंति, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—नाणायारे दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे. आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा, अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा. संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ.संखिज्जाओ संगहणीओ. संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणवीस अज्झयणा, पंचासीइं उद्देसणकाला, पंचासीइं समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति, परुविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति. उवदंसिज्जंति. से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं आयारे १ ॥ सू० ॥ ४५ ॥ से किं तं सूयगडे? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणीयवाईणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ, सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा, अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा, अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पणविज्जंति, परुविज्जंति, दंसिज्जंति, निदं-

सिज्जति, उवदंसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त सूयगडे २ ॥ सू० ॥ ४६ ॥ से किं त ठाणे ? ठाणे ण जीवा ठाविज्जति, अजीव ठाविज्जति, जीवाजीवा ठाविज्जति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमयपरसमएठाविज्जइ लोएठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे ण टका, कूडा, सेला, सिहरिणो पब्भारा, कुडाइ, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघविज्जति। ठाणे ण एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाण भावाण परूवणा आघविज्जइ। ठाणे ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणु ओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ सखेज्जाओ पडिवत्तीओ से ण अगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खधे, दसअज्झयणा एगवीस उद्देस णकाला, एक्कवीस समुद्देसणकाला, बावत्तरि पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति, परूविज्जति दसिज्जति, निदसिज्जति उवदसिज्जति। से एव आया, एवं नाया एव विण्णाया एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त ठाणे ३ ॥ सू० ॥ ४७ ॥ से किं तं समवाए ? समवाए ण जीवा समासिज्जति, अजीवा समासिज्जति, जीवाजीवा समासिज्जति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ लोयालोए समासिज्जइ। समवाए ण एगाइयाण एगुत्तरियाण ठाणसयविवड्ढियाण भावाण परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ, समवायस्स ण परित्ता वायणा सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ, निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए चउत्थे अगे, एगे सुयक्खधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्त भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त्त समवाए ४ सू० ॥ ४८ ॥ से किं त विवाहे ? विवाहे ण जीवा विआहिज्जति, अजीवा विआहिज्जति, जीवाजीवा विआहिज्जति ससमए विआहिज्जति, परसमए विआहिज्जति, ससमएपरसमए विआहिज्जति, लोए विआहिज्जति अलोए विआहिज्जति, लोयालोए विआहिज्जति, विवाहस्सण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओग दारा सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए पचमे अगे, एगे सुयक्खधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए, दस उद्देसगसहस्साइ समुद्देसगसहस्साइ, छत्तीस वागरणसहस्साइ, दो लक्खा अट्ठासीइ पयसहस्सा पयग्गेण, सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा सासय कडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवण आघविज्जइ, से त्त विवाहे ५ ॥ सू० ॥ ४९ ॥ से किं त नायाधम्मकहाओ ? नायाधम्मकहासु ण नायाण नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया

म्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइया सयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं एवामेव सपुव्वावरेण अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवंतित्ति समक्खायं। नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू० ॥ ५० ॥ से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासु णं समणोवासयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ आघविज्जंति; उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा. अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; से त्तं उवासगदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५१ ॥ से किं तं अंतगडदसाओ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नगराइं उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति; अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणी, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठवग्गा अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति; से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; से त्तं अंतगडदसाओ ८ ॥ सू० ॥ ५२ ॥ से किं तं

अणुत्तरोववाइयदसासु ण अणुत्तरोववाइयाण नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइं, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ, अणुत्तरोववाइय त्ति उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ, आघविज्जंति, अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए नवमे अगे, एगे सुयक्खधे, तिन्नि वग्गा, तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जंति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ॥ सू० ॥ ५३ ॥ से किं तं पण्हावागरणाइ ? पण्हावागरणेसु ण अट्ठुत्तर पसिणसय, अट्ठुत्तर अपसिणसय अट्ठुत्तर पसिणापसिणसय, तजहा—अगुट्ठपसिणाइ बाहुपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अन्नेवि विचित्ता विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा सवाया आघविज्जति, पण्हावागरणाण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए दसमे अगे एगे सुयक्खधे, पणयालीस अज्झयणा, पणयालीस उद्देसणकाला, पणयालीस समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेणेण, सखेज्जा अक्खरा, अणतागमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त पण्हावागरणाइ १० ॥ सू० ॥ ५४ ॥ से किं त विवागसुय ? विवागसुए ण सुकडदुक्कडाण कम्माण फलविवागे आघविज्जइ, तत्थ ण दस दुहविवागा दस सुहविवागा। से किं त दुहविवागा ? दुहविवागेसु ण दुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ, चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, निरयगमणाइ, ससारभवपवचा दुहपरपराओ दुकुलपच्चायाइओ, दुल्लहबोहियत्त, आघविज्जइ, से त दुहविवागा। से किं त सुहविवागा ? सुहविवागेसु ण सुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुहपरपराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ, आघविज्जति। विवागसुयस्स ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से ण अगट्ठयाए इक्कारसमे अगे दो सुयक्खधा, वीस अज्झयणा, वीस उद्देसणकाला, वीस समुद्देसणकाला, सखिज्जाइ पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयक

निबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति. पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं विवागसुयं ११ ॥ सू० ॥ ५५ ॥ से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाएणं सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ । से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तंजहा-सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा-माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४, से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ । से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा-माउयापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४ से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २। से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे? पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११, से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ । से किं तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ? ओगाढसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं, रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० ओगाढावत्तं ११, से त्तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ । से किं तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपज्जणसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा--पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० उवसंपज्जणवत्तं ११, से त्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५। से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११, से त्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ । से किं तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पन्नत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० चुयाचुयवत्तं ११, से त्तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७ । छ चउक्कनइयाइं, सत्त तेरासियाइं; से त्तं परिकम्मे १ । से किं तं सुत्ताइं बावीसं पन्नत्ताइं, तंजहा—उज्जुसुयं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ सामाणं ७ संजूहं ८ संभिण्णं ९ आहच्चायं १० सोवत्थियावत्तं ११ नंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वियावत्तं १५ एवंभूयं १६ दुयावत्तं १७ वत्तमाण पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभद्दं २० पस्सासं २१ दुप्पडिग्गहं २२, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि

आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ तिगणइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवाडीए, इच्चे याइ बावीस सुत्ताइ चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीई सुत्त भवतित्ति मक्खाय, से त्त सुत्ताइ ७। से किं त पुव्वगए? पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा— उप्पायपुव्व १ अग्गाणीय २ वीरिय ३ अत्थिनत्थिप्पवाय ४ नाणप्पवाय ५ सच्चप्पावाय ६ आय प्पवाय ७ कम्मप्पवाय ८ पच्चक्खाणप्पवाय (पच्चक्खाण) ९ विज्जणुप्पवाय १० अवझ ११ पाणाऊ १२ किरियाविसाल १३ लोकबिंदुसार १४। उप्पायपुव्वस्स ण दस वत्थू, चत्तारि चूलि यावत्थू पण्णत्ता। अग्गाणीयपुव्वस्स ण चोद्दस वत्थू, दुवालस चूलियावत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स ण अट्ठारस वत्थू, दस चूलिय वत्थू पण्णत्ता। नाणप्पवायपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवायपुव्वस्स ण दोण्णिवत्थूपण्ण त्ता। आयप्पवायपुव्वस्स ण सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस ण तीस वत्थू पण्णत्ता। पच्च क्खाणपुव्वस्स ण वीस वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स ण पन्नरस वत्थू पण्णत्ता अवझपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स ण तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरियाविसाल पुव्वस्स ण ती वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदुसारपुव्वस्स ण पणुवीस वत्थू पण्णत्ता, गाहा—

दस १ चोदस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि। सोलस ७ तीस ८ वीस ९, पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥९०

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेवदस ४ चेव चुल्लवत्थूणि। आइल्लाण चउण्ह, चूलिया नत्थि ॥९१ से त्त पुव्वगए। से किं त अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तजहा—मूलपढमाणुओगे, गडिया णुओगे य। से किं त मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे ण अरहताण भगवताण पुव्वभवा, देव गमणाइ, आउ, चवणाइ, जम्मणाणि अभिसेया रायवरसिरीओ, पवज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलना णुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा, गणहरा, अज्जपवत्तिणीओ सघस्स चउव्विहस्स ज च परिमाण जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य वाई अणुत्तरगईय, उत्तरवेउ, व्विणो य मुणिणो जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो ज देसिओ, जच्चिर च काल, पोओवगया जे जहिं जत्तियाइ भत्ताइ अणस णाए छेइत्ता अतगडे मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघ विप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तर च पत्ते, एवमन्ने य एवमा भावा मूलपढमाणुओगे कहिया, से त्त मूलपढमाणुओगे से किं त गडियाणुओगे? गडियाणुओ कुलगरगडियाओ, तित्थयरगडियाओ, चक्कवट्टिगडियाओ, दसारगडियाओ, बलदेवगडियाओ वासुदेवगडियाओ, गणधरगडियाओ, भद्दबाहुगडियाओ, तवोकम्मगडियाओ, हरिवसगडियाओ उस्सप्पिणीगडियाओ, ओसप्पिणीगडियाओ, चित्तातरगडियाओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणवि विहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गडियाओ आघविज्जति, पण्णविज्जति से त्त गडियाणुओगे, से त्त अणुओगे ४। से किं त चूलियाओ? आइल्लाण चउण्ह पुव्वाण, चूलिया सेसाइ पुव्वाइ अचूलियाइ से त्त चूलियाओ। दिट्ठिवायस्स ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्ज

लोगा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ से णं अंगट्ठयाए रसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, खेज्जापहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसद्-गाइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा. परित्ता तसा अणंता थावरा, सा-यकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, दंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा ाघविज्जंति, से त्तं दिट्ठिवाए १२ ॥ सू० ५६ ॥ इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा णंता अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा णंतता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता—

भावमभावा हेऊमहेउ, कारणमकारणे चेव। जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा ॥ ९२ ॥

इच्चेइयं दुवालसंगं कणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकं-ारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता ाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा ाणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए ाले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणि-डगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति। इच्चेइयं वालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईव-स्संति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडिगं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भवि-सइ, भुविं च, भवई य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से हानाम.ए पंचत्थिकाए न कयाइनासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ , भविस्सइ, य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं णिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ , धुवे, नियए, मासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ ासइ, खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ, कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं ालं जाणइ पासइ, भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥ सू० ५७ ॥

अक्खर संन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च। गमियं अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिव-ना ॥ ९३ ॥ आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं। बिंति सुयनाणलंभं, तं पुव्वविसा-या धीरा ॥ ९४ ॥

उववाई सूत्तं

(बावीस गाथा)

कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया?। कहिं बोंदि चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झई ॥ १ ॥
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्ठिया। इहबोंदि चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झई ? ॥ २ ॥
जं संठाणं तु इहं भवं चयं तस्स चरिमसमयंमि। आसी य पएमघणं तं संठाणं तहिं तस्स ॥ ३ ॥
दीहं वा हस्सं वा जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं। तत्तो तिभागहीणं सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥
तिण्णि सया तेत्तीसा धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा। एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
चत्तारि य रयणीओ रयणिति भागूणिया य बोधव्वा। एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया ॥६॥
एक्का य होइ रयणी साहीवा अंगुलाइ अट्ठ भवे। एसा खलु सिद्धाण जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥
ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा। संठाणमणित्थंथं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥
जत्थ य एगोसिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का। अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ ९ ॥
फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो। ते वि असंखेज्जागुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥१०॥
असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य णाणे य। सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥
केवलणाणुवउत्ता जाणंहि सव्वभावगुणभावे। पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीअणंताहिं ॥ १२ ॥
णवि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं णविय सव्वदेवाणं। जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वाबाहं उवगयाणं॥१३॥
जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं। ण य पावइ मुत्तिसुहं णताहिं वग्गवग्गूहि ॥ १४ ॥
सिद्धस्स सुहो रासो सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा। सोणंतवग्गभइओ सव्वागासे ण माएज्जा ॥१५॥
जह णाम कोइ मिच्छो णगरगुणे बहुविहे वियाणंतो। ण चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए॥१६॥
इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं। किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं॥१७॥
जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई। तण्हाछुहाविमुक्को अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो॥१८॥
इय सव्वकालतित्ता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा। सासयमव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता॥१९॥
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परंपरगयत्ति। उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य॥२०॥
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का। अव्वाबाहं सुक्खं अणुहोंती सासयं सिद्धा॥२१॥
अतुलसुहसागरगया अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता। सव्वमणागयमद्धं चिट्ठंति सुहं पत्ता ॥ २२ ॥

॥ उववाइ उवंगं समत्तं ॥

बहुजणस्सवि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ साहुजणस्सवि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे । सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? के वा एस आसी पुव्वभवे ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्ध० तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा णामं थेरा जातिसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (१सुधम्मं) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुपविट्ठे तए णं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे आसणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगासाडियं उत्तरासंगं करेति २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति ५ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे पडिलाभेमाणेवि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे । तते णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेण तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा—

वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए ३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरावि य णं आगासंसि अहो दाणमहो दाणं घुट्ठे य ५ । हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४—धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तते णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने । तते णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरति तं एवं खलु गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू । तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तते णं से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया जणवय-

विहार विहरति । तते ण से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरेति । तते ण से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाल तेणेव २ उवागच्छति २ त्ता पोसहसाल पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहति २ त्ता दब्भ सथार सथरेइ २ त्ता दब्भसथार दुरुहइ २ त्ता अट्ठमभत्त पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहि अट्ठमभत्तिए पोसह पडिजागरमाण विहरति । तए ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पन्ने धण्णा ण ते गामागरणग जाव सन्निवेसा जत्थ ण समणे भगव महावीरे जाव विहरति, धन्ना ण तेराईसरतलवर० जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडा जाव पव्वयति, धन्ना ण ते राईसरतलवर० जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जति, धन्ना ण ते राईस जाव जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सुणेति, त जति ण समणे भगव महावी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा जाव विहरज्जा तते ण अह समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । तते ण समणे भगव महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इम एयारूव अज्झत्थिय जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे जेणेव हत्थि सीसे णगरे जेणेव पुप्फकरडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणे उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूव उग्गह उगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति परिसा राया निग्गया । तते ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स त महया जहा पढम तहा निग्गओ धम्म कहिओ परिसा राया पडिगया । तते ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अति धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेह तहा अम्मापियरो आपुच्छति, णिक्खमणाभिसेओ तहे जाव अणगारे जाते ईरियासमिए जाव बभयारी, ततेण से सुबाहु अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जति २ त्ता बहूहि चउत्थछट्ठट्ठम० तवोविहाणेहिं अप्पाण भावित्ता बहूइ वासाइ सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से ण ततो देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइ क्खएण अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति २ त्ता केवल बोहिं बुज्झिहिति २ त्ता तहारूवाण थेराण अतिए मुडे जाव पव्वइस्सति, से ण तत्थ बहूइ वासाइ सामण्ण परियाग पाउ णिहिति आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते काल करिहिति सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति, से ण तओ देवलोगाओ माणुस्स पव्वज्जा बभलोए ततो माणुस्स महासुक्के ततो माणुस्स आणते दे ततो माणुस्स ततो आरणे देवे ततो माणुस्स सव्वट्ठसिद्धे, से ण ततो अणतर उव्वट्टित्ता महाविदे वासे जाव अड्ढाइ जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति ५ जाव एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते अज्झयण समत्त ॥ १ ॥

बितियस्स ण उक्खेवो—एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण उसभपुरे णगरे थूभकरड

ाणे धन्नो जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसणं कहणं जम्मणं बालत्तणं कालाओ य
व्रणे पाणिग्गहणं दाओ पासाद० भोगा य जहा सुबाहुस्स, नवरं भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपा-
ख्खा णं पंचसया सामी समोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी णगरी
नयत्ते कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुस्स
ा महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति
बितियं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाणं वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरि देवी
ाए कुमारे वलसिरिपामोक्खा पंचसयकन्ना सामी समोसरणं पुव्वभवपुच्छा उसुयारे नयरे
भदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने जाव महाविदेहे
े सिज्झिहिति ५ ॥ तइयं अज्झयणं समत्तं ॥ ३ ॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुरं णगरं णंदणवणं [मणोरमं] उज्जाणं असोगो जक्खो वासवदत्ते
ा कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले
ा वेसणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ।' चोत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

पंचमस्स उक्खेवओ—सोगंधिया णगरी नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ
ा सुकन्ना देवी महचंदे कुमारे तस्स अरहदत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमणं जिण-
पुव्वभवो मज्झमिया णगरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥
पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ—कणगपुरं णगरं सेयासोयं उज्जाणं वीरभद्दो जक्खो पियचंदो राया
द्दा देवी वेसमणे कुमारे जुवराया सिरिदेवी पामोक्खा पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं
ावती युवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो मणिवया नगरी मित्तो राया संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिते
व सिद्धे ॥ छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो—महापुरं णगरं रत्तासोगं उज्जाणं रत्तपाओ जक्खो बले राया सुभद्दा देवी
ब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पंचसयाकन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो
णेपुरं णगरं णागदत्ते गाहावती इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सत्तमं
ज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

अट्ठमस उक्खेवो—सुघोसं नगरं देवरमणं उज्जाणं वीरसेणो जक्खो अज्जुणो राया तत्तवती
ी भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे महाघोसे णगरे धम्मघोसे गाहावती
म्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चंपा णगरी पुन्नभद्दे उज्जाणे पुन्नभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवई देवी
चंदे कुमारे जुवराया सिरिकंतापामोक्खा णं पंच सया कन्ना जाव पुव्वभवो तिगिच्छी णगरी

जियसत्तू राया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ नवम अज्झयण समत्त ॥ ९ ॥

जति ण दसमस्स उक्खेवो— एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण साएय नाम नयर होत्था उत्तरकुरुउज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनदी राया सिरिकता देवी वरदत्ते कुमारे वरसेणापामोक्खा ण पचदेवीसया तित्थयरागमण सावगधम पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवार नगरे विमलवाहणे राया, धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए ससार परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने सेस जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुचिहिति परि निव्वाहिति सव्वदुक्खाणमत करेहिति ॥ एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सेव भते! सेव भते! सुहविवागा ॥ दसम अज्झयण समत्त ॥ १० ॥

नमो सुयदेवाए–विवागसुयस्स दो सुयक्खधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे अज्झयणा दस एक्कसरगा दससुचेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति, एव सुहविवागो वि सेस जहा आयारस्स ॥ इति एकारसम अग समत्त ॥

॥ इअ सुखविपाकसुत्त समत्तम् ॥

॥ सूत्रकृताङ्गसूत्रे वीरस्तुत्याख्य षष्ठमध्ययनं ॥

पुच्छिस्सु ण समणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिआ य।
से केइ णेगतहिय धम्माहु, अणेलिस साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥
कह च णाण कह दसण से, सील कह नायसुतस्स आसी!।
जाणासि ण भिक्खु जहातहेण, अहासुत बूहि जहा णिसत ॥ २ ॥
खेयन्नए से कुसलापन्ने (ले महेसी) अणतनाणीय अण तदसी।
जससिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्म च धिइ च पेहि ॥ ३ ॥
उड्ढ अहेय तिरिय दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्म समिय उदाहु ॥ ४ ॥
से सव्वदसी अभिभूयनाणी, णिरामगधे धिइम ठितप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगसि विज्ज, गथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥
से भूइपण्णे अणिएअचारी, ओहतर धीरे अणतचक्खू।
अणुत्तर तप्पति सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तम पगासे ॥ ६ ॥
अणुत्तर धम्ममिण जिणाण, णेया मुणी कासव आसुपन्ने।
इदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि ण विसिट्ठे ॥ ७ ॥
से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वावि अणतपारे।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्केव देवाहिवई जुईम ॥ ८ ॥

से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए वासिमुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥ ९ ॥
सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणवते सहस्से, उध्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १० ॥
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ।
से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसी रतिं वेदयती महिंदा ॥ ११ ॥
से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायती कंचणमट्ठवन्ने ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥ १२ ॥
महीइ मज्झंमि ठिते णगिंदे, पन्नायते सूरिय सुद्धलेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥ १३ ॥
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जातीजसोदंसणनाणसीले ॥ १४ ॥
गिरीवरे वा निसहाऽऽययाण, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥
अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाई ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥
अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गते साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥ १७ ॥
रुक्खेसु णाते जह सामली वा, जंमिं रतिं वेययती सुवन्ना ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥
थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥ १९ ॥
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ॥ २० ॥
हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मिगाण सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥
जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।

निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥
पुढोनमे धुणइ विगयगेहिं, न सण्णिहिं कुव्वति आसुपन्ने ।
तरिउ समुद्द व महाभवोघ, भयकरे वीर अणतचक्खू ॥ २५ ॥
कोह च माण च तहेव माय, लोभ चउत्थ अज्झत्थदोसा ।
एआणि वता अरहा महेसी, ण कुव्वई पावण कारवेइ ॥ २६ ॥
किरियाकिरिय वेणइयाणु वाय, अण्णाणियाण पडियच्च ठाण ।
से सव्ववाय इति वेयइत्ता, उवट्ठिए सजमदीहराय ॥ २७ ॥
से वारिया इत्थी सराइभत्त, उवहाणव दुक्खखयट्ठयाए ।
लोग विदित्ता आर पर च, सव्व पभू वारिय सव्ववार ॥ २८ ॥
सोच्चा य धम्म अरहतभासिय, समाहित अट्ठपदोवसुद्ध ।
त सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इदा व देवाहिव आगमिस्सति ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीवीरस्तुत्याख्य षष्ठमध्ययनम् ॥



॥ मोक्षमार्गनामक एकादशाध्ययनम् ॥

त मग्ग णुत्तर सुद्ध, सव्वदुक्खविमोक्खण । जाणासि ण जहा भिक्खु, त णो बूहि महामुणी ॥२
कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेण मईमता ? ज मग्ग उज्जु पावित्ता ओह तरति दुत्तर ॥ १
जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिं तु कयर मग्ग, आइक्खेज्ज? कहाहि णो ॥ ३
जइ वो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिम पडिसाहिज्जा, मग्गसार सुणेह मे ॥ ४
अणुपुव्वेण महाघोर कासवेण पवेइय, । जमादाय इओ पुव्व, समुद्द ववहारिणो ॥ ५
अतरिंसु तरतेगे, तरिस्सति अणागया । त सोच्चा पडिवक्खामि, जतवो त सुणेह मे ॥ ६
पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी । वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥ ७
अहावरा तसा पाणा, एव छकाय आहिया । एतावए जीवकाए, णावरे कोइ विज्जई ॥ ८
सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मतिम पडिलेहिया । सव्वे अक्कतदुक्खा य, अतो सव्वे न हिंसया ॥ ९
एय खु णाणिओ सार, ज न हिंसति कचण । अहिंसा समय चेव, एतावत विजाणिया ॥ १०
उड्ढ अहे य तिरिय, जे केइ तसथावरा । सव्वत्थ विरतिं विज्जा, सति निव्वाणमाहिय ॥ ११
पभू दोसे निराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणइ । मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अतसो ॥ १२
सवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसण चरे । एसणासमिए णिच्च, वज्जयते अणेसण ॥ १३
भूयाइ च समारभ, तमुद्दिसा य ज कड । तारिस तु ण गिण्हेज्जा, अन्नपाण सुसजए ॥ १४
पूईकम्म न सेविज्जा एस धम्मे वुसीमओ । ज किचि अभिकखेज्जा, सव्वसो त न कप्पए ॥१५
हणत णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जीइदिए । ठाणाइ सति सड्ढीण, गामेसु नगरेसु वा ॥ १६
तहा गिर समारब्भ, अत्थि पुण्णति एगे वए । अहवा णत्थि पुण्णति, एव मेय महब्भय ॥ १७ ॥

णट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तसथावरा । तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थित्ति णो वए ॥ १८ ।
सिं तं उवकप्पंति, अन्नपाणं, तहाविहं । तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थित्ति णो वए ॥ १९ ।
ो य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं । जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ॥ २० ।
दुओवि ते ण भासंति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो । आयं रयस्स हेच्चा णं निव्वाणं पाउणंति ते ॥२१।
नेव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा । तम्हा सदा जए दंते, निव्वाणं संधए मुणी ॥ २२ ।
ज्झमाणण पाणाणं, किच्चंताण सकम्मुणा । आघाति साहु तं दीवं, पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥ २३ ।
ायगुत्ते सया दंते, छिन्नसोए अणासवे । जे धम्मं सुद्धमक्खाति, पडिपुन्नमणेलिसं ॥ २४ ।
मेव अविजाणंता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो । बुद्धा मोत्ति य मन्नंता, अंत एते समाहिए ॥ २५ ।
य बीओदगं चेव तमुद्दिस्सा य जं कडं । भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयन्ना(अ)समाहिया २६ ॥
हा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही । मच्छेसणं झियायंति, झाणं ते कलुसाधमं ॥ २७ ॥
वं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया । विसएसण झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ॥ २८ ॥
द्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मती । उम्मग्गगता दुक्खं, घायमेसंति तं तहा ॥ २९ ।
हा आसाविणि नावं जाइअंधो दुरूहिया । इच्छई पारमागंतुं, अंतरा य विसीयति ॥ ३० ।
वं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया । सोयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महब्भयं ॥ ३१ ।
मं च धम्ममादाय, कासवेण पवेदितं । तरे सोयं महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए ॥ ३२ ।
वेरए गामधम्मेहिं, जे केई जगई जगा । तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥ ३३ ।
इसाणं च मायं च, तं परिन्नाय पंडिए । सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ॥ ३४ ॥
ंधए साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे । उवहाणवीरिए भिक्खू, कोहं माणं ण पत्थए ॥ ३५ ॥
जे य बुद्धा अतिक्कंता, जे य बुद्धा अणागया । संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगती जहा ॥ ३६ ।
अह णं वयमावन्नं, फासा उच्चावयाफुसे । ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएण व महागिरि ॥ ३७ ॥
ंवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसणं चरे । निव्वुडे कालमाकंखी, एवं (यं) केवलिणोमयं ॥ ३८ ।

॥ इति मोक्षमार्गनामकं एकादशमध्ययनम् ॥



सुभाषित केटलीक गाथानो संग्रह.

पंचमहव्वयसुव्वयमुलं,समणामणाइलखखा दुमुच्चान्नं । वेरविरमणपज्जवसाणं, सव्वसमुद्दमोदधी तित्थं ॥१
तित्थंकरेहिंसु देसियमग्गं, नरगतिरि छविवज्झियमग्गं ।

सव्वंपवित्त सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाणं अवंगुयदारं ॥ २

देवनरिंदनमंसियपूइयं, सव्वजगुत्तमसंगलमग्गं । उधरिसंगुणनायगमेगं, मोक्खपहस्सवडिंसगभूयं ॥३

(प्रश्नव्याकरणसूत्रे संवरद्वारे)

धम्मारामेचरेभिक्खू । धिइमं धम्मसारही । धम्मा रामेरयादंते । बंभचेरसमाहिए । ४ ॥